समर्पण

उन अनामे-अजाने सैनिकों की स्मृतिमें
जिन्हें यह नहीं मालूम कि वे क्यों लड़े
जिन्हें यह नहीं मालूम कि वे किसकेलिए मरे
पर
जिनके खूनके धब्बे
विश्व-इतिहासके पृष्ठोंपरसे कभी मिटेंगे नहीं
कभी धुँधले नहीं होंगे

—लेखक

अपनी बात

कहानी किसी खास कैफियत या भूमिकाकी मुहताज नही होती। पर इस सग्रहकी कहानियोंका अपना एक छोटा-सा इतिहास है, जिसके सम्बन्धमे यहाँ दो शब्द कहना शायद अनावश्यक अथवा असगत न होगा।

इन पक्तियोंके लेखकने अपने पत्रकार-जीवनके आरम्भिक वर्षोंसे ही फाशिज्मके उठते हुए खतरेको आशकाकी दृष्टिसे देखा है। धीरे धीरे ज्यो ज्यो उसका प्रभाव बढता और फैलता गया, ज्यो ज्यो उसके नापाक कदम मानवीय सभ्यताके वरदानो और वैयक्तिक स्वतत्रताके अवदानोंको कुचलते हुए आगे बढने लगे, त्यों-त्यो उसने देखा कि विभिन्न देशोके प्रतिगामी और पराजयवादी लोगोमे उसके आगे आत्म-समर्पण करने और उसमे कुछ 'गुणो' को ढूँढ निकालनेकी आत्मघाती प्रवृत्ति जोर पकडने लगी। पूर्व और पश्चिमके इने-गिने जनक्रान्तिवादियोको छोडकर विजयीके सामने नतमस्तक होनेकी परम्परागत दिमागी गुलामीने बहुतोको भ्रान्त किया, बहुतोके विचार बदले। हिन्दीमे तो हिटलर, मुसोलिनी और जापान की 'आश्चर्यजनक' औद्योगिक क्षमतापर बडे बडे प्रशसापूर्ण लेख निकले तथा पुस्तके भी लिखी गयी। इन सबसे क्षुब्ध होकर लेखकने चाहा कि जन-साधारणके सामने फाशिज्मके नग्न रूप और उसकी वीभत्स भावी सभावनाओंको रखा जाय। पर अपने अज्ञान और अयोग्यताके कारण वह ऐसा गुरुतर कार्य करनेका साहस और आत्म-विश्वास नहीं जुटा सका। अस्तु—

दिन, महीने और वर्ष अपनी गतिसे बीतते गये। कुछ तो दीर्घ-सूत्री और आलसी होनेके कारण तथा कुछ हिन्दीके राष्ट्रीय पत्रोमे काम करते हुए अपनी जानकारी बढानेके लिए समय और साधनोकी कमीके कारण लेखक अपने मनसूबेको कार्यान्वित नही कर सका। दूसरे महायुद्धके

छिडते ही विश्व-क्षितिजपर आशकाओ और भयका जो तूफान-सा उमड आया, उसने एक धिक्कारके साथ लेखककी तन्द्रा भग की और फल-स्वरूप उसने कहानीके माध्यमसे फाशिज्म-विरोधी जनताके सग्रामका इतिवृत्त लिखनेका विचार पक्का किया। 'युग-सन्धि' को यदि रूपकके रूपमे इस योजनाका प्राक्कथन या भूमिका कहा जा सके, तो उसका पहला चरण था 'विद्रोह' और दूसरा 'नया युग'। इसी बीच—जीवनकी अस्थिरता, परिस्थितियोकी प्रतिकूलता और साधन-सामग्रीके अभावके बावजूद—लेखक 'विशाल भारत' मे चला आया और यह कार्य उसकी फुरसतका मुहताज होगया।

फाशिज्म-विरोधी चीजे लिखनेमे कोरी कल्पना ही काम नही दे सकती। उसके लिए पर्याप्त जानकारी और अध्ययन अपेक्षित हैं। दुर्भाग्यवश इस दिशामे जितना ध्यान और समय दिया जाना चाहिए था, लेखक नही दे पाया। फिर भी जो भूत सिरपर सवार था, उसने उसे एकदम निश्चिन्त भी नही बैठने दिया और जो कुछ वह लिख सका, वह इस सग्रहके रूपमे पाठकोके हाथोंमे है।

कहानीके माध्यमको अपनाकर और उसकी सीमाओमे रहकर फाशिज्मके इतिहास तथा परिभाषा आदिकी विशद चर्चा करना तो विशेष सम्भव नही था, पर पृष्ठभूमि, प्रतिक्रिया अथवा परिणामके रूपमे लेखकने उन्हे पाठकके मनपर अकित करनेकी बिखरी हुई-सी चेष्टा जरूर की है। 'युग-सन्धि' उसके बर्बर रूपके स्फोटको ही आमुख अथवा प्रतीक-रूपमें रखनेका एक यत्न अथवा प्रयोग है। इसीको अधिक स्पष्ट और नग्न रूपमे 'जय' तथा 'शोधका परिणाम' में दिखानेकी चेष्टा की गयी है।

पर इन कहानियोमे दिखाये गये नात्सी दस्युओके बर्बर और अमानुषिक कारनामोसे यह धारणा बना लेना सरासर भ्रान्ति और ज्यादती होगी कि समग्र जर्मन जनताने ही नात्सीवादको आत्म-समर्पण कर दिया था। नात्सी गुण्डो द्वारा आतङ्कित, पीडित और शोषित होकर भी शान्ति और जन-स्वातन्त्र्यके जर्मन पुजारियोने कभी हार नहीं मानी और नात्सी दस्युओकी तुमुल विजय-ध्वनिके बीच भी, अपराजेय कही जानेवाली आक्र-

मणकारी जर्मन सेनाओंके ठीक पीछे, अपनी जानकी बाजी लगाकर उस की पराजयकी तैयारी करते रहे। 'अच्छे दिन', 'वागनर' और 'अन्तका आरम्भ' इन्ही वीर और विवेकशील जर्मनोंकी स्थिति, मनोवृत्ति एवं प्रवृत्ति का चित्रण करनेके प्रयत्न हैं। ये उस समय लिखी गयी और छपीं, जब जर्मनीकी हार या आत्म-समर्पणकी तो बात ही दूर रही, अधिकाश लोग उसके जीतनेकी खुशखबरी सुननेकी प्रतीक्षामे मुँह बाए बैठे थे।

'वे दोनों' ब्रिटेनकी नयी पीढीके दो प्रतिनिधियोके फाशिस्त-विरोधी युद्ध-सहयोगका एक मजेदार किस्सा है। 'पीकिंगका भिखारी' चीनके उस गुरीला युद्धकी एक झाँकी है, जिसके कारण वह जापान-जैसे अपनेसे कई गुना अधिक सम्पन्न-सशक्त शत्रुके मुकाबलेमे इन आठ लम्बे वर्षों तक सफलतापूर्वक डट सका। और 'कप्तानकी वसीयत' मे एक ऐसे अमरीकन नागरिकके उद्‌गार हैं, जिसने बिना अपने देशपर आक्रमण हुए विश्व-शान्ति और विश्व-स्वातन्त्र्यके लिए, अपनी मातृभूमि और परिवारसे हजारों कोस दूर, हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर किये। उसकी वसीयत हर फाशिस्त-विरोधी और शान्तिवादीकी वसीयत हो, यही लेखककी अपील और आकाक्षा है।

इसमे कोई सन्देह नहीं कि दूसरे महायुद्धकी लपटे फाशिज्मके अनेक स्तम्भोंका भक्ष्य लेकर शान्त होगयी हैं, पर सही मानों और पूरे तौरपर अभी फाशिज्मका अन्त नहीं हुआ है। जब तक दुनियामें शोषण, परापहरण, उत्पीडन और दूसरेके श्रम-सम्पत्तिपर पनपनेवाले साम्राज्यवादका बोलबाला है, फाशिज्म प्रतिक्षण जीता-जागता है। इसका प्रभावपूर्ण ढङ्गसे मूलोच्छेद जनता ही कर सकती है। यदि इस दिशामे ये कहानियाँ कुछ भी लोकमन जाग्रत और लोकबल सगठित कर सकी, तो लेखक अपने परिश्रम को सार्थक समझेगा।

मौलिकता, कलात्मकता अथवा साहित्यिकताकी खोज करनेवालों को शायद इन कहानियोंसे निराश ही होना पड़े। सच तो यह है कि अपने बुद्धि-विलास या साहित्य-रसिको और कला-विलासियोंके मनोरजनार्थ लेखकने इन्हे लिखा भी नही। इनके पीछे एक निश्चित ध्येय, स्थिर

उद्देश्य एव अखूट प्रेरणा हैं। उनके सन्देशको पाठको तक पहुँचानेके लिए लेखकको जहाँसे भी साधन-सामग्री मिली, उसने ली और जिस रूप मे भी वह उसे रख सका, उसने रखा। ऐसा करनेमे कई जगह कहानीकी परिभाषा और टेकनीककी रक्षा करनेके मोहसे भी उसे छुट्टी लेनी पडी है। धृष्टता होनेपर भी शायद यह क्षन्तव्य हो। इसके साथ ही सम्बन्धित देशो से हजारों कोस दूर, उनकी कोई वैयक्तिक जानकारी न होते हुए और फौजी सेसरसे घिरे एक गुलाम देशमें बैठकर ऐसा प्रयत्न करना कितना अधिक त्रुटिपूर्ण हो सकता है, इससे भी लेखक अनभिज्ञ नही। अतः जानकर की गयी गलतियोके लिए वह सविनय क्षमा-प्रार्थी है और अनजानमे हुई गलतियोके लिए सुविज्ञ पाठकों एव आलोचकोसे वह सुधार और मार्ग-प्रदर्शनकी आशा करता है।

—*मो० सि० सेंगर*

क्रम

◆

युग - सन्धि

उस दिन साँझको जब दिन - भरका थका - हारा खग अपने घोंसले पर लौटा, तो उसने देखा कि कोई अपरिचित खगी उसके घोंसलेके बाहर डालपर बैठी है। उसे देखकर भी जैसे खगने न देखा हो, ऐसा अजान बनकर वह उसके पाससे फुदककर अपने घोंसलेमें चला गया।

पर घोंसलेमें वह निश्चित होकर नहीं बैठ सका। उस अपरिचित किन्तु तरुणी खगीकी उपस्थितिने उसके मनमें एक अजीब उथल - पुथल पैदा करदी थी। उसका दिल तेजीके धुक् - धुक् कर रहा था। न जाने क्या सोच कर उसका रोम - रोम पुलकित हो उठा और उसके पङ्ख जैसे दिन - भरकी थकान भूलकर फिर आकाश नापनेको उतावले हो उठे। दवे पाँव वह धीरे-धीरे अपने घोंसलेके द्वारपर आया और उझककर बाहर बैठी हुई खगीकी ओर देखने लगा।

इसी समय उसकी खगीसे चार आँखे हुईं। वह भी न मालूम कबसे अपनी गर्दन ऊपर उठाए उसके द्वारपर पलक - पाँवड़े बिछाए थी। दोनोंने एक - दूसरेकी आँखोंकी भाषा पढ़ी और मुस्कराए। पर अपनी तस्कर-वृत्तिमें पकड़े जानेके कारण खग कुछ झेंप - सा गया और उसने अपनी आँखें नीची कर लीं।

यह देख खगी ठहाका मारकर हँस पड़ी। उसका ऐसा करना मानो खगके पौरुषको चुनौती थी। उससे भी अब रहा न गया। फुदककर वह घोंसलेसे बाहर डालपर आ बैठा और बनावटी क्रोधके साथ बोला— 'क्यों जी, तुम हँसीं क्यों? मेरे ही घरपर आकर मेरी ही हँसी उड़ानेकी तुम्हारी यह मजाल कैसे हुई?'

खगी पहले तो कुछ सकुचाई, फिर जरा सहमकर बोली—'क्या, क्या यहाँ हँसनेपर भी कोई पाबन्दी है, या इसके लिए भी कर देना पडता है ?'

खग कुछ किंकर्त्तव्यविमूढ हो उसे ऊपरसे नीचेतक देखने लगा। अब निकटसे उसकी आँखोका मुक्त हास्य और प्रणय - निवेदन पढते उसे देर न लगी। सहसा वह भी खिलखिलाकर हँसपड़ा और बोला—'तुम भी अजीब जीव हो !'

खगी उसके जरा और निकट खिसक आई और अपनी चोंचसे उसके घोंसलेकी ओर इशारा करके पूछा—'यह तुम्हारा ही नीड़ है ?'

'हाँ, मेरी माँका यही एकमात्र स्मृति - चिह्न है।'

'तो तुम इसमे अकेले ही रहते हो ?'

'और नही तो क्या ? तभी तो चोरकी तरह तुम्हे लुक - छिपकर देखरहा था। शायद तुम ही इसकी शोभा बढानेकी कृपा कर सको !'

खगी लजा गई। खग उसके बिल्कुल पास आ गया और उसके पङ्खों से अपने पङ्ख सटाकर कहने लगा—'आज तुम मेरे सौभाग्य और सुखकी अयाचित लक्ष्मी बनकर आई हो। अब तुम्हे जाने न दूँगा। आजसे यह नीड़ हम - तुम दोनोका जीवन - स्वर्ग बनेगा। क्यो, स्वीकार है न ?'

खगीने कृतज्ञता - भरी आँखोसे खगकी ओर देखा और स्वीकृति के रूपमे अपनी चोंच खगकी चोंचसे मिला दी।

—२—

अँगड़ाई लेते हुए जब खगने अपनी आँखे खोली। तो सुबहका धुँधका कुछ अधिक साफ हो चला था। घोंसलेके द्वारपर आकर उसने देखा कि पूर्व दिशा लाल होचली है और आसपासके नीड़ोंमे से कोई आवाज नही आरही है, जिससे मालूम होता था कि उनमे रहनेवाले खग - खगी अपनी दिवसयात्राके लिए कभी के जाचुके हैं।

आँखोमे और अधरोंपर मुस्कान सजाए खगी जैसे अपने प्रियतमके उठनेकी प्रतीक्षा ही कर रही थी। खगके निकट आकर वह बोली—'आज तो खूब सोए ?'

'हॉ, इसका श्रेय तुम्हींको है ! याद नही आता, जिन्दगीमे पहले भी कभी ऐसी मीठी और गहरी नीद सोया हूँ। पर कलसे मुझे जल्दी उठानेकी जिम्मेदारी तुमपर है, समझी। अगर इसी तरह देरसे उठनेकी आदत पड गई, तो काम कैसे चलेगा ?'

दोनोंने पङ्ख फैलाए और एकही कमानसे एकसाथ छूटे दो तीरोकी तरह साथ-साथ आकाशमे उड चले। आज खगको न तो अपने पङ्ख ही भारी मालूम पडते थे और न आकाश-पथ ही सुनसान अथवा नीरस जान पडता था। आज उसके पङ्खोंमे बिजलीकी-सी फुर्ती और हल्कापन मालूम देता था और आकाश तो जैसे उसकी एकही उडानमे सिमट जाता था। आज उसकी आँखे इस महाशून्यमे भी मानो शत-सहस्र वसन्तका वैभव-विस्तार विलोक रही थी। और मधु-मदिर-सुवासित वातास तो जैसे प्रकाशके साथ घुल-मिलकर एक महासागर बनगया हो, जिसपर आशा-आकाक्षाओंसे पूरित खग-खगीके जीवन-पोत इठलाते हुए दौड़े जारहे थे।

'तुम रोज इधर ही आते हो ?'—खगीने पूछा।

'इधर, किधर ? आज तो तुम्हारे साथ जैसे सारा आकाश ही मेरा चिर-परिचित क्रीड़ा-क्षेत्र बनगया है। पता नहीं, हम किधर चल रहे हैं।'

खगीने इधर-उधर और फिर नीचे नजर दौडाई और बाईं ओरको मुडते हुए बोली—'अच्छा, तब मेरे साथ इधर चलो। आज तुम्हे अपना बाग दिखलाती हूँ। वहाँ अकेले जाना मुझे नही सुहाता, इसी लिए मैंने प्रतिज्ञा की थी कि किसी दिन अपने प्रियतमके साथ ही वहाँ जाऊँगी।'

'ओहो!'—खगने खगीके साथही बाईं ओरको मुडते हुए कहा—'तो तुमने हम लोगोंके विहारके लिए आनन्द उद्यान पहलेसे ही ठीक कररखा है ?'

'नहीं तो क्या, तुम्हारी तरह लुक छिपकर मैं थोड़े ही कुछ करती हूँ।'

दोनों कनखियासे एक-दूसरेकी ओर देखकर मुस्कराए और फिर आगे बढ़ चले। कुछ आगे बढ़नेपर वृक्षोंके एक समूहके बीचमें एक जलाशय चमकता हुआ दिखाई दिया। उसकी ओर इशारा करते हुए खगी ने कहा—'यही है हमारा आनन्द-उद्यान।'—और दोनों उस ओर नीचे चल पड़े।

उद्यानमें पहुँचकर दोनोंने खूब सैरकी, पेट-भर खाया और अघाकर मीठा-निर्मल जल पिया। उन्हें मालूम नहीं हुआ कि दिन कब बीत गया। साँझ होते ही दोनों फिर अपने घोंसलेकी ओर उड़ चले।

—३—

एक दिन खगने उठकर देखा, खगी अपने पङ्ख फैलाए बैठी है और उनके बीचमें से दो छोटी-छोटी आँखें टुकुर-टुकुर उसे निहार रही हैं। उसने पास जाकर आशा-भरी दृष्टिसे अपने आशा-कुसुमको देखा और मन-ही-मन आह्लादित हो बोला—'यह नई पीढ़ी और नये युगका प्रतीक है। इसका पालन-पोषण बड़ी हिफाजतसे करना।'

खगीने गद्गद् कण्ठसे कहा—'यह तुम्हारा ही दूसरा रूप है। इसे सौ जानसे प्यार करूँगी। यही तो है हमारे भविष्यकी आशा।'

विस्मय-विमुग्ध दृष्टिसे अपने नौनिहालको देखते हुए खगने कहा—'तुम अभी इसके पास ही रहना। इसे छोड़कर अधिक दूर न जाना। तुम दोनोंके लिए चुग्गा मैं ही ले आया करूँगा।'

'अच्छा'—अपने लालको दुलरातेहुए खगीने कहा—'तब तो कुछ दिन तुम्हें अकेले ही दानेकी खोजमें जाना पड़ेगा।'

'तुम इसकी तनिक भी चिन्ता न करो।'—कहकर खगने पङ्ख फैलाए और उड़ चला। आज कई दिनों बाद उसे फिर अकेले उड़नेका काम पड़ा

था। पहले पहल तो उसे कुछ अटपटापन जरूर महसूस हुआ, पर शीघ्रही पुत्र-स्नेह और कर्त्तव्यकी प्रेरणाने उसके हृदयमे अपार दृढता भरदी और वह निर्बाध रूपसे उड चला। दूसरे दिनसे तो उसे यह अकेलापन बिल्कुल ही महसूस नही हुआ।

एक दिन खग जानेके थोडी ही देर बाद बिना चुग्गेके लौट आया। खगीको इसपर कुछ आश्चर्य हुआ और कुछ आशङ्का भी। खगके निकट आकर उसने देखा कि वह थर-थर कॉप रहा है और उसकी ऑखोमे भय उमड रहा है। खगी अवाक् थी। उसकी कुछभी समझमे नहीं आ रहा था। दो-एक क्षण चुप रहकर उसने पूछा—'आखिर बात क्या है, कुछ मुँहसे भी तो कहो। क्या कोई अनिष्ट हुआ है?'

'अनिष्ट!'—खगने विस्फारित नेत्रोसे खगीकी ओर देखकर कहा—'हॉ, अनिष्ट हुआ है, और साधारण नही महान्, भयङ्कर!'

एक सिहरन खगीको ऊपरसे नीचेतक कॅपा गई। उनका बच्चा ऑखे फाड फाडकर कभी खग और कभी खगीकी ओर देख रहा था। खगीनें खगके तनिक और पास आकर दबी हुई जबानसे पूछा—'पर कुछ कहो भी, आखिर बात क्या है? मेरी तो कुछ समझमें ही नही आ रहा है।'

'वह जो तुम्हारा आनन्द-उद्यान था न, वह बिल्कुल तहस-नहस होगया है और . '

'तहस-नहस होगया है? क्या कोई भूडोल या ऑधी आई है?'

'नहीं, उसके पासके नगरपर आक्रमण हुआ है। सारा नगर स्मशान बन गया है। पग-पगपर मनुष्योकी लाशे बिखरी पडी हैं!'

'आक्रमण! मनुष्योकी लाशे!'—खगी भयसे कॉप उठी। बोली—'लेकिन हिंस्र-जन्तु मनुष्योको इतनी बडी संख्यामे तो कभी नही मारते। और फिर मनुष्योको मारकर वे उनकी लाशे इधर-उधर क्या बिखरायँगे? वे तो उन्हे मारकर खाजाते हैं न?'

'तुम यह क्या पागलपनकी-सी बातें करने लगी ? हिंस्र-जन्तुओंकी बात मैं कर ही कब रहा हूँ ? मैं तो मनुष्योंकी बात कह रहा हूँ ।'

'क्या मतलब तुम्हारा ? तब क्या नगरपर मनुष्योंने आक्रमण किया है ?'

'हाँ, और नही तो मैं कह क्या रहा हूँ ?'

'तुम आज यह कैसी बातें कर रहे हो ? मनुष्य मनुष्यपर आक्रमण करेगा, उनकी लाशोंको गली-रास्तोंमे बिखरायगा और अपने ही बनाए हुए अपनी ही सभ्यता तथा सस्कृतिके प्रतीक, नगर-उद्यानोंको ध्वस्त करेगा ? मुझे तो तुम्हारी बातपर विश्वास नही होता ।'

'क्या प्रत्यक्षके लिए भी कोई प्रमाण देना होगा ? अगर विश्वास नही होता, तो खुद चलकर अपनी आँखोंसे देख न लो ।'

'अच्छा चलो'—कहकर खगीने अपने बच्चेको एक बार नजर भर कर देखा और दोनों उड चले ।

—४—

दोनों अभी कुछही दूर गए होंगे कि एक भारी-भरकम चीज गुरु-गम्भीर घोष करती हुई उनके पाससे तेजीसे आगे निकलगई । दोनों विस्मित और भयभीत होकर उसे देखने लगे । न उसके पङ्ख थे और न कोई ऐसी चीज ही दिखाई दी, जिसके सहारे वह इतनी ऊँची और इतनी तेजीसे उड़ रही थी । उसके भीतरसे जैसा शब्द हो रहा था, वैसा भी उन्होंने कभी नहीं सुना था । अभी वे उसकी बनावट आदिपर विचार कर ही रहे थे कि उसके नीचेसे एक मोटी लम्बी-सी चीज निकली और एक अजीब-सा शब्द करती हुई चक्कर खाती नीचेकी ओर चल पड़ी ।

कुछ ही क्षण बाद नीचे एक भयङ्कर विस्फोट हुआ, जिसके साथ ही

कई भग्नावशिष्ट चीजे हवामे इधर-उधर उडी और उनके फैलनेके साथही चीत्कार तथा कोलाहलसे वायु - मण्डल भर गया । खग और खगी अपने विस्मय और आशङ्काओंका पुञ्ज बनी उस भारी - भरकम चीजको आगे बढने देकर नीचेकी ओर चलपडे, ताकि विस्फोटके परिणाम और दृश्यको अधिक निकटसे देख सके । नीचे आनेपर उन्होंने देखा कि समूचा नगर आगकी लपटोंसे घिरा धॉय-धॉयकर जल रहा है और उसपर से दम घुटा देने वाला धुआँ उठ रहा है । धुआँ इतना घना और दुर्गन्धिमय था कि वे अधिक देरतक उसके आवरणमे न ठहर सके और हॉफते-हॉफते ऊपर उड़ कर आगे बढ चले । पर इस सक्षिप्त-सी यात्रामें भी नगरके ध्वंसावशिष्ट भवनों और इधर-उधर बिखरी लाशोंकी उडती हुई सी झॉकी उन्हे मिल गई थी। नागरिकोके कोलाहल और नारी तथा शिशु कण्ठोंका चीत्कार तो अभी तक सुनाई पड रहा था ।

यह सब देखकर खगीकी जिह्वा जैसे एकदम जड़ हो गई थी । भय के कारण वह सिकुडी जारही थी और अपने पङ्खभी मुश्किलसे मार पा रही थी । खगने तिरछी दृष्टिसे उसे निहारा और आश्वस्त स्वरमे बोला— 'घबराओ मत, पासही एक सरिता है । दो घाटियोंके बीचमे होनेके कारण उसके किनारे अधिक सुरक्षित हैं । उसपर एक बड़ा सुन्दर पुल बना हुआ है । चलो, उसीकी छॉहमे बैठकर कुछ सुस्ता लेंगे और पानी भी पी लेंगे ।'

खगीने अपने सूखे कण्ठसे बड़ी मुश्किलसे 'हॉ' कहा और सारा धैर्य एव साहस बटोरकर खगके साथ-साथ उड़ने लगी । सामने ही कुछ दूरीपर दो पर्वत-श्रेणियोंके बीचमें हरे पेडोंकी कतारोंसे सजे किनारोवाली सरिता हरे बूटोंवाली झिलमिल रेशमी साडी-सी चमचमा रही थी। उसे देखकर खगी की जानमें जान आई। दोनों बडी उत्सुकतासे उसकी ओर बढ चले । जरा नीचे आनेपर खग ऑखे फाड़-फाड़कर देखने लगा। कभी वह उत्तरकी ओर जाता और कभी दक्षिणकी ओर। उसे असमञ्जसमें पड़ा देख खगीने कहा—

'जहाँ चलना है, चलते क्यों नही। यहाँ ढूँढ क्या रहे हो ? है तो यही वह तुम्हारी सरिता न ?'

'हाँ, सरिता तो वही है। आसपासकी घाटियाँ भी वही हैं। पर पुल कही नजर नही आ रहा है। पहले तो ऐसी भूल... ।'

खगी चुप रही। दोना कुछ और नीचे आए। अब खगको साफ साफ दिखाई पड़ा कि जहाँ पहले पुल था, वहाँ अब कुछ भी नही है। नदीके दोनो किनारोपर उसके टूटेहुए छोर जरूर नजर आ रहे हैं। दोनो ओर पैदल और घुडसवार सेनाका पड़ाव है। तम्बू लगे हैं। बडे-बडे युद्ध-यन्त्र जहाँ तहाँ रखे हैं। उनके आसपास कुछ लाशे बिखरी हैं, कुछ घायल पडे कराह रहे हैं और कुछकी मरहम-पट्टीकी जा रही है। चारो ओर एक वीभत्स दृश्य उपस्थित है।

यह सब देखकर खगी भयसे काँपने लगी। खगने उसे अपने पङ्खोका सहारा देते हुए कहा— 'हाय, जान पड़ता है, यह स्थान भी सुरक्षित नही रहा। चलो, हम लोग उस सामनेवाली पहाड़ीकी टेकरीपर ही चलकर थोडा - सा सुस्ता ले।'

खगी कुछ न बोली और खगके साथ ही ऊपर उड चली। टेकरीके निकट पहुँचकर ज्यों ही खगने अपनी आँखे ऊपर उठाई, उसने देखा कि एक विशालकाय तोपका मुँह किसी मगरमच्छके जबडेकी तरह धीरे-धीरे उनकी ओर घूम रहा है। इस बार उसका साहस भी हवा हो गया और घबराकर वह खगीसे बोला—'बस, आगे न बढना। चलो, सीधे नीडपर ही लौट चले। अब बाहर कही भी अपनी खैर नही है। न मालूम इन कम्बख्त मनुष्योको आज यह क्या सूझा है ?'

खगीने डरके मारे आँख भी ऊपर नही उठाई और खगका वाक्य पूरा होनेसे पहले ही मुड़ पड़ी। दोनोंने नीड़पर पहुचकर ही दम लिया।

अपना लीला-क्षेत्र बना लिया, जहाँ शतायु वट-वृक्षपर खग और खगीका घोंसला था। आक्रमण और प्रत्याक्रमणने मानव रक्तसे उस वृक्षको सींचा। कुछ काल बाद वहाँ लाल-पीली लपटे जाग उठीं और कुछ ही क्षणोंमें वह मङ्गलमय जङ्गल एक डरावना स्मशान बन गया। और फिर थोड़ी देर बाद धधकते हुए अङ्गारे ठण्डी राख बनकर धूलमे मिल गए।

न मालूम यह सब विगत-युगका उपसहार था या आगत-युगकी सूचना, पर अब इसे देखनेको न तो वह खग-परिवार ही वहाँ था और न उनका वह घोंसला ही।

——

अच्छे दिन ?

—१—

घड़ीने टन् टन् ११ बजाये। अभी तक रोहेम घर नही लौटा था। न-मालूम आज उसे इतनी देर कहाँ होगई ? सुबह वह कुछ खाकर भी तो नही गया। एडा जब उसके कमरेमे कॉफीका प्याला लेकर गई, तो मालूम हुआ कि वह कभीका बाहर निकल चुका था। फिर दोपहरका खाना खाने भी तो वह घर नहीं आया। अब तो शामके खानेका वक्त भी गुजर चुका था। पहले तो उसने कभी ऐसा नही किया था।

उसकी बूढ़ी माँ एडोरीलीन और एडा (पत्नी) अधबुझी अँगीठी के पास बैठी शामसे ही उसका रास्ता देख रही थी। रोहेमकी प्रतीक्षा और चिन्तामे उन्हे भी जैसे भूख नही लग रही थी। ज्यों-ज्यो रात बढ़ती जाती थी, उसकी चिन्ता भी बढ रही थी। 'डिज' की धीमी रोशनी भी उनके चेहरोकी मुर्दनी और आकुलताको स्पष्ट बता रही थी।

रोहेमका ६ वर्षका लड़का पीटर थोड़ी-सी कॉफी पीकर ही सोगया था। उसे पूरी आशा थी कि आज रोहेम उसके लिए बाजार से छोटी-सी बंदूक और टैंक जरूर लावेगा। पर नींदके आगे वह अपनी इन प्रिय वस्तुओंकी प्रतीक्षा अधिक देर न कर सका।

सहसा एक लॉरी आ कर रोहेमके मकानके आगे रुकी और दूसरे ही क्षण फौजी बूटोंको तेजीसे खटाखट करते हुए रोहेमने दरवाजा खोल कर घरमे प्रवेश किया। एडा अपनी जाँघपर से पीटरका सिर उठाकर नीचे रखते हुए बोली—'आज इतनी देर कहाँ लगाई? हम लोगोंकी नही तो अपने पेटकी तो फिक्र करनी चाहिए थी।'

'ईश्वरका शुक्रिया अदाकर बेटी कि यह अब भी आ तो गया।' एडोरीलीनने निराशा और क्षोभ मिली मुस्कराहटके साथ कहा।

न-मालूम क्यों, आज रोहेम कुछ बोला नहीं। वह इतना हँसमुख और मसखरे स्वभावका था कि घरमें पाँव रखते ही जैसे हँसीका फुहारा छोड़ देता था। रोहेम आते ही पीटरको अपने सिर या कन्धेपर बिठा लेता और एडा तथा एडोरीलीन जबतक मेजपर खानेकी चीजे सजातीं, वह बरामदेमें पीटरको लिये नाचा-गाया करता। घरसे कई कदमोंकी दूरी पर से ही उसकी सीटी सुनाई देने लगती थी और पीटर दौड़कर दरवाजेपर पहुँच जाता था। पर आज यह सब कुछ भी नही हुआ। एडा और एडोरीलीन रोहेमके इस आकस्मिक परिवर्तनका कारण नही समझ सकीं।

रोहेमने अपना ओवर-कोट उतारा और खूँटीपर टाँगनेके बजाय चारपाईपर ही डालदिया। सिरसे टोपी भी उतारकर उसने उसीपर पटक दी और दोनों हथेलियोंके बीचमें सिर रखकर ऐसे बैठ गया, जैसे कुछ गंभीर बात सोचरहा हो। एडोरीलीन और एडाको जब खानेकी मेज पर बैठे-बैठे कुछ मिनट होगये, तब भी रोहेमको वहाँ न पाकर उन्हे

कुछ चिन्ता-सी हुई। एडोरीलीनने एडाको इशारा किया कि वह जाकर रोहेमको बुला लावे।

रोहेमकी कमीजका एक पल्ला हाथमें लिये उसे खींचते हुए एडा रोहेमको खानेकी मेजतक लेगई और काँपती हुई आवाजमे अपनी सास से बोली—'यह खाना खानेको मना करते हैं।'

'मना करता है?' एडोरोलीनने आँखे फाड़कर रोहेमकी ओर देखते हुए कहा—'मगर क्यो? कही खा आया है क्या?'

'कुछ तो खा लिया है, माँ'—कुर्सीपर पूरे वजनके साथ बैठते हुए रोहेमने टूटती हुई आवाजमे कहा—'और कुछ तबियत ठीक नही है।'

'तबियत ठीक नही है? क्यो क्या हुआ?'

'हुआ तो अभी कुछ नही, पर मालूम होता है शीघ्र ही होनेवाला है। नाशके बादल सिरपर मँडरारहे हैं।'

'यह तुम क्या कह रहे हो?'

'ठीक ही कह रहा हूँ' रोहेमने भरी हुई आँखोंसे अपनी वृद्धा माँ और चिन्तासे पीली पड़ी हुई पत्नीके चेहरोको देखते हुए कहा—'मुझे अपनी नहीं, तुम्हारी फिक्र है। मेरे पीछे न-जाने तुम्हारा क्या होगा!'

एडाकी आँखे बरस पडी। एडोरीलीन अपनी कुर्सी छोड़कर रोहेम के पास आ गई और अपने रूमालसे उसके आँसू पोंछते हुए बोली—'मेरे अच्छे बच्चे, आज तू यह क्या बहकी-बहकी बाते कर रहा है? साफ-साफ क्यो नहीं कहता कि बात क्या है?'

'रूस और जर्मनीमे समझौता हो गया है और हमे...'

'क्या कहा रूस और जर्मनीमे? बोल्शेविक रूस और नाजी जर्मनीमें समझौता?—ह—ह—ह—ह—ऽ—ऽ—ऽ—। अरे, किस बेवकूफने तुझे यह कहा है? और तूने इसपर विश्वास भी कर लिया?'

'यह सच है।'

'सच है ? किसीने तुझे अच्छा बेवकूफ बनाया आज। अरे, कभी साँप और नेवलेमे भी समझौता हुआ है ?'

'अबतक तो मुझे किसीने बेवकूफ नही बनाया माँ, पर तुम जरूर बना रही हो।'

'अच्छी बात है, कल सुबह जाकर डॉ० स्मिड्टसे पूछूँगी। उनके यहाँ तो रोज बर्लिनका अखबार आता है न ? माना कि हिटलरकी बुद्धि भ्रष्ट होगई है, लेकिन इतना बौडम तो वह नही कि अपनी कजा खुद बुलावे।'

'तुम न मानो। रूस जर्मनीकी मदद करेगा और जर्मनी पोलैंड पर हमला ! हमे कल शामको किसी 'अज्ञात स्थान' पर जानेका हुक्म हुआ है।'

इस बार एडॉरीलीन कुछ न बोली। उसके काँपते हुए ओठोंसे सिर्फ इतना ही निकला— 'क ल शा म को अ!'

—२—

शेमिट्ज नगरमे आज सूर्योदय या प्रातःकाल जैसे हुआ ही न हो और सब लोग रातकी तरह सो रहे हो ऐसी निस्तब्धता थी। जब-तब श्मशानकी मनहूस नीरवताका स्मरण हो आता था। सडकों और रास्तों का ट्रैफिक पिछली शामसे ही बन्द था। बिना एक भी मृत्यु हुए जैसे सब घरोंमें मातम मनाया जा रहा था ! रोते-बिलखते अबोध बच्चों और माँ, बहन तथा पत्नियोंको छोडकर आज जर्मनीके 'वीर' सैनिक पोलैंडपर 'विजय' प्राप्त करने जा रहे थे। जिन्होंने कभी चींटीको भी नही सताया, वे आज लाखों निर्दोष स्त्री, पुरुषों और बच्चोंके खूनसे अपने हाथ रँगने जा रहे थे। अधिकारका विश्वास और विजयका मोह जैसे मानवतापर

हावी हो गया हो। जीवन और जागृतिके ये सन्देश-वाहक आज मृत्यु और अन्धकारको वरने जा रहे थे। न-मालूम आज इनकी विवेक-बुद्धि कहाँ गुम हो गई थी ?

सूर्य अस्ताचलकी ओर जा रहा था। अब इधर-उधर कुछ चहल-पहल नजर आने लगी थी। सैनिकोंके जानेका समय आ गया था। फौजी लारियाँ इधरसे उधर चक्कर काट रही थी। रोहेम अपनी माँ और पत्नीसे बिदा ले रहा था। पीटर कॉफीका एक टबलर लाया, जिसे रोहेम गट-गट कर गलेसे नीचे उतार गया और टबलर पीटरके हाथोंमे देते हुए बोला—'पीटर, अपने बापको भूलोगे तो नही ? अब शायद तुम्हारे हाथसे कॉफी पीनेका दूसरा मौका न मिले !'

रोते-रोते एडाकी हिचकी बँध गई थी। अब वह और जोर-जोर से रोने लगी। रोहेमने उसके कधेपर हाथ रखते हुए कहा—'कायर न बनो एडा। मैं जानता हूँ कि मैं कोई बहुत अच्छा काम करने नही जा रहा, पर यह इच्छा नही—मजबूरी है। मैं पेटके लिए नही, प्राणोंके लिए जा रहा हूँ। डैनजिग या कॉरीडॉर जर्मनीको मिल भी गये तो क्या, न-मालूम मुझ-जैसे कितने प्राणी उनका मूल्य चुकानेमे बलिके बकरे बनेंगे। न-मालूम कितनी युवतियाँ विधवा होंगी और कितनी माताएँ पुत्र-विहीन।' कहते-कहते रोहेम आवेशमे आ गया था। उसके नथने फूल रहे थे।

'तो फिर तुम जाते क्यों हो ? और सैनिक क्या नही है ? ईश्वरके लिए तुम न जाओ।'

'लेकिन एडा, जाकर, लड़कर, मरनेमे कुछ दिन लग ही जायँगे, तबतक तो मैं जीवित कह और कहवा सकूँगा। पर न जानेका मतलब तो यह है कि बिना लडे ही मुझे अभी एकाध घन्टेमें ही गोलीका शिकार होना पड़ेगा और मेरी लाश इसी घरमे तुम लोगोंकी आँखोंके सामने सड़ती नज़र आवेगी, या फिर जिन्दगीका एक-एक पल मुझे अपमान, जिल्लत

और अकथनीय यंत्रणाओंमें बिताना पडेगा'। तुम्हे हिटलरके कानून-कायदे नहीं मालूम ?'

एडा फिर फफक-फफककर रोने लगी। एडारीलीनके तो होश-हवास ही गुम थे। पीटर कॉफीका खाली टबलर हॉथमे लिए सजल नेत्रो से कभी अपनी माँ और कभी पिताको देख लेता था। और कुछ उसकी समझमे ही नही आ रहा था।

रोहेमके मस्तिष्कमे एक अजीब-सा तूफान उठ रहा था। कुछ समझमे नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? पर उसका कर्तव्य तो पहले ही निश्चित किया जा चुका था। अचानक घरके सामने एक फौजी लॉरी आकर रुकी और दो स्टॉर्म-ट्रूपर्सने भीतर प्रवेश किया। रोहेम तो तैयार था ही। उसके चेहरेपर उदासीकी जगह अब फीकी मुस्कराहट दौड गई थी। न-मालूम आदमी अपने आपको यो किस लिए धोखा देता है ! अपनी पत्नी, माँ या लडकेकी ओर देखे बिना ही रोहेम दोनो आगन्तुकों के साथ घरसे बाहर निकल आया। लॉरी उसे लेकर धूल उड़ाती हुई आगे बढ गई।

आज शेमिट्जसे सैनिकोंको लेकर ६ स्पेशल ट्रेने प्रागके लिए रवाना होनेवाली थी। सब सैनिक जलूस बनाकर मार्च करते हुए स्टेशन पर जानेको थे और नागरिकोंको आज्ञा हुई थी कि वे उन्हे हर्ष-ध्वनिसे बिदा करने और विजयकी प्रार्थना करनेको अधिकाधिक सख्यामे उपस्थित हों। केवल बीमार, अंधे या अपाहिज ही इस कर्तव्य-पालनसे मुक्त थे। शेष लोगोंमेंसे न आनेवालों पर फी आदमी ७ मार्क जुर्माना किये जाने का ऐलान हो चुका था। लोगोंका पेट ही मुश्किल से भरता था। ७ मार्क जुर्माना देना भला किसके बसकी बात थी ! पीटरको अपनी उँगली थमाकर एडोरीलीन भी सैनिकोंको बिदा देनेके लिए चल पडी। उन दोनोंके पीछे-पीछे सिसकियाँ भरती हुई एडा पागलोंकी तरह लड़खडाती हुई चली जा रही थी।

सडकके दोनो ओर स्त्रियो, बच्चो और बूढोकी अपार भीड थी। बीचमे सैनिक चार-चारकी कतार बनाये नई वर्दिया और साज-सामान से लैस होकर अपने बूटोकी नालोसे सड़ककी छाती कँपाते हुए मार्च कर रहे थे। हाथोमे रूमाल हिलाते हुए बूढो, बूढ़ियों, युवतियो और बच्चोंकी हर्ष-ध्वनि (?) से आकाश गूँज रहा था। 'हाइल हिटलर' के नारे कानो के पर्दे फाडे डाल रहे थे। बेंडका मृत्यु-सगीत इस हर्ष-ध्वनि और सैनिकोंके बूटोके शब्दसे मिलकर एक ऐसा भयानक शोर पैदा कर रहा था कि न-मालूम कितनोंके दिल बैठे जा रहे थे। सैनिकोका वह दरिया जैसे जीवनके अतिम उफानके साथ डाडे मारता हुआ बहता जा रहा था। उसे बिदा करनेको एकत्र हुई यह भीड़ हर्षसे पागल हो रही थी या विषाद से घुल रही थी, इसे समझनेवाले वहाँ कितने लोग थे ? वहाँ जो कुछ था, वह था आतक।

एडाकी हिचकी अब रुक गई थी। उसकी आँखोका पानी भी शायद सूख गया था। वह बडी खोज-पूर्ण दृष्टिसे पाससे गुजरनेवाले हरएक सैनिकको ग़ौरसे देख रही थी। सहसा उसकी नजर रोहेमपर पड़ी। अपने साथियोंके कदम-से-कदम मिलाये वह पत्थरकी मूर्तिकी तरह अकड़े हुए आगे बढ रहा था। एडा आनन्दसे चिल्ला उठी—'रोहेम, मेरे प्यारे रोहेम !' और ज्यों ही रोहेम उसके पाससे गुजरने लगा, उसने अपने हाथका रूमाल उसके मुँह पर फेक दिया और पागलोंकी तरह चिल्लाकर बोली—'तुम कब आओगे ? जल्दी ही न ? हॉ, जल्दी आना, वर्ना मैं तो रो-रोकर मर जाऊँगी !'

रोहेम कुछ नही बोला ज्योंका त्यों मूर्तिवत् चलता रहा। इस वक्त वह ड्यूटीपर था। रुकने, एडासे बात करने या उसके प्रश्नोंका उत्तर देने का उसे समय या सुपास ही कहॉ था ? पर कनखियोसे उसने एडाकी तरफ देखा जरूर था। फौजका अनुशासन जो था। अस्ताचलगामी

सूर्यकी किसी किरणने उसकी आँखमें उमड़े हुए आँसुओंको भी शायद चमका दिया था। एडाने यह देखा था। रोहेमके ओंठ फड़के थे, यह भी उसने देखा था। उसके गलेसे जैसे खूनका एक घूँट नीचे उतरा हो, यह भी उसने देखा था। उसके कन्धेपर रक्खी हुई सङ्गीन लगी राइफल कुछ हिली थी—जैसे उसका हाथ कुछ काँपा हो—यह भी एडाने देखा था। इन सबके आधारपर वह उसके शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित शरीर-रूपी पिंजड़ेमें तिलमिलाते हुए उसके दिलकी अवस्थाकी भी कुछ कल्पना कर सकी थी।

उसकी तन्द्रा उस समय टूटी, जब उसने देखा कि पीटर भीड़को रोकनेके लिए लगे तारोंके बीचमें से निकलकर रोहेमके पास पहुँच गया है और उसके रोहेमकी कमीजका पल्ला पकड़नेसे पहले ही किसीने एक झटके के साथ उसे पीछे खींच लिया और पूरे ज़ोरके साथ भीड़की ओर धकेल दिया। पीटरने एक चीख मारी और औंधे मुँह सड़कपर गिर पड़ा। कुछ क्षणों में भीड़में से रास्ता बनाकर एडा जब उसके पास पहुँची, तो उसने देखा कि उसके मुँहसे खून गिर रहा है और न-मालूम कितने लोग दाँत पीसते हुए उसकी ओर देख रहे हैं। एडा जोरसे रो पड़ी और पीटरको छातीसे लगाकर भीड़में से बाहर निकल आई। एडोरीलीन आँसू पोंछते हुए उसके पीछे-पीछे चल रही थी।

बाहर आकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसके मुँहसे अनायास निकला—"सत्यानाश हो इन राक्षसोंका और इनके आक़ा उस नामाकूल हिटलरका!" उसने अपने रूमालसे पीटरके मुँहका खून पोंछा और घरकी तरफ चलदी। अभी वे लोग २०-३० क़दम मुश्किलसे चले होंगे कि उसके कानोंमें आवाज आई—"फ्राउ एडा, हमें आपसे कुछ कहना है।"

एडाने पीछे मुड़कर देखा। चेहरेपर क्रूर मुस्कराहट लिए यमदूतों की तरह लम्बे-चौड़े गेस्टेपोके दो जवान खड़े थे। सहसा वह एड़ीसे चोटी तक काँप गई। सजल नेत्रों और फड़कते ओठोंसे काँपते हुए स्वरमें उसने कहा—"कहिए, क्या बात है?"

"हर ब्राजनने हमे आपकी गिरफ्तारीकी आज्ञा दी है। आपको इसी समय चलना होगा।"

एडा अभी कुछ जवाब भी नही दे पाई थी कि एक मोटर आकर रुकी और दोनो आदमियों सहित एडाको लेकर चल पड़ी। एडोरीलीन पीटर को अपने कन्धेपर लिए हुए आँखे फाडकर देखती ही रह गई। उसके मुँह से एक शब्द भी नही निकला।

—३—

पीप्लूस-कोर्टके पहरेदारसे लेकर बड़े-से-बड़े जज तकके पास एडोरीलीन सिर पटक आई थी, पर उसे एडाके बारेमे किसीने कुछ न बताया। गेस्टेपोका द्वार उसके लिए बन्द हो चुका था। नजरबन्द-कैम्पोंमे रक्खे गए लोगोकी सूची उसे इसलिए नही बताई गई कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नही था। वकील इस मामलेमे मुँह खोलने तकका साहस नही करते थे। हताश होकर एडोरीलीन चुप हो बैठो थी।

रोहेम और एडाके बिना पीटरको घर अच्छा नही लगता था, पर अब तो एडोरीलीनके सिवा उसकी देख-रेख करनेवाला और कोई नहीं था। अपना खेल भी वह भूल गया था। मुँहका घाव तो उसका भर गया था, लेकिन दिन-ब-दिन उसका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। सिपाहियो को देखते ही उसे डर-सा लगने लगता था। उसे अपने जीवनमे पहले-पहल सिपाहियोंको देखकर पूछा गया वह प्रश्न सहसा आज याद आ गया—"यह कौन हैं माँ?" और "यह सैनिक हैं बेटा"—एडाने कहा था।

"लेकिन क्या ये आदमी नहीं हैं?" उसने पूछा था।

"कभी ये भी आदमी थे, पर अब तो सैनिक हैं, जिन्हे मानवतासे कोई सरोकार नहीं। लड़ना, मारना और मरना ही इनका पेशा है।"

"पर बिना कारण या क़सूरके यह किसीको क्यों मारते हैं, माँ?" उसने पूछा था।

"इसी लिए कि इनमे पाशविकता और दानवता अधिक बढ गई है।" एडाने कहा था।

"पर मनुष्य मनुष्यके खूनका प्यासा क्यों होता है, माँ ? वह आपसमे लडता और मारता-मरता क्यो है ?"

"अभी तू इन बातोंको नही समझ पायगा, मेरे भोले बच्चे।" एडाने यह कहकर उसकी सारी उत्सुकताको शान्त कर दिया था।

पर वास्तवमे उसकी वह उत्सुकता शान्त तो हुई नही थी, दब जरूर गई थी। तबसे बराबर वह उसके मस्तिष्कमे उथल-पुथल मचाए थी। आज जब एडोरीलीन कॉफीके साथ उसे ब्लैकब्रेड खिला रही थी, तो वह गुमसुम बैठा मन-ही-मन यही प्रश्न फिर दोहरा रहा था। उसका कन्धा पकड़कर हिलाते हुए एडोरीलीनने कहा—"पिटी मास्टर, आज तुम गुमसुम क्यो हो ? ऐसा क्या सोच रहे हो ?"

"कुछ नही दादी ! यही सोच रहा था कि आदमी आखिर लडता क्यों है ?"

"पर तुझे इसकी कैसे फिक्र हुई रे ?"

"वैसे ही। उस दिन तुम कह रही थीं न कि पिताजी लड़ने गए हैं। वे किससे लड़ेगे दादी ?"

"अपने मुल्कके दुश्मनोसे।"

"दुश्मन हमारे मुल्कके कौन हैं ?"

"पोलैंण्डके लोग।"

"लेकिन उन्होंने हमारा क्या बिगाड़ा है ?"

"वे हमारी जमीनका कुछ हिस्सा नही लौटा रहे।"

"लेकिन जमीन भी किसीकी होती है क्या ?"

"हॉ, जहॉ हम रहते हैं, वह हमारी जमीन है। मैं भूल गई, हमारी नही हिटलरकी।"

"लेकिन इसके लिए लड़नेकी क्या जरूरत ?"

"इसका जवाब तो हिटलर ही दे सकता है। पर तू अभीसे क्यों इन बातोंकी उधेड़-बुनमें लगा है ? जरा बड़ा हो ले, फिर अपने-आप सब कुछ जान लेगा।"

दरवाजेपर किसीने धीरेसे दस्तक दी। एडोरीलीनने जाकर जब किवाँड़ खोले तो देखा कि सामने ही भयङ्कर स्वरूप बनाए एडा खडी है। मुँह उसका कुम्हलाकर काला हो गया है। गालोंपर मैल जम गया है, जिन पर आँसुओंकी धारासे धुला हुआ हिस्सा साफ नजर आता है। ओंठ सूख गए हैं और उनपर पपड़ी जम गई है। कपडोंके मैलका तो कहना ही क्या। बीसियों जगहसे वे फट गए हैं। बालोंमे मिट्टी पडी है और वे आपसमें बुरी तरह उलझ गए हैं। पाँवोंपर धूल जमी है। हाथोंकी हथेलियाँ मैलसे काली पड रही हैं। जहाँ-तहाँ शरीर और कपडोंपर खूनके दाग भी स्पष्ट नजर आते हैं। एडोरीलीनने नीचेसे ऊपर तक कुछ आशङ्काके साथ एडाको देखा। सहसा वह काँप उठी। एडाको जोरसे सीनेसे लगाते हुए उसने कहा—"मेरी प्यारी बच्ची, तेरा यह क्या हाल है ?"

"हाल पूछती हो माँ, आज अपनी आँखोंसे साक्षात् नरक देखकर आ रही हूँ। जरा चारपाईपर कम्बल बिछा दो, तो लेट जाऊँ। खडा नहीं हुआ जाता। अङ्ग-अङ्ग टूट रहा है। मेरा पीटर वह अच्छा तो है ?"

एडोरीलीन उसे कन्धेके सहारे भीतर ले गई। चारपाईपर कम्बल डालकर उसे लिटा दिया। एडाका शरीर ज्वरसे जल रहा था। उसकी आँखोंमे आज सिर्फ पानी ही नहीं था, आग भी थी। लेटनेपर उसकी फ्राकका सीनेके पासका हिस्सा फटा होनेके कारण जरा हट गया। एडोरीलीनकी नजर वहाँ पड़ी हुई नीलपर पड़ी। उसने हाथकी उँगलियोंसे देखा—दोनों स्तनोंके बीचका कुछ हिस्सा सूजा था और वहाँ थोड़ा-सा

खून भी जम गया मालूम होता था। उसने रोनी-सी आवाजमे पूछा—"यह क्या है एडा? यहाँ यह खून कैसा?"

एडा कोई उत्तर नहीं दे सकी। दोनो हाथोकी हथेलियोसे आँखे मूँदकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसका बिलखना देखकर एडोरीलीन का रहा-सहा धैर्य भी जाता रहा। उसने इस घावका कारण जाननेकी बहुत कोशिश की, पर एडा उसे कुछ भी न बतला सकी।

एडाके पास पीटरको छोड़कर एडोरीलीन एक टम्बलर हाथमे लेकर राशन-डिपोकी तरफ चल पडी। राशन-कार्ड इन्चार्जके आगे करते हुए एडोरीलीनने बडे विनीत स्वरमे कहा—"आज मैं थोडा-सा दूध भी लूँगी। मेरी पुत्र-वधू बीमार है।"

इन्चार्जने राशन-कार्डको गौरसे देखते हुए कहा—"यह नामुमकिन है। दूध तुमको नही मिल सकता। वह कुछ खास अफसरोंके घरोके लिए ही देनेका हुक्म है।"

"लेकिन मेरी पुत्र-वधू जो बीमार है। वह दूध और चीनीके बिना कॉफी कैसे पी सकेगी?"

"इसका जवाबदेह मैं नही हूँ"— कहते हुए इन्चार्जने उसका राशन-कार्ड लौटा दिया।

एक मिनट एडोरीलीन चुप रही। फिर नम्रता प्रदर्शित करते हुए धीरेसे बोली—"अच्छा, अगर वैसे नही दे सकते, तो यह ब्लैक ब्रेड ले लो और इसके बदलेमे मुझे थोड़ा सा दूध दे दो। तुम्हारी बडी दया होगी।"

"फ्राउ एडोरीलीन, आप एक सरकारी अफसरको नियम-भङ्ग करने और रिश्वत लेनेके लिए फुसला रही हैं। आपको मालूम है, इसका फल क्या होगा?" कठोरतापूर्वक इन्चार्जने कहा।

एडोरीलीन नात्सी-सलाम देकर अपना-सा मुँह लिए वहाँसे चल

दी। मन-ही-मन वह कहती जा रही थी — पहले मक्खन बन्द हुआ, फिर चीनी, अब दूध भी बन्द हो गया। कल शायद ब्लैक-ब्रेड और कॉफी का यह पानी मिलना भी बन्द हो जाय। लोग फिर क्या हवा या पत्थर खाकर जिन्दा रहेंगे? क्या इस तरह भूखों मारकर ही हिटलर हमें सुख और समृद्धिके मार्गपर ले जा रहा है? सत्यानाश हो इस मानव-रूपधारी शैतान का!

—४—

एडाकी स्थिति सुधरनेके बजाय और बिगड़ती ही गई। उसके पेटमें गाँठें पड़ गई थीं। सीनेमें आठों पहर दर्द रहता था। पेशाबके साथ खून जाना जारी था। हरारत उसे प्रायः हर वक्त बनी ही रहती थी। एडोरीलीनने पहले तो दो-चार घरेलू दवाइयोंका प्रयोग किया। पर जब उनसे कोई लाभ नहीं हुआ, तो एडाको शेमिंट्ज़के केन्द्रीय अस्पतालमें ले जाना तय किया।

दूसरे दिन सुबह उठकर एडोरीलीनने एडाके कपड़े बदले और उसे अपने कन्धेके सहारे अस्पताल लेकर चली। अस्पताल यद्यपि उनके घरसे बहुत दूर नहीं था, पर एडा वहाँ पहुँचते-पहुँचते भी काफी थक गई और उसकी साँस फूल गई। अस्पतालकी सीढियोंपर कुछ सुस्ताकर वह डॉक्टरके पास पहुँची और कहा कि एडाको अमुक-अमुक तकलीफ है, लिहाजा उसे इलाजके लिए वहाँ भर्ती कर लिया जाय।

डॉक्टरने एक उपेक्षापूर्ण दृष्टि एडाके चेहरेकी तरफ डाली और नाक-भौं सिकोड़कर एडोरीलीनसे कहा—"अस्पतालमें युद्धके घायलोंके लिए भी जगह पूरी नहीं पड़ रही है। फिर बाहरके लोगोंको हम कैसे ले सकते हैं? हमें किसी भी स्थानीय मरीजको न लेनेका सख्त हुक्म है।"

पास खड़े हुए एक दूसरे डॉक्टरने कहा—"इसे ऐसी तकलीफ ही क्या है? मालूम होता है युद्ध-सेवासे जी चुरानेको यह सब ढोंग किया गया है। जवान औरत है, शर्म नहीं आती इसे बीमार बनते?"

एडा और एडोरीलीनकी इस समय जो दशा थी उसे दूसरा कौन समझ सकता था ?

पहले डॉक्टरने कहा—"कुछ दवा चाहो तो मैं दे दूँ।"

एडोरीलीनके उत्तर देनेसे पहले एडा बोल उठी—"नही,धन्यवाद। ढोंग और बहानेमे दवाकी क्या जरूरत ?" एडोरीलीनका कन्धा हाथसे दबाते हुए उसने कहा—"जल्दी लौट चलो, मुझसे अधिक देर खड़ा नहीं हुआ जायगा।"

उसे लेकर एडोरीलीन लौट पडी। घर आते-आते उसे ध्यान आया कि डॉ० स्मिड्टके यहाँ क्यों न होते चले। डॉक्टर स्मिड्टका घर रास्तेमे ही पड़ता था। वे पिछले महायुद्धके एक पीडित थे जो अपने जीवन के शेष दिन शेमिंट्जके कस्बेमे बिता रहे थे। एक विधवा लड़कीके अलावा उनके परिवारमे और कोई नहीं था। वह एक अस्पतालमे नर्स थी। उसीके वेतनपर दोनोका गुजर होता था। डॉ० स्मिड्टका सब कुछ नात्सियोंने जब्त कर लिया था। वे अब अपनी लडकीको मिले क्वार्टरमे ही रहते थे। सुबह अखबार पढना और शामको रेडियो सुनना ही उनके मुख्य काम थे। इन दोनों के द्वारा आनेवाली खबरोको वे शेमिंट्जके आधे-से-अधिक लोगोको सुनाते थे। सुबह-शाम उनके यहाँ खबरोके शौकीनोंका ताँता-सा बँध जाता था।

एडा और एडोरीलीनको देखते ही डॉ० स्मिड्ट आरामकुर्सीसे उठ खडे हुए और हाथका अखबार मेजपर रख पास पडी कुर्सीकी ओर इशारा करते हुए मुस्कराकर बोले—"आज तो बडे दिनों बाद दीखीं फ्राउ एडोरीलीन ! मैं तो समझा था कि तुम भी पोलैण्ड जीतनेके लिए गई हो।"

"यो क्यों नहीं कहते डॉक्टर कि हिटलरका मर्सिया पढने गई थी।" एडोरीलीनने क्रूर हास्यके साथ कहा।

"हाँ, हाँ, वह वक्त भी अब दूर नही है। अच्छा, रोहेमका कुछ समाचार मिला ?"

"अभी तक तो कुछ नही । क्यो, आपने कुछ सुना ?"

धीमे स्वरसे डॉक्टर स्मिड्टने कहा— "वह पिछले महीनेकी १३ तारीखको केट्टोविजके पास लड़ता हुआ मारा गया । उसीके साथ लडनेवाले एक सैनिकने, जो घायल होकर पिछले हफ्ते शेमिट्जके अस्पतालमे आया है, मेरी पुत्री मेरियाको यह बतलाया है । सरकार तो इन खबरोको लोगोंसे छिपा रही है । न-मालूम कितने लोगोका वहाँ रोज खून-खराबा होरहा है।"

"लेकिन मुझे तो उसकी १८ तारीखकी चिट्ठी मिली है, जिसमे लिखा है कि वह मजेमे है।"

"पर इस बातका क्या सबूत कि वह चिट्ठी फर्जी नही है ? ऐसी चिट्ठियाँ और कई परिवारोंके पास भी आई हैं।"

"डॉक्टर, अब हम क्या करे ? रोहेम, मेरा रोहेम, अब "

"जो कुछ होना था वह तो होगया, फ्राउ एडोरीलीन । अब पछतानेसे क्या ?"

"हम अब क्या करेंगे, डॉक्टर ?"

"जरा धैर्य रक्खो । इस बार सरकारने मरे हुए सैनिकोंके आश्रितो की सहायता करनेका नियम भी हटा दिया है। उसके पास धरा ही क्या है ?"

"फिर हमारा क्या होगा ? एडा बीमार है । मेरे हाथ-पाँव चल नही रहे । पीटर तो अभी बिल्कुल नासमझ बच्चा है।"

"घबरानेसे कुछ नही होगा, फ्राउ एडोरीलीन । पर इतना विश्वास रक्खो कि हमारे अच्छे दिन बहुत जल्द आनेवाले हैं । हम चाहे तो उन्हे और भी जल्द ला सकते हैं।"

"हम ला सकते हैं ? तुम आज कह क्या रहे हो, डॉक्टर ।"

"ठीक ही कह रहा हूँ । जरा धीरे बोलो, फ्राउ एडोरीलीन, बात करते समय यह न भूलो कि जर्मनीकी दीवारों और पेड़ोंके भी कान हैं।" जरा और धीमी आवाजमे डॉ० स्मिड्टने कहा—"तुम्हे हमारी मदद

करनी होगी। फिर देखना, जर्मनीकी पददलित जनता हिटलरके फौलादी पञ्जेसे कितनी जल्दी छूटती है ?"

"वह कैसे ?"—एडोरीलीनने डॉ० स्मिड्टके कानमें कहा।

"मेरियाकी तरह तुम और एडा भी नर्स हो जाओ। तुम्हें रखवानेका जिम्मा मेरा है। वहाँ युद्धके घायल सैनिकोंको, जो मैं बताऊँ, वह सब कहना होगा। अस्पतालके समयके अलावा असंतुष्ट और पीड़ित जनता को क्रांतिके लिए तैयार करनेका कुछ काम और करना होगा। रास्ता तुम्हें मेरिया बता देगी। इस समय वह शेमिट्ज म्यूनीशन वर्क्सके मजदूरोंको कलसे काम छोड़नेके लिए राजी करने गई है। पूरे एक हफ्तेकी उसकी कोशिश है। शायद आज सफलता प्राप्त कर लौटे।"

एडोरीलीनने एक प्रश्न-भरी दृष्टि एडाकी ओर डाली, जो रोना-कराहना भूलकर बड़े ध्यानसे डॉक्टर स्मिड्टकी बातें सुन रही थी। बड़ी तत्परतासे उसने कहा—"हमें मंजूर है, डॉक्टर। आजसे आप हमपर जो जिम्मेदारी डालेंगे, उसे हम अधिक-से-अधिक मुस्तैदीसे पूरा करेंगी। एक रोहेम गया तो गया, हम लाखोंकी जान तो बचायँगी। ब्रिटेन और फ्रांससे पहले हिटलरका खात्मा हम करेंगे, क्योंकि उनसे बड़ा काल वह हमारे लिए है।"

"तब तो मुझे विश्वास हो गया कि जर्मनीके अच्छे दिन अब आ गए।"

"तो फिर हम कब आवें ?"—एडाने पूछा।

"आजकी डाकसे मैं आप दोनोंके नाम भेज देता हूँ। परसों शाम तक नियुक्तियोंकी तारसे सूचना मिल जायगी। आप कष्ट न करें। मेरिया द्वारा मैं स्वयं ही आपको खबर करवा दूँगा।"

"अच्छा, शुक्रिया" कहकर एडा और एडोरीलीन अपने घरकी ओर चल दीं।

नया युग

अभी सवेरा नहीं हुआ था। वारसा कुहरेमे ढँका हुआ जैसे आजादीकी अन्तिम साँसे ले रहा हो। बारकोमे कुछ लोग जग गए थे और कुछ अधजगी अवस्थामे कम्बलमे लिपटे-लिपटे ही मृत्यु और जीवनका लेखा-जोखा कर रहे थे। वे आज जीवित हैं, इतना तो उन्हे मालूम था: पर कलका सूर्योदय वे देख सकेंगे, इसका उन्हे विश्वास नही था। उन्हे ऐसा लग रहा था कि पल, घडी, दिन और रात असाधारण तेजीसे बीत रहे हैं। वे जैसे उन्हे छोडकर दौडे जा रहे हो— हमेशाके लिए उन्हे पीछे छोड़कर वे आगे भागे जा रहे हों और फिर कभी नही लौटेंगे। वे दिन और दिनोंसे—जिनके बीतनेका किसीको ध्यान भी नही रहा—न जाने क्यो इतने निराले और न्यारे हो गए थे?

सहसा बिगुल बज उठा। सब सैनिक अपने-अपने बिस्तरे छोड-छोड़कर उठ खडे हुए और जल्दी-जल्दी वर्दी पहनने लगे। थोड़ी ही देर मे बारकोंका सोया हुआ यौवन सैनिकोकी टुकडियोके रूपमें चलती-फिरती दीवारोंका सा रूप धारण कर उठा। लगभग सभी सैनिकोके चेहरे मुर्झा-से रहे थे। कुछकी आँखोंमे खुमारी नजर आ रही थी और कुछकी आँखें आग उगल रही थीं। कुछके पाँव भारी पड़ और उठ रहे थे और कुछके आज्ञा मिलनेसे पहले ही जैसे उठकर दौडनेको तैयार हो जाते थे। कुछकी आँखोंका पानी तो कुहरेके पर्देमे भी चमक रहा था।

सैनिकोंके तनकर खडे हो जानेके कुछ ही क्षण बाद दूरसे एक बूढा कई जवान और अधबूढ़े लोगोंके साथ आता हुआ दिखाई दिया। बाँए हाथकी पतली छड़ी जैसे उसके काँपते हुए शरीरको सँभाले थी। सैनिककी पहली कतारसे कुछ कदम दूरीपर वह रुक गया और अपनी

झुकी हुई गर्दनको जैसे झटका देकर ऊपर उठाया। यह पोलिश सेनाके प्रधान सेनापति स्मिग्ली रिज थे। विषाद, गम्भीरता, जरा-जीर्ण शिथिलता और अनिष्टकी काली छायासे प्रभावित उनकी मुख-मुद्रा देखकर सैनिक जैसे सहम गए हो। उनकी दृष्टि प्रत्येक सैनिकके चेहरेपर से दौड़ती हुई एक ओरसे दूसरी ओर तक चली गई। सैनिकोंकी सलामीका उत्तर उन्होंने दिया या नहीं, यह उन्हे याद नहीं रहा। आजकी-सी मुख मुद्रा उनकी पहले किसीने नही देखी थी। सैनिकोंका दिल तो पहलेसे ही बैठा जा रहा था, प्रधान सेनापतिकी अवस्था देखकर जैसे उनका रहा-सहा साहस और धैर्य भी जाता रहा।

जलद-गम्भीर घोषसे उस आशङ्कामयी मनहूस शान्तिको भङ्ग करते हुए सेनापतिने कहा— "भाइयो, तुम लोग आज उदास क्यों देख पड़ते हो? मेरे चेहरेकी तरफ इस तरह घूरकर तुम क्यों देख रहे हो? कोई ऐसी अनहोनी बात तो नहीं है। जिस बातकी हमे आशङ्का थी और जिसके लिए हम पूरी तैयारी कर चुके थे, वही आज घटी है। जर्मनोंने तीन ओर से हमारे देशपर आक्रमण कर दिया है।"

इन शब्दोंके मुँहसे निकलते-निकलते सेनापतिका चेहरा और उदास हो गया। उनकी आवाज लडखड़ाने लगी। तनकर खडे हुए सैनिकों में कॅपकॅपीकी एक लहर-सी दौड गई। उनके कन्धोपर रखी हुई बन्दूके सहसा हिल गई।

कोई २-३ मिनट चुप रहकर सेनापतिने कहा— "पर हमारे लिए यह कोई नई बात नही है और न इस सम्बन्धमे हमारा कर्त्तव्य ही अनिश्चित है। पोलैण्डवासी अपनी वीरता और साहसके लिए यूरोपके इतिहासमें प्रसिद्ध रहे हैं। शत्रुके सामने झुकना या पीछे हटना वे लोग जानते ही नही। मुझे विश्वास है कि आप लोग अपना कर्त्तव्य पालन करते समय अपने पूर्वजोंकी विश्व-विश्रुत प्रतिष्ठा और देशके अभिमानको भूल नहीं जायेंगे।

देशके भाग्यका निपटारा आप ही लोग करेंगे। आज हमारी परीक्षाका दिन है। आज आपको यह सिद्ध कर देना है कि एक-एक पोल, न सिर्फ पोलैण्ड का, बल्कि विश्वकी शान्ति और स्वतन्त्रताका सन्देशवाहक है। अब दो घण्टेके लिए आप लोगोंको छुट्टी है, उसके बाद सबके जानेके स्थान बता दिए जायँगे।"

सब सैनिक इस तरह गुमसुम अपनी अपनी बारकोंकी तरफ चल पड़े जैसे श्मशानमें कई मुर्दे उठ कर इधर-उधर चलने लगे हों। कोई किसीसे बोल-बतला नही रहा था और सबके पाँव जैसे लड़खड़ा रहे थे।

—२—

सारे पोलिश डिविजनको मालूम हो गया कि स्पाकने कल जो बात कही थी, वह एकदम ग़लत नहीं है। उनकी सरकार रूमानियामे चली गई है। बहुतोंको इस बातपर विश्वास नही हुआ और जब कर्नल हेलिंस्की और स्पाकमे गरमागरम बातचीत हुई, तब तो सबको यह विश्वास होगया कि स्पाककी बात ही ठीक जान पड़ती है।

दूसरे दिन न सिर्फ स्पाककी बातोंका जोरोंसे खण्डन ही किया गया, बल्कि उसे विदेशी गुप्तचर देशद्रोही बतलाकर कैद भी कर दिया गया। इससे सैनिकोंमे आतङ्क जरूर छागया, पर उन्हे इस बातपर विश्वास नही हुआ कि स्पाकने जो कुछ कहा है, वह एकदम मिथ्या है। पर प्रकट रूपमे यह कहनेको कौन तैयार था? सब सहमे-से रह गए।

एक कैंपमे स्पाकको हथकडी-बेडीमे कसकर डाल दिया गया। एक बूढ़ा-सा सन्तरी वहाँ पहरा देनेपर तैनात कर दिया गया। सन्तरी कैंपके ऊपर खड़ा-खड़ा दूरसे आनेवाली बन्दूकों, तोपों, मशीनगनो की गोलियो की सनसनाहट और बमोंके धड़ाकोंको मिश्रित भावोंसे सुन रहा था। सहसा कैंपमे से किसीके अट्टहासका रव सुनाई दिया। उसने आश्चर्य और क्रोधके साथ देखा—जो कुछ उसने देखा, उसपर जैसे वह विश्वास नहीं

कर सका। अट्टहास करनेवाला व्यक्ति और कोई नही था, स्पाक बैठा हुआ खिलखिलाकर हँस रहा था। बूढ़े सन्तगीने डपटकर कहा—"शर्म नही आती तुझे हँसते हुए, स्पाक ? देश के साथ विश्वासघात और विद्रोह करके भी तुझे उसके इस सङ्कट-कालमें हँसी आती है ? तुझे डूब मरना चाहिए।"

"हो सकता है, तुम्हारी बात ठीक हो स्लीमैक"—स्पाकने गम्भीर होकर जरा लापरवाहीसे कहा—"पर इसका अन्तिम निर्णय तो बादमे ही होगा कि पोलैण्डके साथ विश्वासघात और विद्रोह मैंने किया है या तुमने और तुम्हारी पृष्ठपोषक सरकारने ?"

"हूँ, पाजी कहीका, नालायक। अपने मुल्कके लिए भी लडनेमे तुझे मौत आ गई ? क्या तेरी जान पोलैण्डसे ज्यादा मूल्य रखती है ?"

"यह मैं कब कहता हूँ ? मै तो इस तरहकी तुलना ही नही करता। अगर तुम करते हो, तो सुनो, एक मानवकी जान एक नही अनेक मुल्कोंसे भी अधिक मूल्य रखती है। मुल्क जैसी कोई चीज बजात खुद तो कुछ भी नही है। अगर मानव ही नही रहा, तो फिर जमीन जमीन ही रहेगी, वह मुल्क और बेमुल्क क्या होगी ? मानवताका नाश करता है युद्ध और इसी लिए मैं उसमे शामिल नहीं हुआ और तुम सबसे भी मैंने यही कहा।"

"लेकिन पगले, हम तो मानवताका नाश नही कर रहे। वह तो हिटलर कर रहा है।"

"हॉ, यह ठीक है। पर हिटलर क्या साम्राज्यवादी परिस्थितियों और प्रतिक्रियाओंकी देन नही है ? वर्सईकी सन्धि क्या अन्याय और अशान्तिके बीज बोनेका ही हीन प्रयत्न नही था ? उस समय पराजित जर्मनी इस साम्राज्यवादी योजनाका विरोध नही कर सका। आज वह अपने ही पापका प्रायश्चित्त कर रहा है। कॉटा तो आखिर कॉटेसे ही निकाला जाता है न।"

"लेकिन उसने हमारे मुल्कपर हमला करके क्या अच्छा किया ?

क्या उसके लिए यह उचित था ?"

"मैं कब कहता हूँ कि यह ठीक है ? पर इसमें जर्मनीसे अधिक दोष पोलैण्डका है। जो भाग जर्मनीका था और जर्मनोंका था, उसे लौटाने मे जिद कर क्या हमारे देशने अपने ही नाशको निमन्त्रण नही दिया ? एक ओर हमारे शासकोंने रूसी सहायताको ठुकरा दिया और दूसरी ओर जर्मनी की उचित शर्तोंको। दुर्भाग्य तो यह है कि हम आज भी यह नहीं समझ पाए है कि हमे कौन अपने स्वार्थके लिए ढाल बनाए हुए है !"

"पर भाई, डैनजिग और कौरीडोर जर्मनीको देनेके बाद पोलैण्डका रह ही क्या जाता है ?"

"कहनेको उसका है ही क्या ? उसका सङ्गठन तो विभिन्न राष्ट्रोंके टुकडे जोड़-जोड़कर किया गया है। ऐसा करनेमे जो चाल थी, वह धीरे-धीरे सामने आ रही है। तुम्हे याद होगा अभी कुछ महीने हुए हमने चेकोस्लोवाकियाके पूर्वीय भागपर हमलाकर कुछ भाग हड़प लिया था। रूसके सङ्कट-कालमे क्या हमे उसपर हमला करना चाहिए था ? भाई, यह हमलो की प्रवृत्ति ही बुरी है। अबाध स्वतन्त्रता और आत्म-निर्णयका अधिकार मनुष्य-मात्रको है, फिर क्या एक-दूसरे पर हमलाकर उसे अपने अधीन बनावे।"

"तुम ठीक कह रहे हो स्पाक, लेकिन अब इन बातोंसे क्या हो सकता है ? हमारा देश तो बड़ी तेजीसे विनाशकी ओर जा रहा है।"

"विनाश और सृजन तो दुनियाके नियम हैं। इनसे घबराना व्यर्थ है। मेरा तो विश्वास है कि इस तथाकथित विनाशके बाद एक नया पोलैण्ड जन्म लेगा। भले ही उसका नाम आजके अर्थमे 'पोलैण्ड' न हो, पर वह हमारे जीवनका एक नया युग होगा—विश्व-इतिहासके एक नए अध्यायका आरम्भ होगा।"

"लेकिन फिर भी क्या हम निश्चिन्त हो सकेंगे ?"

"शायद हो सके, क्योंकि हम लोग अधिनायक-तन्त्र और निहित हितोंके मुट्ठी-भर लोगोंके शासनका कुफल बहुत देख चुके हैं। युद्ध, युद्धकी आशङ्का और अशान्तिसे हम लोग अब काफी ऊब चुके है। अब तो हमे अपनी सारी शक्ति जनताका राज्य स्थापित करनेमे लगानी चाहिए। जब कोई शासक और शासित न होगा, शोषक और शोषित न होगा, तो युद्ध और अशान्तिकी आशङ्का अपने-आप मिट जायगी।"

—३—

इस बार स्लीमैंक कुछ नहीं बोला। कुछ क्षण वह खड़ा-खडा न जाने क्या सोचता रहा और फिर इधर-उधर देख कर स्पाकके नजदीक जा उसके कानमे कुछ कहा। दूसरे ही क्षण उसने स्पाककी हथकड़ी-बेडी खोल दी और दोनो सन्ध्याके बढते हुए अन्धकारमे न मालूम कहाँ विलीन हो गए!

पश्चिमी यूक्रेनका वह गाँव—जहाँ स्लीमैंक रहता था— आज भी जिन्दगीसे उसी तरह लहलहा रहा है, जिस तरह कि कल या कुछ वर्ष पहले लहलहाता था। पश्चिमी पोलैण्डके बडे-बडे नगर और प्रान्त मिट्टीमे मिल गए, पर इस गाँवकी कोई एक टहनी भी नही उखाड़ सका। रूसी फौजोंको गाँवमें आए दो हफ्ते हो गये, पर कही आतङ्कका नाम भी नहीं। पोलिश सेनाके कुछ लोगोंके ही यदा-कदा गाँवमे आ जानेसे लोग भय-भीत होकर घरोमे घुस जाते थे। बच्चे तो उस रोज सारा दिन घरसे बाहर निकलनेका नाम तक नहीं लेते थे। पर आज तो कुछ मामला ही और है। रूसी सैनिक बच्चोंको गोदमे लिए या उँगली पकड़े हुए उन्हे घुमा रहे हैं। सब गाँववालोंसे इस तरह हँसी मजाक कर रहे हैं, जैसे उनमें और ग्रामीणों में वर्षों पुराना परिचय हो।

स्लीमैंक अपने मकानके सामने अपने परिवारके साथ बैठा हुआ कॉफी पी रहा था कि अचानक किसीने पीछेसे आ कर उसका कन्धा पकड़-कर हिलाया। उसने मुडकर जो देखा तो सामने स्पाक खड़ा मुस्करा रहा

था। उछल कर वह उसके गलेसे लिपट गया और हर्षातिरेकसे बहनेवाले अपने आँसुओंको पोछते हुए बोला—"अरे स्माक, तुम यहाँ कैसे ? मैं तो समझ रहा था कि तुम शायद जिन्दा ही न रहे होगे ?"

"हाँ, अगर तुम मेरी हथकडी-वेडी न खोलते तो शायद मेरी लाश भी आज जर्मन सैनिकोंकी एड़ियोंके तले रूँदती होती।" कह कर स्माक हँस पड़ा। पास पडे हुए लकड़ीके एक चौकोर टुकडेपर बैठते हुए वह बोला—"तुम तो मजेमे हो न स्लीमैंक ?"

"खूब, खूब" कहते हुए स्लीमैंकने कॉफीका एक गिलास स्माककी ओर बढाते हुए कहा —"लो, पिओ। अब तो हमारा बड़ा खुशहाल है। जानते हो, अब मैं ४॥ एकड़ जमीन और गॉवका मालिक हो गया हूँ—मालिक।"

"हाँ, सुना है, स्लीमैंक।"

"लेकिन भैया, एक बात तो बताओ, बिना जमीदारके काम कैसे चलेगा ? कलको किसीने मेरा खेत दबा लिया या और कोई झगड़ा हुआ, तब ?"

"हमी सब आपसमे फैसला करेंगे। तुम अपने घरकी व्यवस्था भी तो करते ही हो, उसमे क्यो किसी मैनेजरकी जरूरत नहीं होती ? जिस तरह अपने परिश्रमका फायदा उठानेके तुम ही एकमात्र अधिकारी हो, उसी तरह दूसरे लोग भी हैं। फिर कौन किसीसे लड़ेगा ? जिस नए समाजका हमारी ऑखोके सामने निर्माण हो रहा है, उसका आधार-स्तभ होगा पारस्परिक प्रेम और विश्वास। लड़ाई-झगडे तो सब शोषण और शासनकी भावनासे पैदा होते हैं।"

"लेकिन कभी अगर मेरा गॉव फिर पोलैण्ड को मिले, तो जमीदार क्या यह जमीन मुझसे छीन नही लेगा ?"

"पर जमींदार होता कौन है जमीन देने या छीननेवाला ? तुम

जोतते हो, तो जमीन तुम्हारी। कलको उसे और कोई जोतेगा, तो बस उसकी हो जायगी। जमीदार जैसी किसी चिड़ियाका तो यहाँ नाम ही नहीं। अब उसके होनेकी बात ख़्वाब भर रहेगी।"

"और जो पिछला लगान बक़ाया है वह किश्तोंमे देना होगा या फिर जमीन गिरवीं रखनी होगी।"

"किसी भी तरह नही। अब बकाया-वक़ाया कुछ नही रहा, तुम जितना पैदा करोगे, कानून और रक्षाके लिए थोड़ा-सा सरकारको देकर बाकी सब तुम्हारे ही पास रहेगा।"

"लेकिन स्पाक यह तो बताओ कि जमीन और गाय हम लोगों को क्यों दी गयी हैं?"

"इसीलिए कि तुम्हे यह अक्ल आये कि उत्पादनके साधनोंपर किसी व्यक्ति या समाज विशेषका अधिकार नही होता—न होना चाहिये। जो गायसे दूध निकाले, उसे पीनेका अधिकार है। जो जमीनसे अन्न पैदा करता है, उसे उसके प्रयोग करनेका अधिकार है।"

"यह नयी सरकार भी अब हमारे साथ जमीदारोंकी तरह सख्ती तो नही करेगी?"

"सख्तीका तो कोई सवाल ही नही। यह कोई जमींदारो या पूँजी-पतियोंकी सरकार तो है नही कि अपने स्वार्थके लिए तुम्हारा गला घोटे। अरे, हम तुम सभी तो सरकार हैं, फिर सख्ती-ज्यादतीका सवाल ही क्या?"

"हाँ एक बात तो पूछना भूल ही गया, स्पाक! तुम्हे भी जमीन ही मिली है न?"

"नही, मुझे तो कुछ भी नहीं मिला है। मैं कोई किसान तो था नही।"

"तब भैया तुम अपना गुजर बसर कैसे करोगे?"

मैं हट्टा-कट्टा जवान आदमी हूँ, मजदूरी करके पेट भरूँगा।"

"लेकिन मजदूरीका मिलना हमेशा निश्चित तो नही होता स्पाक।"

"इसकी अब मुझे चिन्ता नही करनी होगी। मुझे रोटी और कपड़ा चाहिये, वह मुझे मिलेगा। मुझसे क्या काम लिया जाय, यह सरकार तय करेगी।"

"अच्छा खाना, अच्छा पहनना और अच्छा काम करना—अगर यह तीन बातें हो सकें तब तो दुनिया-भरमे सुख, समृद्धि और शांति हो जाय।"

"अब ऐसा होनेमे बहुत समय नही लगेगा। अच्छा अब चलता हूँ, फिर आऊँगा।"

सबको धन्यवाद देकर स्पाक विदा हुआ।

विद्रोह

जनरल होज़ा-जैसे फौजी - ज्ञानके माहिरपर कोई भी देश गर्व कर सकता था। चेकोस्लोवाकियाको भी उनपर गर्व था, पर आततायी नात्सियोंके आक्रमणके कारण उसका वह गर्व अधिक दिन कायम न रह सका। जिस समय नात्सी-यमदूत प्रागकी छातीपर आकर मूँग दलने लगे थे, सैनिकों, नागरिकों तथा स्त्रियोंको अपमानित और जलील करने लगे थे, उस समय भी जनरल होजा पागलोंकी तरह इधर-उधर दौड-धूपकर उनका मुक़ाबला करनेकेलिए लोगोंको समझारहे थे। पर तब क्या होसकता था? सारा चेकोस्लोवाकिया नात्सियोंके फौलादी पंजेमें पूरी तरह जकडा जा चुका था।

जिसे अपने बाहु-बल और बुद्धिपर विश्वास हो, जिसे अपने देशवासियोंकी आजादी और स्वाभिमानकेलिए मर मिटनेकी भावनाका अनुभव हो, उसकेलिए बिना लडे ही विदेशी नर-पिशाचोंकी गुलामी स्वीकार करने को मजबूर किया जाना कितना दुःखदायी और असह्य है, यह शब्दोंमे ठीक-ठीक व्यक्त नही किया जा सकता। पर जनरल होजाके भाग्यमे शायद आत्म-ताप और ग्लानिका यह गुलाम-जीवन भी नही बदा था। उन्हे नात्सियों के खिलाफ चेक जनता और रही-सही सेनाको उकसानेके अभियोगमें गिरफ्तार कर लिया गया था। पहले सुना गया कि उन्हे गोलीसे उडा दिया जायगा, फिर सुननेमें आया कि उनपर 'राजद्रोह' का मुकदमा चलेगा। किन्तु महीनों बीत जानेपर भी हुआ कुछ भी नही। आज वे लाञ्छित, अपमानित और प्रताडित होकर प्रागके एक नजरबन्द कैम्प में—जो कि पहले बच्चोंका एक स्कूल था और जिसके वार्षिकोत्सवोंमें वे एक उच्च-राज्याधिकारीकी हैसियत से कई बार शामिल हो चुके थे—पडे सड़ रहे थे। पहले वे बूढे नहीं मालूम पडते थे, पर यहाँकी दारुण यंत्रणाओंने जैसे बरबस कई वर्ष बाद आनेवाली

जरा-जीर्ण अवस्थाको अभी ही बुला दिया हो। वे इसके लिए तैयार रहे हों या नही, पर आज उन्हे मैले और फटे-पुराने कपड़ोमे व्याकुल देखकर ऐसा लगता था कि वे किसी दूसरे देशसे लाये गये हों, क्योकि इतनी बुरी दशामे तो शायद चेकोस्लोवाकियाके भिखारी भी कभी नहीं देखे गए। आज वे उस बूढे सिंहकी तरह थे, जिसके दॉत गिर गए हो और पंजोंके नाखून उखाड़ लिये गए हों।

पर इस अपमान और उत्पीड़नमे भी आशाकी एक क्षीण किरण थी, जो उन्हे जिला रही थी—और वह थी चेकोस्लोवाकियाके फिर स्वतन्त्र होनेकी। इसी कारण वे सब कुछ धैर्य-पूर्वक सह रहे थे। उनके इस असाधारण धैर्य और सहनशक्तिसे एक नात्सी सन्तरी बहुत प्रभावित था। वह जब-तब आकर चुपकेसे उन्हे इधर-उधरके समाचार बता जाया करता था। प्रागकी चेक पुलिस और नागरिकोंपर हुए जुल्मोकी कहानी वे इसी सन्तरीके द्वारा सुन चुके थे। तभीसे उनका खून खौल रहा था। शूशनिगके वध और पौलैण्ड पर नात्सियो द्वारा की गई चढ़ाईका समाचार भी उन्हे इसी सतरीसे मालूम हुआ था और तभीसे न मालूम वे मन ही मन क्या ताना-बाना बुनते रहते थे।

(२)

उस दिन सुबहसे ही प्रागके उस नजरबन्द कैम्पमें चहल-पहल नजर आने लगी। सतरी समयसे पहले तैयार होगये और चारो तरफ कानाफूसी चलने लगी। लोहेकी मोटी शलाखोंके जंगलेमे से जनरल होजाने जल्दी-जल्दी आने-जाने वाले नात्सी सैनिकों और अफसरोंको देखा, पर उनकी समझमे कुछ भी न आया। इतना अनुमान वे जरूर लगा सके कि इस चहल-पहलके परिणाम-स्वरूप कोई परिवर्त्तन जरूर होने वाला है।

थोड़ी देर बाद उनका परिचित सैनिक ड्यूटीपर आया। दो-तीन चक्करोंमें थोड़ी-थोड़ी करके उसने सारी की सारी बातें जनरल होजाको बता

दीं। उन सबका आशय यह था कि पूर्वी और पश्चिमी सीमान्तोंपर जर्मन सैनिकोंकी माँग बढ जानेसे चेकोस्लोवाकियाके बहुतसे जर्मन सैनिक वहाँ भेजनेके लिए हटाये जा रहे हैं। जिन चेक नजरबन्दों और कैदियोंकी वजहसे जर्मन सैनिकोंको रुकना पड़ रहा है, उनकी भी कमी की जायगी—उन्हे मुक्त करके नही, बल्कि गोलीका शिकार बनाकर।

अभी जनरल होजा अपने अनिश्चित भविष्यके सम्बन्धमें कुछ सोच भी नही पाये थे कि पाससे हेर स्ट्रोवेख गुजरे। जनरलने दबी हुई आवाजमे कहा—"महोदय, सुना है कि हेर फान कर्ट शूशनिग अब जीवित नहीं है?"

"चुप रहो, बदमाश कहींके"—स्ट्रोवेखने रुकते हुए डपट कर कहा—"तुम्हे कैसे मालूम हुआ? तुम उन्हे कैसे जानते हो?"

"वैसे ही अन्दाजसे कहता हूँ। मेरी समझमें तो यह आपकी बहुत बडी कृपा और उदारता है कि अब तक आपने उन्हे अपने पापका प्रायश्चित्त करनेका इतना मौका दिया। अगर कोई दूसरा देश होता तो शुशनिग जैसे पापीको कभीका गोलीसे उडवा दिया गया होता। ऐसे देश और जाति-द्रोहीको इतने दिन तक बख्शता कौन है?"

स्ट्रोवेखके चेहरेका रग अचानक बदल गया, उसके ललाटमें पडे हुए बल गायब होगये और बिना कुछ बोले वह आगे बढ़ गया। जनरलने मुस्कराहटको होठोंके भीतर ही दबा लिया और सिर खुजलाने लगे। दिन भर उनके दिमागमे यही बात घूमती रही कि स्वदेश-प्रेमका इजहार कर गोलीका शिकार होना अच्छा होगा या ... ?

शामको सूर्यास्तसे पहले स्ट्रोवेख फिर कैम्पमें आया। बड़ी तेजीसे वह कभी इधर और कभी उधर चक्कर लगाने लगा। उसके चेहरेसे साफ जाहिर होरहा था कि आज वह काफी परेशान है। जब वह जनरल होजा की कोठरीके पाससे गुजर रहा था, तो होजाने उसे रोका और कहा—"महोदय, अगर लड़ाई छिडे तो सेवकको न भूलियेगा। हालाँकि मैं अब

बूढा दीखने लगा हूँ, पर इन कायर पोलोंके छक्के छुड़ानेका साहस अब भी इस ठठरीमें है। डैनजिग और कॉरीडॅर हमारे हैं। हम उन्हे थर्ड-राइख में लौटाये बिना दम न लेंगे। अगर लड़ाई छिड़े तो ......"

अभी हेर स्ट्रोवेख जनरल होजाकी कोठरीसे एक-दो कदम ही आगे गया होगा कि अचानक रुक गया। एक मिनट तक वहाँ खडे रहकर उसने कुछ सोचा और फिर जल्दी-जल्दी कदम बढाता हुआ आगे बढ़ गया।

(३)

एक दिन अचानक जनरल होजाको फिर अपनी पुरानी फौजी पोशाकमे देखकर प्राग-निवासी दाँतों-तले अँगुली दबाने लगे! कहाँ तो उनके गोलीसे उड़ाये जानेकी अफवाहे उड रही थीं और कहाँ आज वे फिर अपने पुराने स्थानपर थे। सुना गया कि जर्मन हाईकमाण्डने उन्हे स्लोवाक-गैरीजनका जनरल नियुक्त कर दिया है और बहुत जल्द वे अपनी गैरीजन के साथ लड़नेके लिये पोलैंड जा रहे हैं।

चेक जनताके कानोंमे पहले-पहल जब यह खबर पडी, तो सहसा उसे विश्वास नहीं हुआ कि यह सच है। किसीने कहा कि जर्मन हमे बेवकूफ बनानेके लिए इस तरहकी मनगढन्त बाते फैलाते हैं। किसीने कहा कि और कोई गद्दारी करे तो हम मान सकते हैं, पर जनरल होजा जर्मनों के हाथ अपनी आत्मा नही बेच सकते। कुछ बूढ़ोंने कहा—कौन जाने यह स्वाँग उन्होंने जर्मनोंसे देशको मुक्त करनेके लिये ही भरा हो? कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने कहा कि अपने देशके शत्रुओंसे मिलकर जनरल होजाने न सिर्फ अपने और अपने कुलके नामपर ही बट्टा लगाया है, बल्कि चेकोस्लोवाकियाके नामको भी कलंकित किया है। अपने बुढापेमें खुद धूल डालनेकी उन्हे यह क्या सूझी?

पर उस समय चेक जनताका सारा भ्रम दूर होगया जब कि उसने

जनरल होजाको जर्मन-जनरलकी पोशाकमे और बॉहोंपर स्वस्तिक-चिह्न लगाए एक मोटरमे प्रागसे पोलिश मोर्चेके लिए जाते हुए देखा। उनके अभिवादनमे बहुत कम हाथ उठे, बहुत कम रूमाल हिले, लेकिन बहुत सी भीगी आँखोंने उन्हे निहारा। उनमे हर्ष था या विषाद, उनमे से विक्षोभ की चिनगारियाँ निकल रही थीं या हर्षके आँसू—इसे कितने लोगोंने देखा और समझा होगा ?

स्वय जनरल होजाके मनकी क्या दशा थी, इसे समझनेकी फुर्सत किसे थी, उनकी आँखे क्या देख और बतला रही थीं, उनके चेहरेकी मुस्कराहट कितनी गहरी और वास्तविक थी, इसे कितने लोगोंने देखा होगा ? उनके पास ही हेर स्ट्रोवेख बैठा इधर-उधर नजर डालता जाता था। उसने अपनी आँखोंसे देखा कि चेक जनता जनरल होजाके जर्मनोंसे मिल जानेसे प्रसन्न नहीं है। इससे अधिक जनरल होजाकी असदिग्धताका और क्या प्रमाण होसकता था ?

(४)

जिलना स्टेशनपर जनरल होजाका स्वागत करनेके लिये जो सैनिक और अफसर एकत्र हुए थे, उनमे से इने-गिने जर्मन थे और शेष सब स्लोवाक। स्लोवाक अफसरोंमे से बहुतसे जनरल होजाके परिचित भी थे और बहुतसे उनके अपरिचित-किन्तु विरोधी भी। सब जनरल होजाकी कार्य-कुशलता और अनुभवके कायल थे, पर यह समझ नहीं पारहे थे कि जनरल होजा इतनी जल्दी जर्मनोंके शत्रुसे मित्र कैसे बन गये ?

जनरल होजाको स्लोवाक गैरीजनका चार्ज सम्हलाकर हेर हेरिश अपने बगलेके लिये रवाना होगया। रातके लगभग ग्यारह बजे तक होजा स्लोवाक अफसरों और सैनिकोंसे खानगी बात-चीत करते रहे। फिर एक अफसरसे जेलकी चाबी मॅगाकर उसे देखने गये। उसमे नात्सियोंके विरुद्ध आवाज उठाने वाले प्रतिष्ठित स्लोवाक नागरिकों और फौजी अफसरोंको

जेलकी यन्त्रणाओंसे बेहाल देखकर उनकी आँखे भर आईं। न मालूम कितनोंसे वे गले मिले और उनसे क्या-क्या कहा।

थोड़ी ही देरमें जेलका मुख्य द्वार बन्द कर दिया गया। सब कैदी बाहर निकलकर अहातेमें आगए। सैनिक और अफसर भी वहाँ जमा हो गए और जनरल होजाने कहना शुरू किया:—

"भाइयों, आप और हम कल तक एक थे, पर आज नात्सी नर-पिशाचोंके षडयन्त्रके कारण हम अलग-अलग दो गुलामोंके झुण्ड भर हैं। चेक-सरकारके खिलाफ बग़ावतका झण्डा खड़ाकर आप लोगोंने आजादी के लिए आन्दोलन किया। पर हमने आपको गुलाम कब बनाया था? दो भाइयोंका साथ रहना क्या एक-दूसरेकी अधीनतामें रहना है? पर तब आप लोगोंकी बुद्धि खो गई थी। जर्मनोंने आपको कहनेके लिए स्वतन्त्र तो कर दिया, पर आप ही सोचिए कि वास्तवमें यह स्वतन्त्रता है या गुलामी? क्या मुझे, हम लोगोंकी इस घातक ग़लतीके बाद, अब फिर मिलकर, अपने देशको आजाद करनेके लिए प्रयत्न करनेको आप लोगोंसे नहीं कहना चाहिए? क्या मुझे बतलाना होगा कि आपका कर्तव्य क्या है?

"मैं जेलसे जर्मनोंको झाँसा देकर निकला हूँ, पर क्या आप लोगों को इस बातपर कभी विश्वास होगा कि मैं उन जर्मनोंकी तरफसे लडूँगा, जिन्होंने कि आज हमें गुलाम और जलील कर रक्खा है? क्या हम अपने उन पोल-पड़ोसियोंसे लड़ेंगे जो अपनी और हमारी आजादीके दुश्मनोंसे लड़ रहे हैं? चेक और स्लोवाक दो नहीं एक राष्ट्र हैं। हमें अपने मुल्ककी आजादीकेलिए फिर एक बार कोशिश करनी चाहिए। मैं जानना चाहता हूँ कि आप तब हमारी स्वतन्त्रताके शत्रु जर्मनोंके विरुद्ध लड़ेंगे या उन पोलोंके खिलाफ जो कि अपनी आजादीकी रक्षाके लिए लड़ रहे हैं।"

उपस्थित लोगोंने एक स्वरसे कहा—"हम सब जर्मनोंके खिलाफ लड़ेंगे।"

"तो इसे मैं आप लोगोंकी प्रतिज्ञा समझूँ ?" जनरल होजाने हर्ष-गद्गद् स्वरमे पूछा।

"हाँ, हाँ, पक्की प्रतिज्ञा।"

"आज मेरे जीवनका पहला स्वप्न पूरा हुआ।" कहते हुए जनरल होजा हर्षातिरेकसे पागल हो अपने स्थानपर बैठ गये।

(५)

अभी पौ नही फटी थी। स्लोवाक-सेनाके हेडक्वार्टरका मुख्य द्वार खुला था। पर वहाँ आज कोई सन्तरी नही था। हेर हेरिशकी मोटर भीतर आकर रुकी। फाटक खोलकर अभी उन्होंने एक ही पाँव बाहर रखा था कि किसी तरफ बन्दूक चलनेकी-सी आवाज हुई और वे वहीं गिरकर ढेर होगए।

× × ×

स्लोवाक गेरीजनने पोलिश-मोर्चे पर जानेसे इन्कार कर दिया है, यह समाचार सारे शहरमे बिजलीकी तरह फैल गया। दोपहर होते-होते स्लोवाक सेनाके हेडक्वार्टरके सामने जर्मनोंकी लाशोंका ढेर लग गया। जिन जर्मनोंको जानसे नहीं मारा गया, उनको स्लोवाक लोगोंने वैसे ही मार-मार कर अधमरा कर दिया। जनरल होजा कहाँ हैं, कहाँ नहीं, इसका किसीको पता नहीं।

वेगनर

अभी पौ नही फटी थी। बर्लिन स्टेशनपर सैनिकोंसे भरी एक गाडी कही जानेके लिये तैयार खड़ी थी। वर्दी पहिने कई सैनिक और सैनिक-अफसर प्लेटफार्मपर बड़ी फुर्तीसे इधरसे उधर घूम रहे थे। कहीं कुछ लोग खडे धीमी आवाजमें बातचीत कर रहे थे। लाश पर मँडराने वाले गिद्धों की भाँति गेस्टपो (खुफिया-विभाग) के दूत सादी पोशाकमे अर्थभरी दृष्टि से इधर-उधर ताकते हुए टहल रहे थे। इनके अलावा प्लेटफार्मपर कोई भी नागरिक नजर नही आ रहा था।

सहसा भीड़को चीरती हुई एक युवती—जिसकी आँखोंमें आँसू छलछला रहे थे, केश बिखर कर हवामे इधर-उधर उड़ रहे थे और चेहरे पर हवाइयाँ उडरही थीं—"वेगनर", "वेगनर" चिल्लाती तेजीसे क़दम बढाती हुई गाड़ीके पास आई। कभी वह रुक कर ध्यानसे एक डिब्बेमे बैठे हुए सैनिकोंके चेहरे देखती और कभी "वेगनर", "वेगनर" चिल्लाती हुई अर्द्ध-पागलकी तरह फिर आगे दौड़ने लगती। इसी समय एक डिब्बे का दरवाजा खुला और वर्दीसे लैस एक सुन्दर-सुडौल नवयुवक प्लेटफार्म पर उतर आया।

"एरीका, प्यारी एरीका!"—कहते हुए वह तेजीसे युवतीकी ओर बढ़ा। एरीकाने दौड़कर उसके सीनेमे अपना मुँह छिपा लिया और दोनो हाथ उसके गलेमे डालकर सिसकते हुए कहा—"प्यारे वेगनर, तुम इस तरह मुझसे विना मिले, मुझे अकेली छोड़कर चले जाओगे, इसकी मैंने कभी स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की थी।" और वह फफक-फफक कर रोने लगी।

वेगनरकी भी आँखे भर आई और लड़खड़ाती हुई जबानसे उसने

कहा—"लेकिन एरीका, जरा मेरी स्थिति भी तो समझनेकी कोशिश करो। सच मानो, मैंने ऐसा जान-बूझ कर कदापि नहीं किया। कल रात तक मुझे इस आकस्मिक यात्राकी कोई खबर तक नहीं थी। रातको तीन बजे मुझे सूचना दी गई कि साढ़े चार बजे तक फौजी हल्केके केन्द्रमे हाजिर होजाओ। वहाँ पहुँचनेपर हमें यहाँ लाकर इस गाड़ीमे सवार करा दिया गया। पता नहीं, अब हमें कहाँ जाना होगा।"

"पता नहीं कहाँ जाना होगा !"—एरीकाने अपनी आँखें वेगनर की आखोंमे गड़ाते हुए पूछा—"यह तुम क्या कहरहे हो, वेगनर ?"

"ठीक ही कह रहा हूँ, एरीका !"—वेगनरने अपने रूमालसे उस के आँसू पोछते हुए कहा और फिर धीमी-सी आवाजमें उसके कानमे कहा—"शायद हमें पूर्वमें रूसपर हमला करनेके लिए भेजा जा रहा है।"

"पूर्वमे, रूसपर हमला करनेके लिये ?"—एरीकाने आश्चर्यसे आँखे फाडकर पूछा—"यह भला क्यों ? रूसने तो हमारा कुछ भी नहीं बिगाडा।"

"चुप, चुप, धीरे बोलो,"—वेगनरने एरीकाके मुँहपर अँगुली रखते हुए कहा—"देखती नहीं, ये चारों ओर गेस्टपोके शैतान जो चक्कर लगा रहे हैं। इनके कानमे अगर तुम्हारी बातकी भनक पड़ गई, तो बस हम-तुम दोनो की खैर नहीं है !"

इस बार एरीका कुछ न बोली। पर वेगनरके रूसकी ओर जाने की बात सुनकर उसके मस्तिष्कमे तरह-तरहकी आशंकाएँ पैदा होने लगी। उसकी आँखोंमे फिर आँसू उमड आए और वेगनरको अपने गाढ आलिंगनमे बाँधकर वह फिर सिसकने लगी। वेगनरने उसे और भी कसकर अपनी भुजाओंमे बाँध लिया।

कुछ क्षण दोनों बिना कुछ बोले स्थिर खडे रहे। फिर वेगनरने भर्राई हुई आवाजमें कहा—"प्यारी एरीका, मुझे भूल न जाना। मैं जितनी जल्दी हो सकेगा, यहाँ लौटनेकी कोशिश करूँगा। आगे भाग्यकी बात है।

मेरा विश्वास है, इतनी जल्दी मैं मरूँगा नहीं। तुम्हारा प्रेम और तुम्हारी याद मुझे एक बार जरूर तुम तक खींच लायगी।"

एरीकाने कहा—"मैं तुम्हे पत्र लिखूँगी। तुम अपने समाचार बराबर देते रहना। जैसे भी हो, बड़े दिनों तक तो हमे अवश्य ही विवाह कर लेना होगा।"

"विवाह!"—वेगनरके चेहरेपर एक व्यंग्यात्मक क्रूर मुस्कराहट चमक गई और ठण्डी साँस लेकर उसने कहा—"जीवनके वे मीठे सपने, वे मधुर अरमान और यह लड़ाई, यह रक्तपात, यह नरसहार! हा ··हा ··हा!!"

भय-विह्वल हरिणीकी भाँति कातर दृष्टिसे एरीकाने वेगनरके चेहरे की ओर देखा और किंचित् घबराहटके साथ बोली—"यह तुम क्या कह रहे हो, वेगनर? अभी तो तुम लौटनेकी बात कह रहे थे और अब यह निराशा और डर..."

"डर!"—अपने ओठोंको बल देकर एक फीकी मुस्कराहटके साथ एरीकाकी बात काटते हुए वेगनरने कहा—"मौतके मुँहमे स्वय छलाँग लगाने वालेको डर किसका होगा, एरीका? उसे तो तुम्हारी सान्त्वनाके लिए यहीं छोड़े जा रहा हूँ।"

कँपकँपीके साथ एरीकाके होठोंपर एक फीकी-सी मुस्कराहट दौड़ गई। वेगनरके सिरपर रखी टोपी ठीक करते हुए उसने कहा—"ईश्वर तुम्हे सकुशल वापस ले आयगा।"

इसी समय गाड़ीके छूटनेकी सीटी हुई। वेगनरने एरीकाको आलिंगन कर चूमा और बोला—"धीरज रखना एरीका, दिलको मजबूत बनाना, शीघ्र ही हम फिर मिलेंगे। कभी-कभी मेरी माँ की खबर भी लेती रहना।" यह कहकर वेगनर डिब्बेमें जा चढा और एरीका सजल आँखोंसे उसे देखती रही।

शीघ्र ही गाडी चल पड़ी और दोनोंने हाथ हिलाकर एक-दूसरेसे विदा ली।

(२)

अभी वेगनरने अपना मुँह खिड़कीसे भीतर करके अपनी जगहकी तरफ पाँव बढाया ही था कि पास खडे एक सैनिकने, जिसके एक हाथमे रोटी (ब्लेक-ब्रेड) का एक बड़ा-सा टुकडा और दूसरेमे कॉफीका बर्त्तन था, बाईं आँख मारकर एक व्यंग-पूर्ण मुस्कराहटके साथ पूछा—"तुम बड़े खुश-क़िस्मत मालूम होते हो दोस्त ! इस खबसूरत छोकरीको कहाँसे फँसाया ? उसे देखकर तो बस मेरी भी तबियत ..."

उसका वाक्य अभी पूरा भी नहीं हो पाया था कि वेगनरने लाल-लाल आँखोसे मुड़कर एक बार उसकी ओर देखा और दूसरे ही क्षण पूरे जोरके साथ एक घूँसा उसकी नाकपर जमा दिया। कराह कर सैनिक जहाँ खड़ा था, वहीं ढेर होगया और उसकी नाकसे खून बहने लगा। इसी समय आस पास बैठे हुए अन्य सैनिकोकी नजर वेगनर और उसके घूँसेसे घायल हुए सैनिककी तरफ गई और मधु-मक्खियोंकी भाँति वे उस पर टूट पडे। एकने घायल सैनिकको उठाकर सीटपर लेटाया और उसके मुँह पर पानीके छींटे देने शुरू किए।

बेचारे अकेले वेगनरपर इस समय न केवल लातो और घूँसों की ही, बल्कि गालियों और व्यग्य-बाणोंकी भी वर्षा हो रही थी। एकने कहा—"बड़ा मनहूस आदमी है, मजाकसे ही इतना बिगड उठा!" दूसरेने कहा—"यह कोई आदमी है, हैवान है, हैवान !" तीसरा अपनी कमीज़ की आस्तीनें ऊपर चढाता हुआ बोला—"हैवान ही नहीं, हैवानका बाप भी क्यो न हो; अभी एक ही घूँसेमें इसकी सारी शेखी निकाले देता हूँ।" और सारे सैनिक ज़ोरसे ठहाका मारकर हँस पडे। उनके चेहरे पाशविक क्रूरता और प्रतिशोधकी भावनासे लाल हो रहे थे।

इसी समय एक कोनेमे बैठा सैनिक उठा और "हटो, हटो" करता हुआ आगे बढ़ा। पिटते हुए वेगनरका हाथ पकड़ कर उसे एक ओर खीचते हुए उसने गरज कर पीटने वालोको सम्बोधन करके कहा—"हान्ज, फ्राइड्रिख, एर्न्स्ट, ठहरो, पीछे हटो। यह क्या मूर्खता कर रहे हो? शर्म नही आती तुम्हे अपने ही एक साथीके साथ यह व्यवहार करते हुए? तुम सब क्या......"

बीच ही मे उसका वाक्य काटते हुए एक पीटने वाले सैनिकने गरज कर कहा—"और उसने विकहेमके साथ जो व्यवहार किया है, सो?"

"उसके लिए स्वय वेगनरको दुःख होगा। और फिर उसकी मानसिक स्थितिको देखकर क्या तुम उसे इस भूलके लिए क्षमा नही कर दोगे?" और बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये उस सैनिकने कहा—"अच्छा, अब सब अपनी-अपनी जगह बैठो।"

बड़बड़ाते हुए सब सैनिक अपनी-अपनी जगह लौट गये। वेगनर की बॉह पकड़ कर वह सैनिक उसे अपनी जगह पर लेगया और अपने पास बैठाते हुए बड़े सान्त्वनापूर्ण स्वरमे पूछा—"तुम्हारा नाम वेगनर ही है न?"

"हॉ"—वेगनरने किंचित् मुस्कराहटके साथ कहा।

"तुम म्यूनिखके विल्हेम अस्पतालमे ही काम करते थे न?"

"नही, मैं तो बर्लिन-विश्व-विद्यालयमे पढ़ता था।"

"ओह, तभी छात्र-सुलभ-भावसे तुमने विकहेमकी नाकपर घूँसा जमा दिया! पर भाई, विश्व विद्यालयका वातावरण यहॉ नहीं है।" और फिर जरा धीमी आवाजमें बोला—"कहॉ तुम विश्व-विद्यालयके सुशिक्षित और कहॉ ये मनहूस, अशिक्षित, उजड्ड लोग! इनके मुँह न लगना ही श्रेयस्कर है, समझे! फिर कभी ऐसी भूल न कर बैठना।"

वेगनरको महसूस हुआ कि वास्तवमे उसने बिना सोचे-विचारे हाथ

उठाकर गलती की थी। इन लोगोंके मुँह न लगना ही अच्छा है। समझाने वाले सैनिककी ओर कृतज्ञता भरी दृष्टिसे देखते हुए उसने कहा—"इस नेक सलाह और चेतावनीके लिए मैं तुम्हारा बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ, दोस्त! पर हाँ, बातोंमें मैं तो तुम्हारा नाम तक पूछना भूल गया। अपना नाम क्या नही बतलाओगे?"

"मेरा नाम विल्हेम एण्डरसन है। मैं भी तुम्हारी ही तरह एक पढा-लिखा अभागा हूँ, जो बदकिस्मतीसे रोटीके टुकडोंके लिए, कुत्तोंकी तरह लड़नेवाले इन अर्द्ध-पशुओंके बीच आ फँसा हूँ। अनिवार्य सैनिक सेवाका कानून मुझे अपनी स्त्री, बच्चो, बहिन और माँसे छीनकर इस मृत्यु-पथपर खीच लाया है। यहाँ आकर मेरी आँखे खुली हैं और मैं जान गया हूँ कि किस तरह हमारे मदान्ध शासक अपनी ही गर्वोक्तियोंसे धोखा खाकर और हमारी तथा हमारे देशकी दशा सुधारनेकी दुहाई देकर हमे मौतके मुँहमे धकेल रहे हैं।"

"तब यह लडाई पितृ-भूमि, गरीबों और बेकारोंके हितके लिए कैसे हुई? क्या यही इने-गिने धूर्त्त हमारे भाग्यके निर्णायक हैं?"

"और नही तो कौन? यही राजनीतिक लुगाड़े हमारी हठधर्मी, असहयोग एव असहिष्णुताका नाजायज फायदा उठा रहे हैं और पितृ-भूमिके नामपर उसकी सन्तानका तर्पण कर रहे हैं!"

"लेकिन ..." वेगनरके मुँहसे दूसरा शब्द नहीं निकल सका, कारण विकहेम अपनी सीटपर उठकर बैठ गया था और लाल-लाल आँखोंसे वेगनरकी ओर देखता हुआ बडबडा रहा था—बेहूदा कहींका, सुअरका बच्चा, देख तुझे इसका कैसा मजा चखाता हूँ।"

फ्राइड्रिखने विकहेमका कन्धा पकड कर उसे फिर लिटानेकी चेष्टा करते हुए कहा—"चुप, चुप, विकहेम, ज्यादा गरम होनेकी जरूरत नहीं। देख, अभी भी तेरी नाकसे खून आना रुका नहीं है। अभी आरामसे लेट।

कल तक न मालूम कितनी रूसी छोकरियाँ तुझपर बलाएँ लेगी ! और इस वेगनरको, इस पाजीको हम भुगत लेगे ।"

विकहेमका मुरझाया हुआ चेहरा फिर एकबारगी खिल उठा। ओठोपर जबान फेरते हुए उसने कहा—"फ्राइड्रिख, सचमुच इसके लिए अब मेरा दिल बेचैन होरहा है। बीयर पीते पीते तो अघा गया। चलो, अब जी भरकर वोडका पीयेंगे ।"

"और यूक्रेनकी छोकरी ··कोजाककी सुन्दरियाँ ··" फ्राइड्रिखके मुँहसे सहज ही में निकल गया। दूसरे ही क्षण भावावेशमे आकर दोनो ने कसकर हाथ मिलाया।

वेगनरने घूमकर एक दबी हुई मुस्कानसे एण्डरसनकी ओर देखा। दोनों आँखों ही आँखोंमे मुस्कराए और फिर बिना कुछ कहे खिडकीसें बाहर मुँह निकालकर देखने लगे। गाड़ी धड़धड़ाती हुई उत्तर-पूर्व चली जारही थी।

(३)

रातके साढ़े ग्यारह बज चुके थे। खेमेमे एक छोटी-सी मेजके सहारे बैठा वेगनर मोमबत्तीके प्रकाशमे एक पेंसिलका टुकड़ा लिये सामने पड़े काग़जपर कुछ शब्द लिखता और फिर पेंसिलसे रगड़ कर उन्हे काट देता। फिर कुछ लिखता और फिर पेंसिलसे रगड़ कर उसे काट देता। सहसा उसकी नजर कलाईपर बँधी घडीपर गई और जैसे ओठो ही ओठोंमे उसने कहा—"साढ़े ग्यारह ! बारह बजेसे पहरेकी ड्यूटी शुरू होनेवाली है और सुबह न मालूम कहाँ चल देना पड़े ? अगर इस आध घण्टेमें एरीकाको पत्रोत्तर न लिख सका, तो फिर शायद कल भी न लिख सकूँ··· और कौन कह सकता है, उसे पत्रोत्तर लिखनेका आजके बाद शायद फिर कभी अवसर ही न आये। लेकिन मैं यह सब क्या ·· ·।" वह अचानक

चुप होगया और पेंसिल कागजपर रखकर, खड़ा हो, खेमेमे इधर-उधर टहलने लगा।

उसके दिमागमें एक तूफान-सा उठ रहा था। शान्त-चित्त होकर एरीकाके सम्बन्धसे उठने वाले सब भावोंको लिपिबद्ध करना जैसे सारे समुद्र को चुल्लूमे भर लेनेकी तरह उसे कठिन, बल्कि कहना चाहिए असम्भव—मालूम होरहा था। टहलते-टहलते वह रुक गया, मेजके पास पड़े स्टूल पर आ बैठा और जेबसे एक कागज निकालकर उसे मोमबत्तीके पास करके फिर पढने लगा। न मालूम इससे पहले वह कितनी बार इसे पढ़ चुका था, पर ठीक-ठीक कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। इस बार पत्र समाप्त करने के बाद उसके चेहरेपर एक क्रूर मुस्कराहट झलक गई और दोनों हाथोंकी मुट्ठियाँ बाँधकर, दाँत पीसकर वह बडबडाने लगा—"हरगिज नहीं, स्वप्न मे भी नही, यह एरीकाका पत्र हो ही नहीं सकता। उसके हस्ताक्षर भी असली नहीं हैं। किसीने बडी होशियारीसे उसके हस्ताक्षरोकी नकल की है। और पत्रके भाव और भाषा? तो इस तरह मुझे उल्लू बनाया जारहा है!"

आवेशमे आकर उसने पत्र फाड डाला और फिर खेमेमे टहलने लगा। टहलते-टहलते वह सहसा रुक जाता और फिर टहलने लगता। फिर मोमबत्तीकी ओर स्थिर दृष्टिसे देखते हुए बोला—"पितृ भूमिकेलिए मुझे लड़ने भेजकर एरीका गर्व और गौरवका अनुभव कर रही है? बर्लिनमे शान्ति-कालमे भी जो सुख-सुविधाएँ नही थी, वह आज उनका उपभोग कर रही है? खाने-पीनेकी चीजोकी कोई कमी नही है? वे बडी सस्ती और इफरातसे मिल रही हैं।" और इस वाक्यकी समाप्तिके साथ ही वह ठहाका मार कर हँस पड़ा और फिर पूर्ववत् टहलने लगा।

खेमेके दरवाजेके पास आकर किसीने दबी हुई जबानमे कहा—"वेगनर, वेगनर, जग रहे हो क्या? पहरा बदलनेका समय होगया। तुम तैयार तो हो न?"

"हाँ, अभी एक मिनटमे आया ।" कहकर वेगनर वर्दी पहिनने लगा । उसके दिमागमें एरीकाके पत्रके शब्द और उसके बनावटी हस्ताक्षर चक्कर लगा रहे थे । आज उसका मन उसके वशमे नही था ।

ठीक बारह बजे वेगनर पहरे पर आ डटा । पर आज उसे न तो ठण्डी हवाके झोके ही कँपा रहे थे और न रात्रिका भयानक अन्धकार ही डरा रहा था । आज अन्धेरेमें भी उसे चारों ओर अगणित तारोंके रूपमे एरीकाका चेहरा चमकता हुआ नजर आ रहा था और हवाका प्रत्येक झोंका उसका श्वास-प्रश्वास मालूम हो रहा था । खेमोकी उस कतारके पास टहलते हुए उसे ऐसा मालूम हो रहा था, मानो उसके कानोंके पास एरीकाके ओठ हिल-हिलकर कुछ कह रहे हैं । इस मूक सन्देशको सुनकर न जाने कितनी बार वेगनरका चेहरा खिल उठा और न मालूम कितनी बार उसने कनखियोंसे बाई ओर देखा—मानो एरीका सचमुच उसके पार्श्वमे ही खड़ी है !

दूसरे ही क्षण उसका चेहरा उदासीसे फिर मुरझा गया । यन्त्रकी भाँति क्रमसे उठते हुए उसके पाँव कुछ भारी और शिथिल हो गए, उसके ललाटपर पसीनेकी बूंदे चमक उठी । सिहर कर उसने अन्धेरेमें इधर-उधर आँखे घुमाई—कही कुछ भी नजर नहीं आ रहा था । हवाके दूसरे झोके के साथ फिर जैसे एरीका उसके सामने आ खड़ी हुई और उसका हाथ पकड़ कर खीचते हुए बोली—"वेगनर, प्यारे वेगनर, चलो, कही भाग चले । यह काम तुम्हारे योग्य नही है । फेको इस बन्दूकको और चलो मेरे साथ । दूसरोंको मार कर स्वय क्यों मरोगे ? चलो !"

"नही, ऐसा नही हो सकता"—वेगनर कुछ सहमा और ललाट का पसीना पोंछते हुए, इधर-उधर देखकर, मन ही मन बोला—"एरीका, तुम यहाँ कैसे ? अभी तुम जाओ; ड्यूटी पूरी होते ही मैं सीधा तुम्हारे पास आऊँगा । अभी तुम जाओ । कोई देख लेगा, तो ‥ ‥"

इसी समय सामनेके झुरमुटमे कुछ खड़खड़ाहट हुई, जिसने वेगनर

की तन्द्रा भङ्ग कर दी। एक क्षण रुक कर उसने अपनी बन्दूक उसी ओर तान दी। उसके ओठ काँप रहे थे, पर मुँहसे कोई शब्द नहीं निकल रहा था। दो एक क्षण बाद उसे खयाल आया—यों ही हवासे खड़खड़ाहट हुई होगी, और बन्दूक फिर कन्धेपर रखकर वह टहलने लगा।

टहलते-टहलते उसे खयाल आया—'सचमुच एरीका मेरेलिए घबरा रही होगी; रो रही होगी? तब क्यों न उसके पास लौट जाऊँ? लेकिन इस हालतमे लौट कैसे सकता हूँ?' फिर उसे याद आया अभी कल ही तो कुछ बीमार और घायल सैनिक बर्लिन भेजे गये हैं। बीमार तो वह स्वेच्छासे इतनी जल्दी और आसानीसे नहीं हो सकता, लेकिन घायल··· घायल शायद वह हो सकता है।

कुछ क्षण और टहल लेनेके बाद वह रुका। बन्दूक कन्धेपर से उतार कर एक घुटना ऊँचा करके उसपर लम्बी रक्खी। फिर एक हाथ नालके मुँहपर लगाया और दूसरेसे बन्दूकका घोड़ा दबा दिया। धाँय-से एक आवाज रात्रिकी निस्तब्धता भङ्ग करती हुई क्षितिजमे विलीन होगई और गोली वेगनरकी हथेलीको पार कर न मालूम किधर निकल गई! बन्दूक का धमाका सुनते ही कई सैनिक और सैनिक-अफसर खेमोंसे बाहर निकल आये। कप्तान हरमानने कुछ सैनिकोंको आस पासके झुरमुटोंकी छानबीन के लिए भेज दिया और वेगनरकी ओर बढते हुए पूछा—"वेगनर, क्या है? किधरसे आवाज आई?"

वेगनरने दाहिनी ओर देखकर कहा—"उधर, उस झुरमुटमे से। शायद शत्रुओंने हमे ··।" वेगनरका वाक्य पूरा होनेसे पहले ही, कप्तान हरमान पिस्तौल और टॉर्च लेकर, तीरकी तरह उस ओर बढ गये।

अभी वेगनरने सन्तोषकी एक साँस भी न ली होगी कि कर्नल हाइन रिख अपने खेमेसे निकले और उसकी ओर बढते हुए बोले—"किधर से गोली आई थी वेगनर?"

कर्नल हाइन रिखको अपने सामने पाकर वेगनर कुछ हतप्रभ-सा होगया—कारण,उनकी क्रूरता, तीक्ष्ण बुद्धि और दूरदर्शिताके जर्मन अफसर और सैनिक कायल ही न थे, बल्कि उनसे बुरी तरह डरते भी थे। उन्होंने वेगनरकी बन्दूककी नाल पकडी, वह गरम मालूम हुई। तुरन्त उन्होने टॉर्च जलाकर देखा, उसके मुँहके पाससे हलका-सा धुँआ भी निकल रहा था। दूसरे ही क्षण टॉर्चकी रोशनी वेगनरके चेहरेपर और फिर उसके बाये हाथकी हथेलीपर जिसमेंसे रक्त बह रहा था जाकर ठहर गई। वेगनर सिहर उठा।

पास खडे हुए हान्ज़को सम्बोधित करके वे बोले—"हान्ज, वेगनर को गिरफ्तार करलो और अभी हिरासतमे ले लो। सुबह इसे हमारे सामने पेश करना। और विकहेम, पहरा तुम सँभालो।"

विकहेमने कर्नल हाइन रिखको फौजी सलाम किया और वेगनर के हाथसे बन्दूक लेकर पहरेपर जा डटा। हान्ज वेगनरकी बाँह पकड़ कर उसे एक ओर ले चला।

(४)

लोहेकी दो पतली-पतली पटरियोंपर कोयलेसे भरा ठेला धकेलते हुए, जब वेगनर लडखड़ाता हुआ कारखानेकी भीतरी दालान मे चला जा रहा था, तो न मालूम दालानमें कब ठेलेका ऊपरी किनारा, पास खड़े हुए एक सन्तरीके कोटसे रगड़ता हुआ निकल गया। यद्यपि इससे न सन्तरीको कोई आघात लगा था और न कोई अन्य नुक़सान ही हुआ था, फिर भी वेगनर ने सानुनय कहा—"क्षमा कीजियेगा। मेरी असावधानीसे ही ऐसा हुआ। मुझे आपको सतर्क कर देना चाहिए था।"

वेगनरका वाक्य पूरा हुआ ही था कि सन्तरीके हाथका हण्टर तड़ाक से वेगनरकी पीठपर जा लगा और क्रुद्ध मुद्रासे सन्तरीने कहा—"सतर्क मैं

तुझे किये देता हूँ, गधा, नालायक, पाजी कहींका! अन्धा होकर चलता है!"

क्रोध और आवेशसे वेगनरकी आँखे जल उठीं। उसके जीमें तो आया कि एक ही घूँसेसे मानवके इस छद्म-वेषधारी राक्षसको धराशायी करदे, पर एक तो वह इस समय नजरबन्द था और दूसरे कई दिनोंसे आधा-पेट भूखा रहनेके कारण, उसके शरीरमें वह पहलेका-सा बल भी नहीं रह गया था। अतः अपमानके इस विष-घूँटको पीकर, वह चुपचाप आगे बढ गया।

अभी वह कुछ ही कदम आगे बढा होगा कि किसीके भारी हाथका स्पर्श उसे अपने कन्धेपर महसूस हुआ। बिना रुके ही उसने सिर घुमाकर देखा और सहसा रुककर हर्षोद्रेकसे चिल्ला उठा—"तुम, हेरमान, तुम यहाँ? कब आये? कैसे हो? तुम्हारा यह हाल कैसे?"

"तुम्हारा हाल भी तो कुछ अच्छा नहीं है, वेगनर!"

—भारी आवाजमें हेरमानने कहा और इधर-उधर देखकर एक हाथ से ठेलेको धकेलते हुए बोला—"रुको मत, चलते चलो, नहीं तो किसीको सन्देह हो जायगा।"

सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति देते हुए वेगनर भी ठेलेको धकेलते हुए आगे बढ गया। उसकी आँखोंसे भय स्पष्टतः झाँकरहा था। हेरमानने कहना शुरू किया—"मुझे यहाँ आये कोई बाईस दिन हुए हैं। आज सुबह ही तुम्हारा पता मालूम हुआ। युद्ध-क्षेत्रसे तुम्हारा कुशलक्षेमका पत्र हर पन्द्रहवे दिन मिल जाता था, इसलिये हम लोग तो समझ रहे थे कि तुम वहीं होगे।"

"मेरा कुशल-क्षेमका पत्र? हर पन्द्रहवे दिन? तुम क्या कह रहे हो, हेरमान?" वेगनरने आश्चर्यसे आँखें फाडकर पूछा।

"हाँ, हाँ, तुम्हारा पत्र! तुम्हे आश्चर्य क्यों हो रहा है? भूल गए क्या?"

"नहीं। अच्छा, मेरा आखिरी पत्र तुम्हें कब मिला था ?"

"यही कोई पचीस-छब्बीस दिन पहले।"

"हूँ।"

"क्या मतलब ?"

"इसका मतलब पूछकर क्या करोगे, हेरमान ?"

"आखिर मालूम भी तो हो।"

"तो, सुनो हेरमान! पिछले तीन महीनोसे मैं यहाँके नजरबन्द-कैम्प मे हूँ और उससे कोई बीस दिन पहले तक मैंने एरीकाको कोई पत्र नहीं लिखा था।"

"यह तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हारी और एर्न्स्टकी चिट्ठी साथ ही साथ आया करती थी।"

"एर्न्स्टकी ? हाँ हाँ...हाँ...हाँ ! बेचारा एर्न्स्ट !"

"यह तुम हँस क्यों रहे हो ? मैंने खुद अपनी आँखोंसे एर्न्स्टकी माँ के पास उसकी चिट्ठियाँ देखी हैं। उसकी आखिरी चिट्ठी भी, जो मेरे सामने आई थी, कोई बीस-बाईस दिन पहले ही आई होगी।"

"सुनो हेरमान, एर्न्स्टको मारे गए आज चार महीने होते हैं। गहरी चोटोंसे तडप-तड़प कर मेरी आँखोके सामने वह सदाके लिए सो गया।"

एक कँपकँपी हेरमानके स्वस्थ और सबल शरीरको झकझोर गई। हक्का-बक्का होकर उसने वेगनरकी ओर देखा और लड़खड़ाती आवाज मे पूछा—"यह क्या पहेली है, वेगनर ?"

"पहेली-वहेली तो कुछ नहीं, हमारे परिचित-परिजनोंको धोखा देने की अधिकारियोंकी एक चाल-मात्र है। मेरे पास भी एरीकाके ऐसे ही फर्जी पत्र पहुँचे थे, पर मैं किसी तरह उनकी असलियत भाँप गया और उनमे से एकका भी उत्तर नहीं दिया।"

सहसा हेरमान रुक गया, और उसकी आँखोंमें घृणा और क्षोभकी लपटें जल उठीं। उसकी बाँह पकड़ कर आगे बढ़ाते हुए वेगनरने कहा—"चलो, क्रोध करनेका यह समय नहीं है। पिंजरेमें बन्द शेरके गुर्राने-गरजने का मतलब ही क्या? अच्छा यह बतलाओ, एरीका कैसे है? मेरी माँका क्या हाल-चाल है? तुम्हारी पत्नी तो ठीक है न?"

बिना कुछ उत्तर दिये हेरमान भारी कदम उठा-उठाकर चलने लगा। उसकी आँखें भर आईं। चेहरा कुम्हला-सा गया। वेगनरने एक प्रश्न-भरी दृष्टि उसपर डाली और फिर रुककर उसका कन्धा पकडकर झक-झोरते हुए पूछा—"तुम चुप क्यों हो? बोलते क्यों नहीं? एरीका तो मजे में है न?"

इस समय ठेला भट्टीके द्वारपर आ लगा था। उसे वहीं छोड कर वेगनर और हेरमान एक ओर—जिधर कुछ अँधेरा-सा था—हटकर खड़े हो गए। वेगनर बराबर उत्सुकता-भरी दृष्टिसे हेरमानकी ओर देख रहा था। हेरमानके ओठ काँप रहे थे और आँखोंसे आँसू बहने लगे थे। उसके मुँह से जैसे कोई शब्द निकल ही नहीं रहा था। वेगनरसे अधिक न सहा गया। दोनों बाँहोंसे पकड कर हेरमानको झकझोरते हुए उसने चिल्ला कर पूछा—"हेरमान, मर गया क्या, जो तेरी जबान नहीं खुलती? बताता क्यों नहीं, एरीका कैसे है? वह जीवित भी है या नहीं?"

"वह जीवित है वेगनर!"—सधी हुई-सी आवाज़में हेरमानने कहा—"पर तुम कितने क्रूर और निर्दय हो, जो एक भाईके मुँहसे ही उसकी बहिन की कुकीर्त्ति-कथा सुननेको पागल हो रहे हो।"

"हेरमान, क्या हुआ एरीकाको? जल्दी बताओ।" वेगनर आवेश में चीख़ उठा।

"हाँ, कहता तो हूँ; जरा जी कड़ा करके सुनना। तुम्हारे चले आने के बाद अनिवार्य युद्ध-सेवा कानूनके कारण एरीकाको नर्स होना पड़ा था।

अस्पतालके कुछ डाक्टरोंकी कुदृष्टि उसपर पड़ी और वे उसे तग करने लगे। एक रात एक डाक्टरने उसके साथ बलात्कार भी किया, जिसकी शिकायत करनेपर एरीकाको चेतावनी मिली कि 'भविष्यमे इस तरहकी शिकायतें करने पर उसे दण्ड दिया जायगा। सरकारी अफसरोंका मनोरजन करना उसके कार्यका ही एक अंग है।' इसके बाद...एरीका अस्पतालमें एक तरहसे बदिनी बनाकर रखी गई और उसे वेश्यासे भी बुरा जीवन बितानेपर मजबूर किया गया। और..."

सहसा हेरमान चुप हो गया। वेगनरने रुँधे हुए गलेसे पूछा—"और फिर क्या हुआ ?"

"एक दिन हम लोगोंने सुना कि एरीकाके गर्भ रह गया है। वह उसने किसी तरह गिरवा दिया। इस राष्ट्रीय क्षतिके जुर्ममे उसे दडित किया गया। मुझे उसका गर्भ गिरवानेमे सहायक होनेके जुर्ममे यहाँ भेजा गया है।"

"हूँ।" वेगनरकी आँखे झुक गईं और उनसे टप्-टप् आँसू गिरने लगे।

इसी समय किसीने टार्चसे उनके मुँहपर रोशनी डाली और दूसरे ही क्षण दो कोडे साँपकी तरह उनसे आ उलझे। सन्तरियोंने गरज कर कहा—"कामचोर कहींके, यहाँ आकर छिपे हैं।" और घसीटते हुए उन दोनोंको पकडकर ले चले। वेगनरकी आँखोंसे अब भी आँसू बह रहे थे।

(५)

"हेरमान, मूर्खता मत करो। मुँहसे केवल दो शब्द कहनेमें तुम्हारा बिगड़ता ही क्या है ? क्यों व्यर्थ जिद करके अपनी जान गँवाते हो ?"

"नही, नहीं, नहीं। एक बार कह जो दिया एरीका, मुझसे यह सब नही होगा। मैं माफी क्यो माँगूँ ? मेरा कसूर क्या है ?"

"यही तो मैं भी कहती हूँ कि तुम्हारा कोई कसूर नहीं। फिर यहाँ सड़नेसे लाभ ही क्या ? इसीलिए तो मैं कहती हूँ कि माफी माँग कर घर चलो। तुम्हारे बिना माँका बचना सम्भव नहीं।"

"माँके प्राणोंका मोह मुझे अन्याय और अनीतिके सामने झुका नहीं सकेगा, एरीका ! ऐसा करके क्या मैं उनकी कोख और दूध नहीं लजाऊँगा ?"

"तुम यह क्या कह रहे हो हेरमान ?"

"जो कह रहा हूँ, वह क्या तुम सचमुच नहीं समझ रहीं, एरीका ? तब तो मुझे खेद है, तुम्हारा समय मैंने व्यर्थ ही नष्ट किया।"

"नहीं, नहीं, हेरमान,"—एरीका रो पड़ी है—"मेरे साथ इतना कठोर व्यवहार न करो। मैं इतनी पतिता और मूर्खा तो नहीं हूँ। हाँ, मेरा अपराध यह जरूर है कि मैं एक स्त्री हूँ, जिसका दूसरा नाम है दुर्बलता, और तुम पुरुष हो, जिसे परुष होते देर नहीं लगती।"

एक क्षण हेरमान चुप रहा। फिर भरी हुई आवाजमें बोला—"एरीका, अब तुम जाओ। माँसे कहना कि हेरमानने तुम्हे खोकर भी तुम्हारी अमूल्य थातीकी रक्षा की है—अन्याय और अनीतिके आगे उसने अपना सिर नहीं झुकाया। उनसे यह भी कह देना कि अब मुझसे मिलने की आशा छोड़ दे। यमलोकसे भी भला कोई जीवित लौटा है ? अच्छा, अब तुम जाओ।"

आँखोंमें आँसू भरे, हेरमानके चिन्तासे मुरझाये हुए चेहरेकी ओर कातर भावसे देखती हुई एरीका उठ खड़ी हुई। हेरमान बड़ी मुश्किलसे अपने आँसुओंको रोक पा रहा था। उसके सीनेपर जैसे आज सैकड़ों शिलाएँ रख दी गई हो। अभी उसने द्वारकी ओर कदम बढाया ही था कि उसका एक साथी नजरबन्द दौड़ता हुआ आया और हाँफते-हाँफते बोला—"हेरमान, हेरमान, प्यारे दोस्त, गजब होगया ! उफ् !"

हेरमानने अपनी सजल आँखे आगन्तुककी आँखोंमे गडाते हुए पूछा—"क्या हुआ काएट, कुछ कहोगे भी ?"

"वह अपना एक साथी पागल होगया था न······" हाँफते हुए काएटने कहा और सहसा उसका गला रुँध गया।

दाँत पीस कर हेरमानने "कहा—हाँ, होगया था, फिर क्या ? बात क्या है, साफ-साफ कहो न !"

"न मालूम कैसे आज वह सहसा फिर यहाँ आ पहुँचा ·····"

काएटकी बात को बीचमे ही काटते हुए हेरमानने लापरवाहीसे कहा—"आ गया होगा, इसमें इतने आश्चर्यकी क्या बात है ?"

"सिर्फ आ ही नही गया भाई !"-काएटने एक ठएडी साँस लेकर कहा—"अगर आ ही गया होता, तब तो कोई बुराई नहीं थी।"

"तब क्या हुआ, कहते क्यों नही ?" हेरमानने ज़रा कुण्ठित होकर कहा।

"अरे भाई, वह आज सहसा न जाने कैसे यहाँ आ पहुँचा और कारखानेकी भट्टीमे कूद गया। फिर क्या था, एक क्षणमें ही पतिंगेकी तरह सब कुछ राख होगया।"

"काएट · काएट ··"—एक जोरकी चीख मार कर हेरमान अर्द्ध-मूर्च्छित हो वहीं गिर पड़ा। पास खड़ी एरीका सिरसे पैर तक काँप गई। उसने सजल आँखोंसे एक बार काएटकी ओर देखा और फिर झुककर हेरमानका सिर सहलाने लगी। उसकी कुछ समझमे नही आ रहा था कि ऐसा कौन-सा व्यक्ति है, जिसकी आत्म-हत्या हेरमानको इतना दुःखी एव विचलित कर सकती है।

कुछ क्षण बाद सहसा हेरमान उठ खडा हुआ और "मैं अभी आता हूँ" कहकर तेजीसे कमरेके दरवाजेसे बाहर होगया।

एरीकाकी आँखे काउण्टकी ओर फिरीं। वह चिन्ताका असह्य भार लिए अभी भी जड मूर्त्तिकी तरह खडा था। उसकी आँखोमे धीरे-धीरे उमडते हुए आँसुओंको देखकर एरीकाकी उत्सुकता और भी बढी और उसने साहस बटोर कर पूछा—"मुझे क्षमा करना काउण्ट, क्या तुम उस पागल नजरबन्दका नाम जानते हो ?"

"हाँ, हम लोग उसे वेगनर कहकर पुकारते थे। पर तुम उसे कैसे जान सकती हो ?...तुमने तो शायद उसका नाम भी नही सुना..."

काउण्ट अभी अपना वाक्य भी समाप्त नहीं कर पाया था कि एक तीखी और मर्मभेदी आवाजमे एरीका चीख उठी, "वेगनर" और धडाम्से वही गिर पड़ी।

काउण्ट ज्यो-का-त्यो हतबुद्धि-सा अचल खड़ा था। उसके कानोमे अब भी हेरमान और एरीकाके कण्ठ-स्वरका एक शब्द गूँज रहा था—"वेगनर !"

शोध का परिणाम

काफीका दूसरा प्याला खाली करके रखनेपर भी जब डाक नही आई, तो प्रो० अलेखेई आर्मियास्कका धीरज छूट गया। कुछ अनमने-से होकर वह कमरेमे इधरसे उधर चहलकदमी करने लगे। सहसा कुछ सोचते हुए-से वह रुके, और भारी आवाजमे पुकारा—"मारिया ! बेटी मारिया पालाश्का !"

कुछ क्षण उत्तरकी प्रतीक्षामे वह चुप रहे, फिर कमरेसे हालमे आये। वहाँ भी मारियाको न देख, उसे पुकारते हुए वह बरामदेकी ओर बढे। किन्तु बरामदेमे पाँव रखते ही वह ठिठक गये। देखा, मारिया बरामदेकी सीढीपर बैठी, दोनो घुटनोंपर कुहनियाँ रखे, हथेलियोंके बीच मुँह टिकाये, निर्निमेष दृष्टिसे, शान्त भावसे चमचमाते हुए काले सागरको निहार रही है। सागरकी लहरे मानों उससे मिलनेके लिये होड बदकर दौडती चली आ रही थी, पर बीच ही मे ऊबड-खाबड पहाड़ी किनारोंसे टकरा कर किसी अल्हड़ नवोढ़ाके मुक्त हास्य-सी बिखर जाती थी। पहाड़ीके ढलावपर कहीं स्थिर गम्भीर भावसे खड़े देवदारुके वृक्ष सागर-लहरोंके इस अनन्त, अविश्रान्त खेलपर मानो मन-ही-मन मुस्करा रहे थे, तो कही श्वेत चम्पकके वृक्ष अपने मनोहारी फूलो और मासल, चिट्टे पत्तोंको फहरा कर मानो झूम-झूमकर नाच रहे थे! उनकी आम्ल, मादक गंध वातावरणमे एक अनोखी मस्ती बिखेर रही थी।

प्रो० आर्मियास्क चुपचाप आगे बढे, और मारियाके पास आकर बैठ गये। अपना बाँया हाथ उन्होंने मारियाके सिरपर रखा, और दाहिने मे उसका एक हाथ लेकर आश्वासन-भरे स्वरमें बोले—"बेटी मारिया,

देखता हूँ, आज सुबहसे ही तू कुछ खोई-खोई-सी है। भला सुनूँ तो, तुझे आखिर हुआ क्या है?"

तरल मोतियोंसे लबालब सीप-से दो बडे, चमकीले नेत्र प्रो० आर्मियास्ककी ओर घूमे, और दूसरे ही क्षण एक झटकेके साथ मारियाका सिर उनके कन्धेपर आ टिका। वह फफक-फफक कर रोने लगी।

प्रो० आर्मियास्कने अपनी आँखोंमे उमडते हुए आँसुओंको रोकने की चेष्टा करते हुए कहा—"यह कैसा पागलपन है, मारिया? छिः! छिः! तू क्या निरी बच्ची है, जो यों रोती है?"

"पापा," काँपते हुए स्वरमे मारिया बोली—"आज न जाने मन कैसा हो रहा है। सोचती हूँ, शायद ईवान अब इस दुनियामे नहीं है। अगर होता, तो क्या वह पत्र भी न लिखता?"

"बस, इतनी सी ही बातपर यह गम-गिला है! अरी, जैसी पगली तू है, वैसा ही पागल है तेरा भाई ईवान! एक नम्बरका काहिल और गप्पी है वह शैतान! चिट्ठी लिखनेकी भला उसे फुर्सत कब मिलती होगी?"

"नहीं, ऐसा वह कदापि न करेगा। वह किसीकी बरातमे नहीं, लड़ाईपर गया है। वहाँ उसकी काहिली और गप्पीपन सब दूर हो गये होंगे। इतना पाजी तो वह नहीं है, पापा!"

इसी समय "आर्मियास्क! ओ आर्मियास्क दादा!" कहता हुआ डाकिया वासिली आ पहुँचा। पर आज न तो वह डाकियेकी वर्दी पहने था, और न उसके पास डाकका थैला ही था। एक हाथमें सफेद काग़ज़ का एक टुकड़ा अवश्य था। उसे मारियाको दिखाकर वासिलीने कहा—"मारिया बेटी, यह लो ईवानकी चिट्ठी!"

वासिलीके हाथसे पुर्जा छीनकर मारिया एक ही साँसमें उसे पढ गई। बचोंके से मोटे-मोटे अक्षरोंमें पेंसिलसे लिखा था—"प्यारी बहन मारिया, मुझे खेद है कि कई आवश्यक कार्योंमें फँसे रहनेके कारण मैं तुम्हें अब

तक पत्र न लिख सका। क्षमा करना ! मैं तुम्हे और पिताजीको हर घड़ी याद करता रहता हूँ। मैं मजेमे हूँ। तुम लोग किसी तरहकी चिन्ता न करना। तुम्हारा बहुत-बहुत प्यारा भाई, ईवान।"

मारियाकी सजल आँखे मुस्करा उठी। पुर्जेको मोड़-माड़ कर दूर फेकते हुए, उसने सहसा वासिलीकी दाढी पकड़ ली, और बनावटी क्रोधके साथ उसे खींचते हुए बोली—"वासिली चाचा, तुम इतने शरारती कबसे होगये ? क्या मैं तुम्हारे अक्षर भी नहीं पहचानती ? मुझे बनाने चले हो ?"

वासिलीने, जो प्रो० आर्मियास्ककी ओर देखकर आँखो ही आँखों मे हँस रहा था, बनावटी गिड़गिड़ाहटके साथ कहा—"देखो, दादा, जरा अपनी लड़कीकी करतूत देखो ! मैंने तो ईवानकी चिट्ठी लाकर दी, और मेरे साथ यह गुस्ताखी !"

प्रो० आर्मियास्कने मारियाके हाथसे वासिलीकी दाढ़ी छुड़ाते हुए कहा—"अच्छा, इस बार इस बूढे मूर्खको माफ करदो, मारिया ! पर, वासिली, आज डाक अभी तक नही आई ?"

"हाँ", जरा गम्भीर होकर वासिलीने कहा—"और शायद अब वह न आये !"

"न आये ! क्या मतलब है इसका ?"

"यही कि अब उसे बन्द समझो। जर्मन सेनाएँ बड़ी तेजीसे आगे बढ़रही हैं। यातायातकी गड़बड़ीसे अब डाक-व्यवस्था नियमित नहीं रह सकती।"

"हूँ !" कह कर प्रो० आर्मियास्क कुछ गम्भीर होगये। अभी वह कुछ कहने ही जा रहे थे कि अचानक हवाई हमलेकी सूचनाका भोंपू बज उठा। तीनों उठ कर, बिना कुछ कहे सुने, जल्दीसे पिछवाड़ेकी ओर बने रक्षा-गृहमे भाग गये।

.(२)

सोवियत्-सायंस-एकेडेमीके नक्षत्र-विज्ञान-विभागके अध्यक्ष डा० निकोलायविचका पत्र देते हुए कप्तान इलेंकफने कहा—"मैंने टेलीफोनपर आपसे जिस पत्रका उल्लेख किया था, वह यह है। पहले आप इसे पढ़लें, फिर इस सम्बन्धमें आपसे कुछ बातें करूँगा।"

पत्रको पढ़कर चश्मेके केसके नीचे दबा कर रखते हुए, प्रो० आर्मियास्कने कहा—"डा० निकोलायविच मेरे गहरे दोस्तोंमें से हैं। पता नहीं वह मुझे अपनेसे भी अधिक बूढ़ा और निर्बल कैसे समझने लगे हैं। खैर, तुम क्या कहना चाहते हो, इलेंकफ?"

"जी, मुझे आपसे सिर्फ यही अनुरोध करना है कि सोवियत् सायंस-एकेडेमीके साथ ही लाल सेनाके अधिकारी भी चाहते हैं कि फिलहाल आप याल्तासे कहीं अन्यत्र चले जायँ। सेनाधिकारी इस स्थानको अब अधिक समय तक सुरक्षित नहीं समझते।"

"न समझें। पर मैंने किसीका क्या बिगाड़ा है, जो मुझे कोई खा जायगा? मैं जो शोध-कार्य कररहा हूँ, क्या उसका महत्त्व सिर्फ रूसके लिये ही है? विज्ञान राष्ट्रीय और भौगोलिक सीमाओंको नहीं जानता, इलेंकफ!"

"पर आप बर्बर नात्सियोंको नहीं जानते! उनके सामने आज कला, साहित्य और विज्ञानका कोई मूल्य अथवा महत्त्व नहीं रह गया है। मनुष्यके रूपमें आज वे शैतान बन रहे हैं।"

"मैं इसपर विश्वास नहीं कर सकता। तुम कम्यूनिस्त हो, इसलिये प्रोपेगेंडा करना खूब जानते हो। पर यह तुम्हारा भ्रम है, इलेंकफ। सभी जर्मन बर्बर और नात्सी दस्यु तो नहीं हैं!"

"प्रो० आर्मियास्क, भ्रममें मैं हूँ या आप, यह तो समय ही बतलायेगा। पर इसके लिये हम आपका बलिदान करनेको तैयार नहीं। आपका

जीवन रूसके ही नहीं, विश्वके लिए भी आवश्यक एव मूल्यवान है।"

"मेरे जीवनका मूल्य और महत्त्व विज्ञानके उस काममे निहित है, जिसके लिए मैं पिछले २५ वर्षोंसे खप रहा हूँ! कायरकी तरह प्राणोंके मोह से भाग जाना मेरे अनुरूप न होगा। मैंने जो वर्षों तक येवपातोरिया, सेवेस्तपल, कर्च, फिदोसिया और सुदाककी खाक छान कर याल्तामें अपनी प्रयोगशाला कायम की है, वह इसलिये नही कि एक दिन प्राण बचानेको मैं इसे छोड कर भाग जाऊँ!"

"लेकिन आपके कामके लिए तो एकेडेमी ने लेनिनग्राडमे सारी व्यवस्था करदी है। फिर आपको वहाँ चलनेमे क्या आपत्ति है?"

"बताऊँ, आपत्ति क्या है? कहकर प्रो० आर्मियास्कने अपनी मेजका बॉया दराज खोला, और उसमे से एक पुराना-सा मोटा और मुड़ा हुआ कागज निकाल कर कप्तान इलेकफकी ओर बढा दिया। फिर बोले— "लो, इसे पढ़ देखो।"

कप्तान इलेकफने खोल कर कागजको पढ़ना शुरू किया। उसमे लिखा था—"मेरे अज्ञात, अपरिचित उत्तराधिकारी! कल १७ जुलाई, १६६६ ई० को मैंने पूर्वी क्षितिजपर आन्द्रोमडा नक्षत्र-समूहके निकट प्रकाश की एक तिरछी रेखा देखी, जो तलवारके आकारकी थी। काफी सोच-विचारके बाद मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि यह एक बडे नक्षत्रकी दुम है। बहुत हिसाब एव गणनाके बाद मैंने इसका नाम 'पर्सीफन' रखा है। यह २४५ वर्षोंमे अपना रूप स्पष्ट एव सम्पूर्ण करेगा, अर्थात् १६४१ मे यह अपने पूर्ण रूपमे फिर दिखाई देगा। तब मानवोंकी आशाओंकेलिए इसकी फिर गणना करना।—पादरी आर्नीलियस देफेंल, प्रुशियाके बादशाहका नक्षत्र-विज्ञानका शिक्षक, बुर्जबाख। १७ जुलाई, १६६६ ई०।" ('दि क्रीमियन स्काई से—लेखक।)

पढ लेनेके बाद कप्तान इलेकफने कागज प्रो० आर्मियास्कको लौटा

दिया। उसकी समझमें नहीं आया कि प्रोफेसरसे क्या कहे। वह उठ खड़ा हुआ, और विनम्र भावसे बोला—"आपके कामका महत्त्व मैं कम नहीं कूतता, प्रो० आर्मियास्क, पर नात्सी-दस्यु इसे नहीं समझेंगे। आज वे मानव-रक्तके प्यासे हो रहे हैं!"

"हो सकता है, तुम्हारी ही बात ठीक हो, कप्तान" कप्तान इलेकफको द्वारतक पहुँचाने आते हुए प्रो० आर्मियास्कने कहा—"पर मैं अपने कर्त्तव्यसे मुख मोड़ना नहीं चाहता। मेरे कामका महत्त्व रूस ही नहीं, विश्वके लिये अमित है, और जर्मनी विश्वसे बाहर नहीं है।"

कप्तान इलेकफने प्रो० आर्मियास्कका हाथ अपने हाथमें लेकर बड़ी भावुकताके साथ दबाते हुए, श्रद्धा एवं स्नेह-भरे स्वरमे कहा—"आपका साहस, विज्ञान-प्रेम और कर्त्तव्य-परायणता सराहनीय है, प्रोफेसर! मैं आपके कार्यकी हृदयसे सफलता चाहता हूँ!" और यह कहकर वह चला गया।

(३)

प्रयोगशालाकी मेजपर केवल एक मोमबत्ती जल रही थी। उसीके धुँधले प्रकाशमें अपने चारों ओर नक्शे और गणना-पुस्तकें फैलाये प्रो० आर्मियास्क कभी पेंसिलसे कुछ लिखने लगते थे और कभी मेजपर लगी विशाल खुर्दबीनसे पूर्वी क्षितिजके आकाशको देखने लगते थे। खुर्दबीनसे देखते-देखते सहसा उन्होंने आँखें हटालीं, और हाथकी पेंसिलको मेजपर पटक कर पुकारा—"मारिया! बेटी मारिया!"

दूसरे कमरेका पर्दा हटाकर मारिया हॉलमें आयी, और प्रश्न-भरी दृष्टिसे प्रो० आर्मियास्ककी ओर देखने लगी। प्रोफेसरने कुछ खिन्नसे स्वरमे पूछा—"आज खुर्दबीनका शीशा अच्छी तरह साफ किया था, मारिया?"

"जी हाँ, पापा, अभी शामको ही साफ किया था।"

"खाक किया था! फिर उससे ठीक दिखाई क्यों नहीं देता?"

"जरा देखूँ तो, क्या गडबड़ी है"—यह कहकर मारियाने नजदीक आ, खुर्दबीनकी नालको अपनी दाहिनी आँखके पास ले जाकर देखा। उस समय आकाश तारोंसे भरा था, पर खुर्दबीनसे एक भी तारा नजर नहीं आ रहा था—मानो गहरे, घने बादलोंने तारोंको ढँक लिया हो। उसने खुर्दबीन के मुँहको धीरे-धीरे दक्षिण-पश्चिमकी ओर घुमाया। उसे जहाँ-तहाँ कुछ तारे दिखाई दिये, और दाहिनी ओरसे तेजीसे बढते हुए धुएँके घने काले बादल छाते हुए-से दीख पड़े। कुछ ही क्षणोंमें तारे ढँक गये, और कुण्डलाकार धुआँ ऊपर एवं चारों ओर फैल गया।

खुर्दबीनसे आँखें हटा कर जरा डरी हुई-सी आवाजमें मारियाने कहा—"पापा, खुर्दबीनका शीशा तो साफ ही है, पर गहरे काले धुएँने क्षितिजको ढँक लिया है। दक्षिण-पश्चिमकी ओर से वह बढ़ रहा है।"

"क्या कहा?" प्रो० आर्मियास्क जैसे एकबारगी चौंक पड़े। "धुआँ! गहरा काला! भला यह क्या बला है?"

मारिया कुछ कहे, इससे पहले ही तटपर से रूसी तोपखानेकी तोपोंने सर्चलाइटकी तेज रोशनीकी सहायतासे गोले दाग़ने शुरू किये, और जंगलके हवाई-अड्डे से उड़कर लाल सेनाके बम-वर्षक दक्षिण-पश्चिमकी ओर झपटे। इसी समय फिर हवाई-हमलेकी सूचनाका भोंपू बज उठा। मारियाके कन्धेका सहारा लेते, प्रो० आर्मियास्क उठे, और धीरे-धीरे रक्षा-गृहकी ओर चले।

रक्षा-गृहमें जानेके कुछ ही क्षण बाद आस-पास जोरोंकी बम-वर्षा होनेका शब्द सुनाई पड़ने लगा। एक बमका विस्फोट तो इतने निकट हुआ कि प्रो० आर्मियास्कने समझा, जैसे उनकी प्रयोगशाला ही उड़ा दी गई हो। पर बिना 'आॅल क्लियर' हुए वह बाहर आकर कुछ देख भी नहीं सकते थे। एक गहरा आघात उनके मनको लगा। और वह सोचने लगे, 'यदि प्रयोगशाला नष्ट करदी गई होगी, तब?' और फिर उनकी आँखें मारियाकी ओर फिरीं। आज वह पिताकी नहीं, किसी और ही दृष्टिसे उसे देख रहे

थे। उसका सौन्दर्य, उसका स्वास्थ्य, उसकी सुडौल, सुगठित देह, मानो आज उनकी आँखोंमे शूल--से चुभ रहे थे। हृदयके साथ ही उनकी आँखे भी भर आई। अँधेरेमे उनके होठ कुछ हिले, मानो कह रहे हो—'अपने स्नेहकी इस अमूल्य थातीको जर्मन भेडियोंके हाथोंमे कदापि नही पड़ने दूँगा, चाहे मुझे स्वय गला घोट कर इसे मार ही क्यों न देना पडे।' आज प्रयोगशालासे अधिक उन्हे मारियाकी चिन्ता हो रही थी।

सहसा मारियाका ठडा, कोमल हाथ प्रो० आर्मियास्कके हिलते हुए होठोंसे छू गया। दोनों एक बारगी सिहर उठे। फिर मारियाने दबी-सी आवाजमें पूछा—"आप कुछ कह रहे थे क्या, पापा?"

"नहीं, नहीं, नहीं! कुछ भी नही। हॉ, मैं तुझसे पूछना चाहता था कि यहाँ तुझे डर तो नही लग रहा है, बेटी?"

"यहॉ डर भला किस बातका? इसका तो नाम ही रक्षा-गृह है। और फिर आप जो मेरे इतने निकट हैं।"

"हॉ, ठीक है, ठीक है!" कुछ अन्यमनस्क भावसे प्रो० आर्मियांस्क ने कहा, और चुप हो रहे।

इसी तरह बैठे-बैठे रात खत्म हो गई। पौ फटने तक भी 'ऑल क्लियर' नहीं हुआ, तो प्रोफेसरको कुछ विस्मय हुआ। वह बाहर निकल आये। प्रयोगशालाके द्वारपर पहुँच कर उन्होने देखा—कई जर्मन सैनिक हॉलमें घूम-घूमकर इधर-उधर खाना तलाशी-सी ले रहे हैं। एक मेजपर पड़ी उनकी गणना-पुस्तकको उलट-पुलट रहा है। प्रोफेसर सीधे उसीकी ओर गये। उन्हे देखकर सैनिकने सगीन लगी बन्दूक उनकी तरफ की, और कड़क कर कहा—"हाथ ऊपर करो!"

प्रोफेसरके हाथ मानो अनायास ऊपर उठ गये। सैनिकने संगीनकी नोंक उनके पेटसे छुआते हुए पूछा—"कम्युनिस्त?"

"नहीं!" शुद्ध जर्मनमे दृढताके साथ प्रोफ़ेसरने कहा।

"ओह! तो तुम जर्मन भी जानते हो?" सैनिकने एक क्रूर मुस्कराहट के साथ कहा—"कौन? यहूदी हो?"

"नहीं!" उसी दृढ़ताके साथ प्रोफेसरने उत्तर दिया।

इसी समय एक दूसरे सैनिकका घूँसा उनकी नाकपर आकर बैठा, और खून बहने लगा। उसने कर्कश स्वरमें कहा—"जरा होशसे बात करो! तुम एक जर्मन फौजी अफसर से बातें कर रहे हो! 'नहीं, नहीं' काफी नहीं!"

पहले सैनिकने फिर पूछा—"तुम रूसी खुफिया हो?"

"नहीं!" उसी दृढ़तासे प्रोफेसर आर्मियास्कने कहा।

"तब तुम क्या हो?" गरजकर उसने पूछा।

"मैं हूँ सोवियत् साइंस-एकेडेमीका एक सदस्य, नक्षत्र-विज्ञानका एक अध्यापक, शोधक।"

"ओह, यह मुँह और साइंस!" कह सैनिकने बन्दूक मेजपर रखदी, और प्रो० आर्मियास्कके पास आकर बोला—"इन चालोंसे तुम बच नहीं सकते, चालाक बुड्ढे! सच-सच बताओ कि तुम कौन हो, वर्ना हम तुम्हारी चमड़ी उधेड़ देंगे!"

प्रो० आर्मियास्कने कोई उत्तर नहीं दिया। सैनिकने उनकी छाती पर एक घूँसा मारकर कहा—"मेरी बातका जवाब दो! समझे? मैं तुम से बात कर रहा हूँ!"

"मैं जवाब दे चुका हूँ! मैं झूठ नहीं बोलता!

"ओह, बडे सत्यवादीके बच्चेहो! सुनो, इतने सस्ते नहीं छूटने पाओगे! एक शर्त्तपर हम तुम्हे बख्श सकते हैं—हमे यह बतलादो कि यहाँ आस-पास लाल सेनाकी चौकियाँ और डेरे कहाँ-कहाँ हैं और उनके मार्ग किस किस तरफ हैं!"

"यह सब मैं कुछ नहीं जानता। मुझे कुछ पता नहीं।"

इसी समय पूरे जोरके साथ बन्दूकके कुन्देका एक ज़ोरदार धक्का प्रोफेसरके सीनेपर आकर लगा, और वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़े।

(४)

जब प्रोफेसरको होश आया, तो उन्होंने देखा कि वह किसीकी गोद मे सिर रखे लेटे हैं, और कोई गर्म पानीमे रूई भिगो-भिगोकर उनके चेहरे का खून पोंछ रहा है। बड़ी तकलीफसे उन्होने पलके ऊपर उठाईं, और देखा—एक हाथसे वासिली अपनी आँखें पोछ रहा है, और दूसरेसे उनके चेहरेपर का खून, उसके सिरपर मैले कपड़ेकी एक पट्टी बँधी है, तथा बाईं आँखके नीचे एक हरा-नीला निशान उभर आया है, और उसके आस-पास का हिस्सा सूज गया है। प्रोफेसरने बड़ी व्यथाके साथ कहा—"भाई वासिली, तुम यहाँ कब आये? मारिया कहाँ है? और फिर इधर-उधर नजर घुमाकर कहा—"और मेरी प्रयोगशालाका सब सामान क्या हुआ? मेरी वह विशाल खुर्दबीन?"

"धीरज धरो, आर्मियास्क दादा, जरा दिलको कड़ा करो! घबराने से काम नहीं चलेगा। याल्तापर जर्मनोंका अधिकार हो गया है!"

"यह तो देख ही रहा हूँ—सब कुछ देख रहा हूँ, भाई!" फिर सहसा जैसे कुछ याद कर प्रो० आर्मियास्क बोल उठे—"मारिया कहाँ है?"

वासिलीने कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी आँखोंसे अजस्र अश्रु-धारा बह चली। उसे चुप देख कराहते हुए प्रोफेसर उठ बैठे, और दाँत पीसकर बोले—"वासिली, मेरे सवालका जवाब दे! बता, मारिया कहाँ है? बोल, जल्दी बोल!"

"उसे भूल जाओ, दादा!" काँपते हुए होंठोंसे वासिलीने कहा—"वह अब इस दुनियामें नहीं है!"

"नहीं है, नहीं है वह ! क्यों ? यह कैसे हो सकता है, वासिली ? मुझे जल्दी बता, बात क्या है ?"

"आर्मियास्क दादा, जी कड़ा करके सुनो। पहले तो न जाने कितने नात्सी गुण्डोंने उसके साथ बलात्कार किया, और फिर उसके शरीर को संगीनोंसे छेद डाला। उसकी लाश मैंने तुम्हारे रक्षा-गृहके बाहर ही गढ़ा खोदकर दफना दी है। तुम अपनी आँखोंसे शायद उसे देख भी नहीं सकते थे। ओह, कितना वीभत्स हो गया था उसका चेहरा ! मैं तो देखकर काँप गया !"

"हाय ! बेटी, मारिया !" यह कह कर प्रो० आर्मियास्क वासिली की गोदमें मुँह छिपा फूट-फूटकर रोने लगे। उन्हे रोता देख कर वासिलीका अश्रु-प्रवाह और भी तीव्र हो गया।

इसी समय दो जर्मनोंने प्रयोगशालाके हॉलमे प्रवेश किया। अब उनके पास बन्दूकें नही थी। कमरसे चमड़ेके केसमें बन्द पिस्तोलें लटक रही थीं। उनमें से एकने आगे बढ कर कहा—"क्या होरहा है, प्रोफेसर ?"

प्रोफेसरने क्रोध, घृणा और उपेक्षाकी दृष्टिसे एक क्षण उन्हे देखा, और फिर चीख उठे—"मेरी आँखोंके आगेसे हट जाओ, शैतानके बच्चो, कमीने कुत्तो ! मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतने गिर चुके हो।"

"ओह ! तो यह गुस्सा उतारा जा रहा है ! खैर कोई बात नही। पर मैं तो सुलह और मैत्रीका प्रस्ताव लेकर आया हूँ। और एक क्षण चुप रहनेके बाद प्रो० आर्मियास्कके पास आकर सैनिकने कहा—"इस कस्बेमें तुम्हारे सिवा कोई जर्मन नही जानता, प्रोफेसर ! अतः मैं चाहता हूँ कि तुम हमारे दुभाषियेका काम करो। यह काम बहुत थोड़े समयका होगा। बाकी समयमें तुम अपना शोध-कार्य कर सकते हो। हम तुम्हारा सारा सामान लौटा देंगे। तुम्हे कोई कष्ट न होगा।"

"यह मुझसे न हो सकेगा!"

"मगर क्यों? देखो, तुम तो कम्युनिस्त नही हो। पढ़े-लिखे और समझदार हो। कम्युनिस्त न ईश्वरको मानते हैं, न धर्मको। उन्होंने तुम्हारी भी क्या कद्र की है? हम इन्हीं आततायियोंके चंगुलसे रूसको मुक्त करना चाहते हैं। इसमें तुम हमारी बहुत-कुछ सहायता कर सकते हो।"

प्रोफेसरने इस बकवासका कोई उत्तर नहीं दिया। इसपर सैनिकने बूटकी एक जोरदार ठोकर वासिलीकी गोदमें सिर रखकर पडे हुए प्रोफेसर के कन्धेपर लगाई, और कड़क कर कहा—"गुस्ताख बुड्ढे! सुनता नही, मैं क्या पूछ रहा हूँ?"

कराहकर प्रोफेसरने अपना सिर वासिलीकी गोदमे छिपा लिया। इसी समय दूसरी ठोकर उनकी पीठपर लगी। सैनिकके बूटकी नाल और कीलें उनकी पतली कमीजको फाडकर पीठकी चमडीको छीलती हुई ऐसी फिसल गई, मानो बाघने अपने पजेसे नोंच लिया हो। पहले छिले हुए स्थानपर तेज जलन हुई, और फिर खून निकल आया। एक दबी हुई कराह उनके मुँहसे निकल गई; और वह अधमरेकी तरह वही निश्चेष्ट पड़ रहे। एक सैनिक वासिलीको रास्ता बतानेके लिये घसीटता हुआ अपने साथ ले गया।

कई घण्टों तक प्रो० आर्मियास्क उसी स्थितिमे अचेत पडे रहे। कुछ सचेत होनेपर जब बडी कठिनाईसे उन्होंने करवट बदली, और बरामदे के बाहरकी ओर देखा, तो आकाशमें तारे जगमगा रहे थे। पता नहीं रात कितनी बीत चुकी थी। एक ओर भूखसे उनका पेट जलने लगा था, और दूसरी ओर सारा शरीर दर्दसे फटा जा रहा था। उन्हे ऐसा जान पडरहा था, मानों शरीरका जोड-जोड़ खुल गया हो। सहसा उन्हे याद आई 'पर्सीफन' की। पर दूसरे ही क्षण अपनी साधन-हीनतापर वह रो पडे। न आज उनके पास उनकी गणना-पुस्तके थी, न तिथि जाननेका पंचाग और न समय देखने की घड़ी। इन सबसे बढकर जिस चीज का अभाव उन्हे खल रहा था, वह

थी उनकी विशाल खुर्दबीन। यह खुर्दबीन उन्हे ड्रेसडन (जर्मनी) के नक्षत्र-विज्ञान-संघने १६२२ मे यह कह कर भेंट की थी कि प्रसिद्ध जर्मन नक्षत्र-विज्ञानवेत्ता जोहान्स केपलर इसीसे शोध-कार्य किया करते थे। पर केपलरके उत्तराधिकारी? छिः! छिः! वे आज कितने गिर चुके थे। क्या उन्हे कोई सभ्य और सुसंस्कृत कहेगा?

मानसिक द्वन्द्वमे फॅसे प्रो० आर्मियांस्क उठ बैठे। उन्होंने उठ खड़े होनेकी चेष्टा की, पर खड़े होनेकी शक्ति उनमें रह ही नहीं गई थी। अतः घसिटते-घसिटते वह हॉल पारकर बरामदेमें आये। फिर सीढ़ियोंसे नीचे उतरे, और बाईं ओरकी चट्टानकी ओर बढे। काफी तकलीफ़के बाद वह उसकी सतहपर पहुॅच पाये। वहाँ पहुॅच कर, उन्होने अपनी आँखोंके आँसू पोंछे, और बड़ी आशा-भरी दृष्टिसे दक्षिण-पूर्वकी ओर देखा। पर उनकी क्षीण दृष्टि 'पर्सीफन' तो क्या, साधारण नक्षत्रोंको भी स्पष्ट नही देख पाई। प्रोफ़ेसरको एक गहरा आघात लगा। पच्चीस वर्षके उनके शोध-कार्यपर सहसा पानी फिर गया! आज जब चौथाई शताब्दीके परिश्रमका परिणाम शायद वह अपनी आॅखों देख पाते, उनसे सब-कुछ छीन लिया गया था। पर अपनी व्यथा वह किससे कहते? उन्हे ऐसा महसूस हुआ, मानो उनकी यह मर्म-व्यथा सारी कटुताके साथ उनके कण्ठसे फूट पड़ना चाहती हो। पर आज जैसे उनमें रोने-चिल्लानेकी शक्ति भी नहीं रह गई थी!

अचानक दाहिनी ओरसे किसीने सर्चलाइट-द्वारा उनपर रोशनी डाली। उनकी अधखुली, सजल आॅखे उधर फिरीं, और दूसरे ही क्षण चौंधियाकर नीचे झुक गई। इसी समय एक गोली सनसनाती हुई उनकी कनपटीसे आर-पार निकल गई, और प्रोफ़ेसर आर्मियास्क सदाके लिए वहीं ढेर हो गये।

जय

अधनगे, अधभूखे, अधमरे उन कुरूप कङ्कालोको सम्बोधित कर जमन-बर्गोमास्टर चिल्ला उठा—"समझ गए न, मैं फिर दोहरा देना चाहता हूँ कि यह सारा हल्का फौजी-क्षेत्र घोषित किया जा चुका है। अगर अपना भला चाहते हो, तो एक घण्टेके अन्दर-अन्दर इसे खाली कर दो; वर्ना इसीके साथ जिन्दा दफना दिये जाओगे। समझे !"

और यह कहकर बर्गोमास्टरने कठोर मुख-मुद्रा बना इस तरह अपनी बत्तीसी भींचली, मानो यमके जबड़े अपना भक्ष्य पाकर जुड गये हों ! फिर उसने एक खूनी दृष्टि, जिसमे से घृणा, क्रोध और क्षोभके शोले-से निकल रहे थे, उन निरीह, निरस्त्र, निःसहाय ककालोपर डाली। सबके सब ऐसे गुम-सुम खडे थे, मानों मिट्टी-पत्थरके पुतले हो। उनकी आँखे इतनी नीचे झुकी जा रही थीं, जैसे पृथ्वीकी परतोको भेदती हुई पातालमे धँसी जा रही हो। अधिकाशके चेहरोंपर आँखोंकी जगह पुतलियोंपर चढी पलके ही नजर आ रही थीं।

सहसा अपनी झुकी हुई गर्दन धीरे-धीरे ऊपर उठाते हुए एक बुढियाने, जिसके होंठो और आँखोमे उमडे आँसुओमे मानो कँपकँपीकी होड़-सी लग रही थी, डरते-डरते मुँह खोला—"पर हेर मास्टर, मैं कई दिना से भूखी और बीमार हूँ। मेरे दोनो बच्चे मौतकी घडियाँ गिन रहे हैं। भला एक घण्टेमे मैं कहाँ और कैसे ..."

बुढ़ियाका वाक्य अभी पूरा भी न हो पाया था कि बर्गोमास्टरकी बग़लमें साँपकी तरह कुण्डली मारे बैठा चाबुक निकला और सड़ाक्से शब्दके साथ बुढियाके ललाट, नाक, बाएँ गाल, कन्धे और छातीके खुले हुए भागपर एक नीली-सी धारी खीचता हुआ फिर अपने स्थानपर लौट

आया। सबके कन्धे और झुकी हुई गर्दनें इस तरह काँप गई, मानो कोई भूडोल या बिजलीका कड़ाका हुआ हो। एक हल्की-सी चीख बुढ़ियाके दुर्बल कण्ठसे निकली और वह जहाँ खड़ी थी, वहीं ढेर होगई। उस क्षीण आहपर एक बड़े पर्वत-खण्डकी तरह चकनाचूर होते हुए बर्गोमास्टरका उच्च स्वर फिर गूँज उठा—"खबरदार, अगर किसीने जबान भी हिलाई तो! मेरा हुक्म आखरी हुक्म है। जर्मनोंके हुक्म कभी सुधार-शंकाओंके लिए नहीं होते। वे पूरा आज्ञा पालन चाहते हैं—१०० फी-सदी, आँखें मूँदकर और जबान दाँतोंके बीचमें दबाकर। समझे!"

उपस्थित व्यक्ति बेतकी तरह एक बार फिर काँप उठे। फिर दाहिना हाथ ऊपर उठाकर बर्गोमास्टर चिल्लाया—"हाइल हिटलर!" और काँपते हुए कुछ हाथ ऊपर उठे, कुछ आधे उठे तथा जो कुछ नहीं उठे, वे उठने-लायक रह ही नहीं गए थे। धम्म-से बर्गोमास्टर पिछली सीटपर बैठ गया और धूल उड़ाती हुई मोटर वहाँसे चल पड़ी। एक साथ सबकी आँखें मोटरके पीछे उड़ती हुई धूलकी ओर उठीं और दूसरे ही क्षण सबके चेहरों पर एक दबी हुई-सी मुस्कराहट खेल गई। गिरी हुई बुढ़िया अपने कपड़े झाड़ती हुई कराहकर उठी और एक क्रूर मुस्कानके साथ व्यंगपूर्वक बोली "वाह रे आर्योंकी बहादुरी! पता नहीं, ये शैतान कब तक हमारे सिर-आँखों में इस तरह धूल झोंकते और हमें सताते रहेंगे? न-जाने कब तक हमें ये जुल्म-ज़्यादतियाँ सहनी होंगी?"

"जब तक लाल-सेना नहीं आ जाती!"—पास खड़े एक ८ वर्षीय बालकने सहज भावसे कहा और इस तरह खिलखिलाकर हँस पड़ा, मानो शान्त वातावरणमें कोई झुनझुना बज उठा हो! आश्चर्य और प्रसन्नता से सबके चेहरे खिल उठे और एक साथ सबकी आँखें बच्चेकी ओर फिरीं। पर यह क्या? बच्चेके हाथमें एक नई पेंचनली पिस्तौल देखकर सबके सब अवाक्-अचम्भित रह गए। उसकी भूरी आँखोंमें सन्तोप और प्रसन्नता खौलते हुए पानीकी तरह उछल रहे थे। फटे-मैले चिथड़ोंसे ढँका उसका

स्वस्थ गौर शरीर ऐसा दिखाई पड रहा था, मानो संगमरमरकी कोई सुघड़ मूर्ति जहाँ तहाँसे मैली हो गई हो। पिस्तौलको वह अपने छोटे छोटे हाथोंमे उछाल-उछालकर इस तरह खेल रहा था, मानो कोई खिलौना हो।

सबको आश्चर्यसे अपनी ओर घूरता देखकर बच्चेने स्वाभाविक मुस्कराहटके साथ कहा—"तुम सब लोग क्या यही ताज्जुब कर रहे हो कि यह पिस्तौल मेरे पास कहाँसे और कैसे आई? भई वाह, क्या यह भी कोई इतने अचरजकी बात है? जब बर्गोमास्टर खडा हुआ अपना हुक्म पढ कर सुना रहा था, सबकी तरह मैं भी उसे ध्यानसे सुन रहा था। सहसा मेरी नजर उसके पीछे, सीटके कोनेमें, पडी हुई इस पिस्तौलपर गई और धीरे-धीरे आगे बढकर मैंने इसे चुपके से उठा लिया। खेद है कि यह खाली मिली, नहीं तो बुढिया पर कोडा फटकारनेके पहले ही बर्गोमास्टरका खात्मा हो जाता!"

सबके सब बडे जोरसे ठहाका मार कर हँस पडे और एक साथ कई लोग बच्चेको चूमनेके लिए दौडे। जर्मनोंका अधिकार होनेके बाद रूज्हिन के बचे खुचे लोग शायद आज पहली बार दिल खोलकर हँसे थे।

(२)

"सात बरसकी इस छोकरीने तो नाकोदम कर रखा है। कभी कहती है, सारा शहर जल रहा है। कभी कहती है, लाल-सेना आ गई। कभी कुछ कहती है, कभी कुछ। है तो सात बरसकी; पर बातें ऐसी करती है, जैसे सत्तर सालकी दादी हो!—कहते हुए ईगोर यारत्सेफने एक लम्बी जँभाई ली। अपने भग्नावशेष घरकी दीवारके साथ पीठके सहारे बैठे-बैठे उसने न मालूम कितने दिन और रातें बिता दी हैं। आसपासका मलबा हटाकर उसने अपने और अपनी एकमात्र बची सात-वर्षीया कन्या ग्रून्या के बैठने-लेटनेके लिए ठाँव बना लिया है। उसके भरे-पूरे परिवारमे यही दो प्राणी और उस सुन्दर-सुखद घरमें बस इतना ही स्थान उनके लिए बचा है।

"पापा, पापा, सुना तुमने ?"—कहती हुई ग्रून्या दौडकर आई और ईगोरकी गोदमे बैठ गई। उसकी तेजीसे चलती हुई साँससे ईगोरने महसूस किया कि वह शायद काफी दूरसे दौडी आई है और इसीलिए हाँफ रही है। अपने दोनो हाथ उसके चेहरेपर फेरते हुए ईगोरने कहा—"क्या सुना? तुझे आज यह हो क्या गया है री? न रात-भर सोई, न कुछ खाया-पिया। यह क्या पागलपन सूझा है आज तुझे?"

अपने सिरसे ईगोरकी ठोड़ी रगड़ते हुए ग्रून्याने कहा—"पागल मैं नहीं, तुम होगए हो। तुम बहरे तो हो नही, फिर सुनते क्यों नही? आखिर मैं अकेली ही तो नहीं सुन रही— सारा गाँव सुनकर प्रसन्नतासे उछल-कूद रहा है।"

"अरे, पर बता भी तो, क्या? सारा गाँव क्या सुन रहा है?"

"लाल-सेनाकी तोपोंका स्वर, उसके बमोंका विस्फोट! देखते नहीं, उसके लड़ाकू हवाई-जहाज लुफ़्टवाफेको टिड्डियोंकी तरह मार-मारकर भगा रहे हैं।"

"अच्छा, जरा चुप तो रह",—ग्रून्याके मुँहपर अपना हाथ रखते हुए ईगोरने कहा—"मैं भी तो सुनूँ कि आखिर कहाँ लाल-सेना आ रही है।"

दोनों साँस रोककर चुपचाप बैठ गए। दो-चार मिनट तक कुछ भी सुनाई नहीं दिया। फिर सहसा एक जोरका धड़ाका और उसके साथ ही गड़गडाहटका शब्द हुआ, मानो कोई घर गिरा हो या कोई लोहेका बडा युद्ध-यन्त्र फटा हो। ईगोरने कसकर ग्रून्याको अपनी छातीसे चिपटा लिया। वह उसे कुछ कहने ही जा रहा था कि दूसरा विस्फोट हुआ, फिर तीसरा, फिर चौथा और फिर तो जैसे विस्फोटोकी झड़ी ही लग गई। चारों ओरसे धड़ाम्-धडाम्, धड-ड़-ड़" धम्मकी आवाजें आने लगी। लाल-सेनाके हवाई-बेड़ेकी परिचित आवाज कई महीनों बाद सहसा आज फिर सुनाई पड़ने लगी। फिर तो मोटरो, लारियों, ट्रकों, टैंको, और मोटर-साइकिलोंकी

सम्मिलित ध्वनिसे जैसे वातावरण प्रतिध्वनित हो उठा। ईगोरने ग्रून्याको और भी कसकर अपनी छातीसे चिपटा लिया और उसके ललाट, सिर और कपोलोंपर अधीर-असंयत चुम्बनोंकी छाप लगाता हुआ प्रसन्नतासे पागल हो चीख उठा—"ग्रून्या, मेरी प्यारी ग्रून्या, वे आ गए। हाँ, सचमुच आ गए। तू कितनी अच्छी बेटी है! तूने ठीक सुना था—ठीक ही सुना था।"

"पर मुझे छोडो भी। मुझे जाने दो। देखो, सब लोग दौड दौड कर उनके स्वागतके लिए-हर्षध्वनि करते हुए जा रहे हैं।"—पाँव पटकते हुए ग्रून्याने कहा।

"तू अकेली जायगी, ग्रून्या? मुझे अपने साथ नही ले चलेगी? पगली कहीकी। चल, मैं भी तेरे साथ चलता हूँ।"—यह कहकर ईगोर यारत्सेफ उठा और ग्रून्याके सिरपर हाथ रखकर उसके साथ-साथ चलने लगा।

क्रान्ति चिरजीवी हो, लाल-सेनाकी जय हो तथा सोवियत-सघ जिन्दाबादके नारोंसे आकाश गूँज उठा। न जाने कहाँसे, आज फिर सब के हाथोमे, घरोंके छज्जो और खिडकियोंसे, लाल झण्डे फहरा रहे थे। उन अधभूखे, अधनंगे और अधमरे ककालोंमें सहसा आज फिर नये जीवनका जोश और नये यौवनका जोर आ गया था। उनके दुर्बल कण्ठ आज हर्षध्वनिसे पृथ्वी और आकाशको हिलाये डाल रहे थे। रूज़्हिन-वासियोंकी इस सम्मिलित हर्षध्वनिमे ईगोर और ग्रून्याकी पृथक् आवाज तो नहीं सुनाई पड़ रही थी, पर ईगोरके गलेकी फूली हुई नसों और ग्रून्या के बैठे हुए गलेसे यह सहज ही अनुमान किया जा सकता था कि वे दोनों कितने चिल्लाए हैं।

गाँवकी सीमापर पहुँचकर लाल-सेनाके घुडसवार घोड़ोंसे उतर पडे और दौड़-दौड़कर रूज़्हिनवासियोंसे गले मिले। इस अगाऊ-टुकड़ीमे अधिकाश लोग रूज़्हिनके ही थे, जो आसानीसे अपने चिरपरिचित रास्तों से रातके अँधेरेमे भी इतनी सफलतापूर्वक रूज़्हिन पहुँच सके थे। कइयोंको

उनकी माताएँ मिली, कइयोंको पत्नियाँ, बहनें, पुत्र-पुत्रियाँ, कुटुम्ब-परिजन आदि। आज नात्सियोंकी बर्बरतासे कराहनेवाले रूज्हिनने जैसे नया जन्म ग्रहण किया हो। दौड़-दौड़कर सब एक-दूसरेका अभिवादन-अभिनन्दन कर रहे थे।

गाँवमें पहुँचते ही लाल-सेना तीन भागोंमें बँट गई। एक हिस्सा शत्रुओं और उनके किराएके कुत्तोंकी तलाशमें चारों ओर गश्त करने लगा। दूसरा हिस्सा भूखे नगे नागरिकोंको रोटी-कपड़े बाँटने लगा और तीसरा नात्सी पैशाचिकताके शिकार हुए लोगोंकी मरहम-पट्टीकी व्यवस्था करने लगा। इसके जिम्मे जहाँ-तहाँ पड़ी सड़ रही लाशों और तार तथा बिजलीके खम्भोंपर लटकी लाशोंको दफनाना भी था। लाशोंके बुरी तरह सड़ जाने और मासल भागोंके पक्षियों द्वारा खा लिए जानेसे यह पहचानना असम्भव था कि वे किसकी हैं।

(२)

एक मोटर आकर ईगोरके घरके सामने रुकी। ग्रून्या द्वारके चौखटे के पास खड़ी थी। मोटरमें बैठे एक भद्र व्यक्तिने मुस्कराकर उससे पूछा—"क्या ईगोर यारत्सेफ यहीं रहते हैं?"

ग्रून्याने स्वीकृतिमें केवल अपना सिर हिला दिया और भागकर भीतर पहुँची। बोली—"पापा, तुम्हारा नाम क्या है? मैं तो भूल ही गई!"

हाथसे टटोलकर ग्रून्याको पकड़नेकी चेष्टा करते हुए ईगोरने कहा—"क्यों री, फिर तूने अपनी शरारत शुरू की न! देख अब लाल-सेना आ पहुँची है। अगर ज्यादा शरारत की, तो···हाँ · देख लेना फिर।"

"तो क्या करोगे, तवारिश ईगोर यारत्सेफ!"—कहते हुए आगन्तुकने भीतर प्रवेश किया और ईगोरका दायाँ हाथ अपने हाथमें लेकर जोरसे झकझोरते हुए कहा—"मुझे पहचाना, तवारिश?"

ईगोर हक्का-बक्का रह गया! एक क्षणको वह मुँह फाडे, भावहीन मुद्रासें, इस तरह आगन्तुककी ओर मुँह किये रहा, मानो अपनी दृष्टिहीन आँखोंसे उसे पहचाननेकी कोशिश कर रहा हो। दूसरे ही क्षण झिझकते हुए उसने कहा—"तुम जरासिमोव, लाल - सेनाके सर्जन जरासिमोव तो नहीं हो? आवाज तो कुछ वैसी ही, परिचित और पहचानी-सी मालूम देती है।"

"भई, खूब पहचाना तुमने!"—हर्षोन्मत्त हो सर्जन जरासिमोवने कहा—"लेकिन तुम्हारा यह क्या हाल हो गया? हम लोग तो तुम्हे अस्पतालमे छोडकर गए थे न।"

"हाँ, अस्पतालमें ही। उसके बाद जो-कुछ हुआ, वह लम्बी करुण-कहानी है। कभी फिर सुनाऊँगा। मेरी जेबमें अगर लाल - पुस्तिका न मिलती, तो जान भले ही चली जाती; पर आँखे शायद न जातीं।"

"तो क्या लाल-सेनाके आदमी होनेके कारण ही तुम्हारे साथ यह हृदयहीन व्यवहार किया गया?"

"हॉ। जर्मन-अफसर हमपर लातों, घूसों और कोड़ोंकी बौछार करते, अपशब्द कह-कहकर हमारे चेहरोपर थूकते और नगा करके हमें बुरी तरह पीटते हुए दाँत पीस-पीसकर कहते जाते थे कि स्लाव जातिको वे समूल नष्ट कर देंगे और लाल-सेनाका तो नाम भी बाक़ी न रहने देंगे। हमें हफ़्तों भूखों मारा गया, जाडेमे नगा रखा गया और बगलमे रस्से डालकर रात-रातभर छतोंसे लटकाए रखा। कँटीले तारोंके घेरेमें, खुली जगह, कीचड में रगड़-रगडकर न-जाने कितने स्वस्थ-सबल साथी भूख और शीतसे तडप कर मर गए! वे सब बातें मत पूछो सर्जन, कलेजा मुँहको आता है। ओफ्, वे दिन!"

"सब जगहसे ऐसी ही, बल्कि इससे भी भयकर और रोमाञ्चकारी, बाते सुनता आ रहा हूँ, ईगोर! मैं तो यही नहीं समझ पा रहा कि क्या ये लोग भी मनुष्य हैं? बचपनमें चगेजखॉ, बाती, मामई आदिके रोमाचकर

जुल्मोंका वर्णन पढ़ा था, किन्तु इनके जुल्मोंने तो उन्हें भी फीका कर दिया है। पर हाँ भाई, यह तो बताओ तुम्हारी आँखें कैसे जाती रहीं ?"

"कहा न, वे लाल-सेनाका नाम तक मिटा देना चाहते थे। हम जितने आदमी पकड़े गए थे, उन्हें उन्होंने घायल होनेके बावजूद अस्पताल से न केवल निकाल ही दिया, बल्कि खाइयाँ खोदने और सड़कोंका मलवा साफ करनेको भी मजबूर किया। जिन घायलोंने भूख-प्यास सहकर सारे दिन श्रम करनेमें असमर्थता दिखाई, उन्हें पहले बर्गोमास्टरके कोड़ोंसे और बादमें गोलियोंसे मारा गया। हममें से कुछसे न केवल मार-पीटकर ही लाल सेनाके भेद पूछे गए, बल्कि लाल लोहेकी शलाखोंसे शरीरके कई अंग—यहाँ तक कि कइयोंके गुप्तांग भी—दागे गए, कइयोंकी आँखें निकाल ली गईं, हाथ, पाँव, नाक, कान तो न-जाने कितनोंके काट लिए गए! पिटकर बेहोश हो गिरनेवालोंके पेट चीर डाले गए। कई बेहोश हुओंको टैंकों और फौजी ट्रकोंसे रौंद डाला गया। मेरा बायाँ कान आपको नजर आता है ? मेरे हाथोंकी अंगुलियाँ ? और मेरा सीना भी तो जरा देखिए !" यह कहकर ईगोरने सीने-परसे अपनी जीर्ण-शीर्ण कमीजको हटा दिया।

सर्जन जरासिमोवकी आँखें ईगोरकी बाईं कनपटीकी ओर गईं। उन्होंने देखा, बाँया कान नदारद है! उसकी जगह है सिर्फ कानका छिद्र। उसके हाथोंकी अंगुलियाँ भी इस तरह तिरछी कटी हुई हैं, मानो कोई गँड़ासा कच्ची बालोंको एक ही बारमें साफ़ कर गया हो। उसके सीनेपर पहुँचकर तो सर्जनकी आँखें बरबस छलछला उठीं। गरम लोहेके दाग पीबसे भर-कर पकते-फैलते जा रहे थे। कुछ खड्डा बनाकर जिन्दा चमड़ीमें ही सूखने लगे थे। सर्जनने जेबसे रूमाल निकालकर अपनी आँखें पोंछीं और आर्द्र-कण्ठसे कहा—"ईगोर, मेरे साथ अस्पताल चलो। अब और देर न करो।"

सर्जनके कन्धेका सहारा लेकर ईगोर यारत्सेफ उठा और पुकारा "ग्रून्या, इधर आ। चल, तेरे भी कान कटवाता हूँ।"

बिना हाथोंकी ग्न्या, बिना कुछ कहे सुने, मुस्कराती हुई इस तरह आगे बढ़ आई, मानो कोई बिना पहिएकी गाड़ी (खिलौना) लुढ़क आई हो! सर्जनने एक जिज्ञासा-भरी दृष्टि उसपर डाली और उसके सिरपर हाथ फेरते हुए उसे तथा ईगोरको लेकर मोटरकी ओर बढ गए।

तीनोंको लेकर जब मोटर अस्पतालकी ओर चल पडी, तो सर्जनने पूछा—"तवारिश ईगोर, तुमने सब-कुछ बताया, पर यह तो बताया ही नही कि ग्न्याके हाथ कैसे काटे गए?"

"ओह, वह तो मैं भूल ही गया। जब जर्मन गुण्डे मेरे घरमे घुसकर ग्न्याकी मॉके साथ बलात्कार कर रहे थे और वह बेचारी तडप-कराहकर उनके फौलादी पजेसे छुटकारा पानेकी विफल कोशिश कर रही थी, ग्न्याने एक आततायी जर्मन सैनिकका मुँह नोच लिया। इसपर एकने उठा कर ग्न्याको जमीनपर दे मारा। दूसरा उसे गोली मारने जा ही रहा था कि एक सैनिकने कहा—'इसके दोनो हाथ काटकर छोड़ दो, ताकि यह जीवन-भर किसी जर्मनपर हाथ उठानेकी सजा भुगतती रहे। रूसियोंके लिए यह अच्छा सबक होगा!' इसके बाद तो ग्न्या ७ जर्मनोंके प्राण ले चुकी है। मुझसे तो यही अधिक बहादुर निकली।" यह कहकर ईगोर बडे जोरसे हँस पड़ा। सर्जनने ग्न्याको चूमकर छातीसे लगा लिया।

(४)

अभियुक्तको सम्बोधित करते हुए विचारपतिने कहा—"कप्तान जोहान मिलर, ईगोर यारत्सेफका बयान तुम सुन चुके हो। तुम्हे कुछ कहना है? तुम अपने अपराध स्वीकार करते हो?"

"मैं कह ही क्या सकता हूँ?"—कप्तान मिलरने चमकती हुई सजल आँखोंसे विचारपतिकी ओर मुखातिब होकर कहा—"१६०७ के चौथे हेग-कन्वेशनकी ७ वीं धारा मुझे मालूम थी। उसके विपरीत युद्ध-बन्दियोंपर

जुल्म करनेके मैं खिलाफ़ भी था; पर अफसरोंके सामने लाचार था। मैं अपने अपराध स्वीकार करता हूँ।"

"और तुम कर्नल फ्रिट्ज साकेल ?"—विचारपतिने पूछा।

"अपनी करनीपर मैं लज्जित हूँ, विचारपति !"—हतप्रभ होते हुए कर्नल साकेलने कहा—"पर सच मानिए, नागरिकोंको लूटने, सताने, उनका अंग-भग करने, अनिवार्य श्रमके लिए, स्वस्थ नागरिकोंको जर्मनी भेजने, कम्यूनिस्तोंको गोलीसे मारने या उनकी आँखें निकालने, गरम चाकूसे उनके चेहरोंपर पँचकोना सितारा या स्वस्तिकाका चिह्न बनाने, उन्हें भूखों मारने और छोड़नेसे पहले प्रत्येक स्थानको जलाकर राख कर देनेके जितने भी काम मैंने किये हैं, वे सब ऊपरके हुक्मोंके अनुसार। अपनी सफ़ाईमें मैं ये सब हुक्म पेश करता हूँ।" यह कहकर कर्नल साकेलने फाइलोंका एक पुलिन्दा सरकारी वकीलकी मेजपर ले जाकर रख दिया।

"और बर्गोमास्टर विल्हेम बौक, तुम्हें क्या कहना है?"

"मैं तो अपना मुँह दिखाने लायक भी नहीं हूँ, कहूँ भला क्या ? मुझे रूसी मोर्चेपर यह कहकर भेजा गया था कि वहाँ अनाजके पहाड़ लगे हैं, शराबके तालाब भरे हैं और परियोंको मात कर देने वाली रूसी छोकरियों की पल्टनकी पल्टन मन बहलानेको हैं ! तुम जो चाहो, सो करना। खूब खुलकर खेलना। पर यहाँ आनेपर मुझे काम यह सौंपा गया कि मैं अफसरों के लिए रूसी छोकरियाँ जुटाऊँ ! जो आने या जर्मन अफसरोंको सुखी-सन्तुष्ट करनेमें आनाकानी करें, उन्हें या तो गोलीसे उड़ादूँ या उनके नाक, कान, छातियाँ, हाथ, पाँव आदि काट लूँ; नंगा करके उन्हें बेरहमीसे पीटूँ, उनके बाल जलादूँ और उन्हें अन्धा करके हमेशाके लिए कुरूप तथा बेकार करदूँ। आखिर मैं भी आदमी हूँ, इस स्वाधीनताने मेरी पाशव वृत्तियोंको भी उभारा और फलतः न मालूम कितनी मासूम और कमसिन लड़कियों, नर्सों, अध्यापिकाओं, सामूहिक खेतोंकी मज़दूरनियों आदिके साथ मैंने

जोर-जुल्म तथा बलात्कार किया ! चाँदमारीके निशानोके लिए न मालूम कितनी माताओंकी गोदसे मुझे उनके मासूम बच्चोंको छीनना पड़ा। पर मैं अपने अफसरोके कठोर आदेशके आगे लाचार था।"

"कार्पोरल रूथ, तुम्हे क्या कहना है?"

"मुझे तो सिर्फ यही कहना है कि मुझपर जो अभियोग लगाये गये हैं, वे मेरे असली कारनामोका दशमांश भी नही हैं। अधिकृत-रूसके इस भागमे शायद ही कोई ऐसा जुल्म हुआ हो, जिसमे मेरा हाथ न हो। मुझे आदेश था कि अधिकृत क्षेत्रोंकी लूटमे वैयक्तिक दिलचस्पी लेना हर जर्मन का फर्ज है, क्योंकि सरकारको केवल लोहे, पेट्रोल, अनाज, गरम कपड़े, फेल्टबूट, युद्ध-यन्त्र आदिकी ही जरूरत है, बाकी जो जिसके हिस्सेमे पडे, उसका। स्लाव-जाति और सस्कृतिको समूल नष्ट कर देनेके खयालसे मुझ-से यह भी कहा गया कि स्वस्थ सबल स्त्री-पुरुषोंको गुलामीके लिए जर्मनी भिजवानेमें मदद दूँ और शिक्षण-केन्द्रो, पुस्तकालयो, प्राचीन सग्रहो, क्लबो, कलाभवनों, विश्वविद्यालयो तथा अन्य समस्त सस्कृति-केन्द्रोको नेस्तनाबूद करवा दूँ।"

"उराज बुजाकरोफ, तुम्हे क्या कहना है?"

"महोदय, मैं उक्रेनका एक यहूदी बनिया हूँ। जर्मनोंके सविशेष अत्याचारोंके डरसे मजबूरन मुझे गेस्टापोमें नौकरी करनी पडी। लाल-सेनाके दो सैनिकों—कौल्या और वास्या—को मैंने ही पकडवाया। कई कम्यूनिस्टों और गुरिल्लाओंकी हत्याके लिए भी मैं ही जिम्मेदार हूँ। गेस्टापो के आदेशसे ही कई गाँवोंमें जाकर मैं चिल्लाया कि लाल-सेना आगई, लाल-सेना आगई, और जब नागरिक अपने छुपाए हुए अस्त्र-शस्त्र लेकर दौड़ आए, तो जर्मन मशीनगनोंने उन्हे खेतकी मूलीकी तरह काट डाला ! मेरे घरसे जो सामान निकला है, वह सब रुज्हिन, सामवेक, विल्की और सोरतावाला गाँवोंकी लूटका ही है।"

"इनोकेन्ती गावरिलोविच, तुम्हें क्या कहना है?"

"मैं क्रासनादोरका एक यहूदी ड्राइवर हूँ। यह सच है कि जर्मनी से पलायन करनेके बाद मैं आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया और हंगेरीमें रहा तथा तीन बार फर्जी पासपोर्टसे सफर करनेके कारण दंडित भी हुआ। जर्मनोंके अत्याचारोंके डरसे ही मैंने उनकी नौकरी की और लाल-सेनाके सब रास्ते उन्हें बताए। जर्मनोंने मेरे सामने यह घोषणा की कि उनके टैंकोंको रोकनेके लिए सड़कोंके बीचोंबीच जो खाइयाँ खोदी गई हैं, उन्हें वे रूसियोंके शवोंसे पाटेंगे। यह भी सच है कि कर्नल क्राइस्टमैनके आदेशसे गेस्टापोके गुर्गे अस्पतालके सब रूसी रोगियों और कई-नागरिकों को 'डूशा गूब्का' नामकी हत्याकारी गाड़ियोंमें भर-भरकर ले गये और गैससे मारे गये लोगोंकी लाशोंसे कई खाइयाँ पाटी गई।"

"डूशा-गूब्काके बारेमें तुम क्या जानते हो?"

"जी, ये ५-७ टनकी गहरे भूरे रंगकी ट्रकें थीं, जिनके पीछे जस्ता-चढ़े टीनकी दोहरी दीवारोंका एक बहुत बड़ा डब्बा लगा था। पीछे एक ऐसा दरवाजा था, जिसे बन्द कर देनेपर उसमें हवा नहीं आ-जा सकती थी। इस डब्बेके फ़र्शमें छोटे-छोटे सूराखवाली लोहेकी कई नलियाँ लगी थीं, जिनका सम्बन्ध ट्रकके इंजनसे निकलनेवाले धुँएसे था। इसीके कार्बन मोनोऑक्साइडसे डब्बेमें बोरोंकी तरह चिने गए घायलों, औरतों और बच्चों को मार डाला जाता था और उनकी लाशें खाइयोंमें डाल दी जाती थीं।"

"दिन-भरमें ये ट्रकें कितने चक्कर करती थीं?"

"६ से ८ तक, या फिर जितने आदमी होते थे, उनकी आवश्यकतानुसार कम-ज्यादा भी।"

"इस मृत्यु-ट्रकसे ईगोर यारत्सेफके बच निकलनेका हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"एक दिन ग्रून्या अपने किसी साथीसे कह रही थी कि ईगोरने ट्रक

बन्द होते ही अपनी कमीजका एक हिस्सा फाड़कर अपने पेशाबसे गीला किया और उसे नाक तथा मुँहपर लगा लिया। इससे वह वेहोश होनेसे बच गया और जब अन्य सब लाशोंके साथ उसे भी एक खाईमें फेंक दिया गया, तो रातको किसी तरह वह उसमे से निकल भागा। मैंने यह बात सुन ली और कर्नल साकेलको जा सुनाई। ईगोरको जिन्दा या मृत पकडने के लिए हम लोगोंने बहुत कोशिश की, पर उसका कुछ भी पता न चला।"

"अब अदालत बर्खास्त की जाती है"—फौजी विचारपतिने अपनी कुर्सीपर से उठते हुए घोषणा की—"अगली पेशी सोमवारको होगी।" और तेज़ीसे कदम बढाते हुए वे ईगोर यारत्सेफकी ओर गये। उसका हाथ अपने हाथमे लेकर उन्होने कहा—"तवारिश, मै हूँ कर्नल म्याकोवस्की, फौजी विचारपति, तुमने मुझे पहचाना ?"

"भला तुम्हे नहीं पहचानूँगा, तवारिश म्याकोवस्की!"—कहकर ईगोरने जोरसे म्याकोवस्कीके हाथको झकझोरा।

ईगोरकी कनपटियोंको स्थिर दृष्टिसे देखते हुए म्याकोवस्कीने कहा—"बायरनके 'प्रिजनर आफ् शिलन' मे पढा था कि चिन्ता, यन्त्रणा और आघातसे रातोरात लोगोंके बाल सफेद हो जाते हैं। अब तक इस बातपर विश्वास नही होता था। आज २७ वर्षीय ईगोरके सफेद बाल देखकर बायरनके कथनकी यथार्थतापर विश्वास कर सका हूँ।"

(५)

घरोंके मलबोंके बीच तख्ते बिछाकर बनाई गई रूज्हिनकी जन-नाट्यशाला शेक्सपीयरके 'मिड-समरनाइट्स ड्रीम' के मचकी यादको ताजा करदेती थी। रूज्हिनवासियोंके चेहरोंपर आज वही स्वाभाविक मुस्कराहट थी, जिसने जारके जुल्मोंसे मुक्ति पानेपर एक दिन उनके चेहरोंको चमकाया था। आज उन्हे जिन्दगी अधिक प्यारी और जवानी अधिक स्पृह-

णीय लग रही थी। अभिनय आज उनके जीवनकी यथार्थताके अधिक निकट था और संगीत कानोंको अधिक प्रिय। आज जैसे उन्हे इनके आनन्दोपभोगका नैतिक अधिकार मिला था।

पहले मस्काओ-आर्ट थिएटरके प्रसिद्ध अभिनेता वाइसिली इवान काशालोव-लिखित 'विट वर्क्स वो' (बुद्धिसे शत्रुपर विजय) और 'दी फॉरेस्ट' (जंगल) के कुछ भाग खेले गए, और बादमे 'मैकबैथ' का चौथा अक। उसके घृणा और जुल्मोंके दृश्योंको दर्शकोंने जर्मन-अत्याचारोंकी याद ताजा होनेसे विशेष पसन्द किया।

अभिनयका आयोजन रूसी बच्चोंके प्रसिद्ध 'तिमूर-सघ' की ओरसे किया गया था। उसकी समाप्तिके बाद सघके नायक विक्टर सामोखिनने कहा—"साथियो, हमारा आजका अभिनय इस बातका सबूत है कि हम मिटे नहीं हैं, मिटेगे भी नही—दुनियाकी कोई शक्ति हमे मिटा नही सकती, क्योंकि हम स्वतन्त्र हैं और जिन्दा रहनेका हमे अधिकार है। मनुष्यने अज्ञानपर, अन्धकारपर, अन्धविश्वासपर और प्रकृतिपर विजय पाई है। उसने सागर बाँधे हैं, नदियोंके प्रवाह बदल दिए हैं, हवाओंको अपनी चेरी बनाया है, पहाड़ोंको नापा है। फिर क्या वह बर्बर नात्सियोंके कुछ दलोंके आगे हार मान लेगा ?"

संघकी मन्त्रिणी सोनिया मोनोवस्किनाने कहा—"ईगोरकी आँखे अब नही लौटेगी, ग्रून्याके हाथ भी नही लौटेंगे; पर टूटे हुए घर एक दिन फिर खड़े होकर हवा और धूपसे खेलेंगे। मुरझाए हुए फूल-पौधे फिर लहलहायेंगे। बच्चोंकी किलकारियोंसे फिर यहाँका वातावरण संगीतमय हो उठेगा। राख और लाशोंसे ढकी भूमि एक दिन फिर हरे-भरे खेतोंसे सुजला-सुफला होगी। हमारे घाव एक दिन भर जायेंगे, हमारी स्वाधीनताके लिए बलि हुए बन्धु-बान्धवोंका वियोग भी एक दिन हम भूल जॉयगे, पर लाशोंसे पटी खाइयाँ, स्त्री- बच्चोके दहनसे काली हुई घरोंकी दीवारे, माँ-बहनोंका

अपमान और मासूम बच्चोंकी हत्याएँ स्मृतिकी खूनी थाती बनकर सदा हमें बर्बरताके विरुद्ध लड़नेको उद्यत एव उत्तेजित करते रहेंगे। 'खूनके लिए खून, मौतके लिए मौत', यही हमारा नारा होगा !"

मञ्चके बीचमे खडी होकर सघकी सगीत-संचालिका एलेक्जेन्द्रोवस्कायाने अन्तिम गान आरम्भ किया। खड़े होकर सब दर्शक उसके स्वर में स्वर मिलाकर गाने लगे :—

सब मिलकर बोलो—जय !
आज रूसकी, आज विश्वकी,
आज नई मानवताकी जय !—सब०

अद्भुत आज क्रान्तिकी यह जय,
अत्याचार-भ्रान्तिकी यह क्षय !—सब०

सब मिल जीवनकी बोलो जय,
मानव औ' स्वतन्त्रताकी जय !—सब०

बिगडे भवन हँसे फिर सुखमय,
उजडे नगर बसे फिर निर्भय !—सब०

अन्तका आरम्भ

कुहरेको चीरती हुई गाड़ी बर्लिनकी ओर दौड़ी जा रही थी। डब्बेमें यद्यपि अभी बिजली जल रही थी, पर बाहरकी धुन्ध धीरे-धीरे दूर हो रही थी। बर्फसे धुले खिडकियोंके शीशे यात्रियोंको बाहरकी अस्पष्ट-सी झाँकी दे रहे थे। एक कोनेमे बैठे कप्तान फ्रिट्ज़बाख पैरिस-प्लास्टरसे बँधे अपने बाएँ हाथको गलेसे लटकी एक पट्टीके सहारे टाँगे मुँहमे दबी पाइपसे धुँएके छोटे-छोटे बादल निकाल रहे थे। उनकी आँखे जैसे बर्लिनके चिरपरिचित पड़ोसको पहचाननेका विफल प्रयत्न कर रही थी। उनके मनमे आज वह उल्लास और आह्लाद नहीं था, जो घरके निकट पहुँचनेवाले परदेशी मे होता है।

फ्रीड्रिखस्ट्रासे स्टेशनपर जब गाड़ी पहुँची, तो वे उतर पड़े। प्लेट-फार्मपर इने-गिने आदमी फटे-मैले कपड़े पहने उदास-से घूम रहे थे। पहलेकी-सी भीड़-भाड़ मानो अब अतीतकी कथा बनगई थी। कप्तानको पहले तो सन्देह हुआ कि कहीं वे किसी छोटे स्टेशनपर तो नहीं उतर गए हैं, पर स्टेशनका नाम देखकर उन्हे विश्वास हो गया कि नहीं, फ्रीड्रिखस्ट्रासे यही है। स्टेशनसे बाहर आकर उन्होंने 'आंगरिफ' की एक प्रति खरीदी। सारा मुखपृष्ठ जर्मनोंकी विजयोंके अतिशयोक्तिपूर्ण समाचारोंसे रँगा था। एक कालमके नीचेवाले कोनेमे बिना शीर्षकके दो पक्तियाँ छपी थीं—"खारकफसे हमने अपनी सेनाएँ पीछे हटा ली हैं। लाल-सेना हमारे प्रतिकूल मौसमसे लाभ उठाकर कुछ आगे बढ़ आई है।"

कप्तानका माथा ठनका—"तो खारकफ भी हाथसे गया!" फिर उन्हे खयाल आया—"नहीं, इतनी जल्दी यह कैसे सम्भव हो सकता है?"

उन्होंने इधर-उधर देखा और कुछ दूरीपर खडे एक अखबार बेचनेवाले लडकेको इशारेसे अपनी ओर बुलाया। उसके पास 'दोएचेस एलेगमाइने साईतून' था। कप्तानने उसकी एक प्रति खरीदी और बडे गौरसे उसका मुखपृष्ठ देखने लगे। वही खबर, उन्ही शब्दोंमें. इसमे भी एक कोनेमे छपी थी। कप्तानके ललाटपर सलवटें पड गई और उनके चेहरेकी उदासी और भी गहरी हो गई। एक ठण्डी साँस लेकर वे टैक्सी-स्टैण्डकी ओर चल पडे। उन्हे अपने पाँव आज अधिक भारी मालूम हो रहे थे।

अर्नेवाड बस्तीमे एक घरके सामने पहुँचकर उन्होंने टैक्सी रुकवाई। पाँच मार्कका एक नोट निकालकर ज्योंही उन्होने ड्राइवरकी ओर बढाया, उसने गिडगिडाकर कहा–"मुझे खेद है कप्तान, यहाँ तकका भाडा १७ मार्क हुआ।" कप्तानने एक मर्मभेदी दृष्टि ड्राइवरपर डाली और बिना कुछ कहे जेबसे १२ मार्क और निकालकर उसके हाथपर रख दिए।

दरवाजेपर पहुँचकर उन्होंने दस्तक दी। दो भारी पाँवोंकी आहट उनके कानोमे पडी और दूसरे ही क्षण दरवाजा खुला। कप्तानने देखा कि उनकी बूढी माँने—जो उनकी लम्बी अनुपस्थितिमे शायद, अधिक बूढी हो गई थी—आनन्दातिरेकसे गद्‌गद् हो अपने काँपते हुए दोनो हाथोंको उनकी ओर बढा दिया और चिल्ला उठी—"फ्रिट्जबाख, मेरा प्यारा बेटा!" माँके गले लगकर फ्रिट्जबाखको जैसे आज नया जीवन मिल गया। उसकी भूरी आँखोंमे छलछलाते हुए आनन्दाश्रु और मूक गिराकी विवशतासे काँपते हुए होंठ जैसे माताके सरल-सुष्ठु वात्सल्यकी दुहाई दे रहे थे।

दूसरे ही क्षण बुढियाकी दृष्टि कप्तानके बँधे हुए हाथकी ओर गई। कुछ अनमने-से भावसे उसने पूछा—"और यह हाथमे क्या हुआ रे?"

"कुछ खास तो नही, माँ!"—कप्तानने बनावटी मुस्कराहटके साथ कहा—"यों ही, जरा चोट लग गई थी।"

"पर तूने तो मुझे इसकी कभी खबर तक भी न दी", बुढियाने किंचित् अविश्वासके स्वरमें पूछा।

"भला इसकी भी कोई खबर देनेकी जरूरत थी ? ऐसी मामूली-सी चोटों......"

"बस, बस, रहने दे।" बुढियाने कप्तानको बीच ही में रोककर कहा—"मामूली चोटोंमें पैरिस-प्लास्टर बाँधा जाता होगा ? तू तो जैसे मुझे निरी भोली बच्ची ही समझ रहा है।"

कप्तानने अपना दायाँ हाथ माँके कन्धेपर रखते हुए कहा—"लो, फिर आते ही तुमने झगड़ा शुरू कर दिया न। अच्छा, तो मैं कल ही फिर पूर्वी-मोर्चेपर चला जाऊँगा और फिर शायद जिन्दा न लौटूँ।"

इस बार बुढ़ियाकी भौंहे तन गईं। उसकी आँखे लाल हो आईं। कप्तानकी ओर देखते हुए उसने दाँत पीसकर कहा—"पूर्वी मोर्चा ! मेरे सामने फिर उसका नाम न लेना। अब तो वह हमारी नई पौध और नई आशाकी समाधि बन रहा है। सत्यानाश हो इस पापी फ्यूहरेरका......।"

कप्तान अब तक जिसे मजाक समझ रहे थे, वह उनकी आहत माँकी मर्मवाणी थी और उसके पीछे मानो समस्त जर्मन माताओंका दुर्दम विक्षोभ छिपा था। किसी तरह बात बदलनेके खयालसे वे बोले..."अच्छा माँ ईवा कहाँ है ? इतनी देर तक वह दिखाई क्यों नहीं दी ?"

"ईवा, बेचारी ईवा !" एक ठण्डी साँस लेकर बुढियाने अपने आँसू पोंछे और टूटते हुए स्वरमें बोली—"ईवा अब स्वतन्त्र महिला नहीं है। उससे जबरदस्ती एक फैक्ट्रीमें काम कराया जाता है। सुबह सात बजे जाती है और रातको ८, ९ और कभी-कभी तो १० बजे तक लौटती है। खाने-पीनेको ठीक मिलता नही, इतना काम भी वह बेचारी कर नही सकती; इसलिए स्वास्थ्य एकदम गिर गया है। तू तो शायद इतने दिनो बाद सहसा उसे पहचान भी नही सकेगा।"

"और हाँ, आनाका क्या हाल है? क्या वह भी कहीं काम करती है?"

"नहीं, उसे नात्सी दस्युओंने पोलैण्ड भेज दिया है। मेरे यह कहने पर कि वह तुम्हारी मँगेतर है, अधिकारियोंने कहा कि वे एक अर्द्ध-यहूदी स्त्रीको किसी आर्य जर्मनको कदापि भ्रष्ट नहीं करने देंगे।"

"आर्य जर्मन!"—कप्तानके दाँत किटकिटा उठे। फिर कुछ शान्त होकर वे बोले—"अच्छा माँ, तुम्हारे गिरजा जानेका समय हो गया। तुम वहाँ हो आओ। मैं इस समय बहुत थका हूँ, जरा आराम करूँगा।"

"गिरजा!" एक व्यंग्यपूर्ण हँसीके साथ बुढ़ियाने कहा—"अब ग्रूनेवाडमें गिरजा है ही कहाँ? वह अब शैलफैक्ट्री बन गया है। उसके पादरीको बाध्य-रूपसे श्रम करना पडता है और उसमें रहने वाली नन्सको फौजी वेश्यालयोंमें भेज दिया गया है। अब ईसाकी जगह वहाँ गेस्टेपोका उपदेश होता है।"

"यह तुम क्या कह रही हो, माँ?"

कप्तानका हाथ पकड़कर आगे बढते हुए बुढियाने कहा—"मैं ठीक ही कह रही हूँ। अब तू आ गया है, अपने कानोंसे सब कुछ सुन लेगा। वे तो ईवा को भी पकडे लिए जा रहे थे, पर जब मैंने कहा कि वह तेरी सगी बहन है, तब कहीं बेचारीका पिण्ड छूटा। अब भी क्या वह सुरक्षित है? ईश्वर जाने, उसका और हम सबका अब क्या होना है?"

(२)

ग्रूनेवाडमें फ्रिट्जवाख़-परिवारके केवल एक ही मित्र रहते थे और वे थे डा० कोनरेड हाइन। वे बेल्जियममें लडते हुए घायल हुए थे। घुटनोंसे नीचे तक उनके दोनों पाँव काट डाले गए थे। तबसे वे अपने घरपर ही रहते थे। एक पहियोंवाली गाड़ीपर चढ़े वे दिन-भर अपने विशाल भवनके एक कमरेसे दूसरे कमरेमें घूमा करते थे। कप्तान फ्रिट्जवाख़के पूर्वी-

मोर्चेपर चले जानेके बादसे ईवा ही उनके घर अधिक आती-जाती थी। इन गाढ़े दिनोमे वे उसके और उसकी माँके लिए एक बहुत बडा सहारा थे।

ईवासे कप्तान फ्रिट्जबाखके आनेकी बात उन्हे मालूम हो गयी थी। तभीसे वे उनसे मिलनेके लिए अधीर हो उठे थे और थोडी-थोडी देर बाद उन्हे बुलानेको अपना नौकर भेज रहे थे। अन्तिम बार तो उन्होने यहाँ तक धमकी दी कि अगर इस बार कप्तान फ्रिट्जबाख उनके यहाँ नहीं गए, तो वे खुद नौकरकी पीठपर सवार होकर आयेंगे। इस बार फ्रिट्ज बाखको हार माननी पडी और ईवाके लौटनेकी अधिक प्रतीक्षा किए बिना ही वे डा० हाइनके घरकी ओर चल पडे।

कप्तानको देखकर डा० हाइनकी प्रसन्नताका ठिकाना नही रहा। उनके दाएँ हाथको अपने दोनो हाथोंमे लेकर दबाते हुए वे बोले—"तुम जिन्दा कैसे लौट आए, फ्रिट्जबाख? लाल-सेना और सर्दीने तुम्हे कैसे छोड दिया?"

"यह मेरा और तुम्हारा दोनोका सौभाग्य ही समझो, डाक्टर!" कप्तानने सामने रखी कुर्सीपर बैठते हुए कहा—"और सुनाओ, घरू-मोर्चेपर क्या हाल-चाल हैं?"

"पहले तुम पूर्वी मोर्चेकी बात तो बताओ, घरू-मोर्चेकी चर्चाके लिए तो अभी काफी समय है। जरा सुनूँ तो, हमारी जीतोकी असलियत क्या है?"

"पूर्वी-मोर्चेका हाल अब क्या सुनोगे? जब हम लोग विगत वर्ष गिद्धोकी तरह रूसियोंपर टूट पडे थे, तो जान पडा था कि उन्हे हराना कुछ ही हफ्तो या महीनोंकी बात है। जिस बुरी तरह वे लोग पीछे हटते गए, उसने हमारी इस धारणाको विश्वासमे परिणत कर दिया। पर पिछले वर्ष हमे पता लग गया कि रूसी कमजोर नहीं, बल्कि पूरी तरह तैयार नहीं हैं। वे डर या हारकर नही, बल्कि हमे अधिक भीतर खीचने और हमारी सेना तथा सामग्री खुटानेकी रणनीतिक चालके कारण पीछे हटे थे। इस वर्ष

तो उन्होंने हमारी रही-सही भ्रान्ति भी दूर कर दी है। भूखे भेडियोंकी तरह टूटते उनके सैनिको, बाजकी तरह झपटते उनके लडाकू और बोमारू याना और बवण्डरकी तरह चारों ओरसे बढते हुए उनके टकोको देखकर तो हम लोगोंके पॉव ही नही, दिल भी उखड गए हैं। कौन जाने, वे कहॉतक बढेगे ?"

"अच्छा, यह बात है ?" डा० हाइनने ऑखे फाडकर कहा।

"हॉ, अभी तो शायद हमारी हालत इससे भी बदतर होनी है। फौजी विशेषज्ञोंकी बातोंकी उपेक्षा कर फ्यूहरेरने जो यह भूल की है, वह जर्मन राष्ट्रके लिए बहुत मॅहगी पडेगी। अन्य देशोंमे हमने जो विजय प्राप्त की, उसे हम जोर-जुल्मसे किसी तरह अभी तक कायम रख रहे हैं, पर रूस मे तो अब उल्टी हवा बह चली है। कौन कह सकता है कि ये लाल सेनाऍ रूसके पुराने सीमान्तपर आकर रुकेगी या बर्लिनकी ओर बढेगी ? खार-कफसे तो आगे वे आ ही पहुॅची हैं।"

"खारकफ तो वे कई दिन पहले ही पहुॅच गई थी। अब तो उन्होंने उक्रेनके लगभग आधे हिस्सेपर दखल कर लिया है।"

"तब तो हम लोगोंको जो हजारों टन युद्ध-सामग्री और लाखों जर्मन प्राणोंकी बलि देनी पड़ी है, वह सब व्यर्थ ही जायगी।"

"जायगी नही, समझ लो गई—कभी की गई ! तभी तो फ्यूहरेर, फौजी अधिकारी और उनके खुशामदी अब बगले झॉक रहे हैं ! लोगोंमे भीषण असन्तोप और विक्षोभ फैल रहा है।"

"तब वे इस युद्धको जारी क्यो रखे हुए हैं ?"

"और उपाय क्या है ? नात्सियोंकी प्रतिष्ठा और अस्तित्व तक आज दॉवपर लगे हैं। उन्होंने बॉल्शेविज्मके विरुद्ध धर्मयुद्ध कहकर इसे शुरू किया था, पर यूरोपके अन्य पूॅजीवादी इस चालमे नही आ सके और अब तो नात्सियोंको लेनेके देने पड रहे हैं।"

"यह तो ठीक है; पर जनता आखिर उनका साथ क्यों दे रही है?"

"सुनो फ्रिट्ज़बाख,"—डा० हाइनने कुछ गम्भीर होकर कहा—"जनता स्वेच्छासे नहीं, डरके मारे और विजयकी आशासे नही, पराजय को दूर ठेलनेके लिए आज इसे जारी रख रही है। युद्धोपरान्त लोगोंको किन-किन यातनाओं, कष्टों, अपमानों और अनिष्टोंका सामना करना पडेगा, इनकी आशंका ही आज उन्हे जड़ और कायर बनाए हुए है।"

"आपकी बातोंमे कुछ सच्चाई मालूम होती है डाक्टर!"

"कुछ ही नही, बहुत-कुछ। मैं चाहता हूँ फ्रिट्ज़बाख, तुम जितने दिन भी यहाँ हो जरा घूम-फिरकर अपनी आँखोसे देखो और अपने कानोंसे सुनो कि लोग क्या कहते, क्या सोचते और कैसे खाते-पीते-रहते हैं? ६ राष्ट्रोंको पराजित और पददलित करनेवाले जर्मनीकी दशा आज कैसी है? और जिस दिन रूस, फ्रांस, पोलैण्ड, नार्वे, डेन्मार्क, वेल्जियम, हालैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया आदिके लोग इसपर प्रतिशोधका दण्ड लेकर टूट पड़ेंगे, उस दिन इसकी अवस्था क्या होगी, मैं तो उसकी कल्पना ही से कॉप उठता हूँ। एक ओर फ्यूहरेर विजय और साम्राज्यके स्वप्न देख रहा है और दूसरी ओर जनता उसे 'माइन काम्फ' के साथ ही जिन्दा दफनानेके मन्सूबे बॉध रही है।"

"तब क्या होगा डाक्टर? क्राति होगी?"

"अवश्य। जर्मन जनताके उद्धारका अब और कोई मार्ग ही नही रह गया है।"

कुछ क्षण दोनों चुप रहे। फिर डा० हाइनने पूछा—"और हॉ तुम्हारे हाथमें क्या हुआ, यह पूछना तो मैं भूल ही गया। क्या बहुत गहरी चोट लगी है?"

"नही"—डा० हाइनके पास मुँह ले जाकर कप्तानने कहा—"चोट तो बहुत मामूली है, पर छुट्टी आनेके लिए यह ढोंग रचना जरूरी था। बिना

सगीन चोटके मोर्चेपर से एक महीनेकी छुट्टी भला क्यों मिलने लगी ?"

"तुममे अभी बुद्धि है !"—डा० हाइनने मुस्कराकर कहा।

"सो बात नही है, यह बुद्धि पूर्वी-मोर्चेके अधिकाश जर्मन फौजी अफसरोंमे आती जा रही है। जब रूसमे हमारी भ्रान्तियो और भूलोंकी सीमा ही नही है तब व्यर्थ अपने प्राण गॅवानेसे लाभ क्या ?"

"तुम ठीक कहते हो, कप्तान ! मैं तुमसे पूर्णतया सहमत हूँ।"

"अच्छा, तो अब मुझे इजाजत दीजिए। कई जगह जाना है।" कहकर कप्तान उठे और डा० हाइनसे हाथ मिलाकर बाहर निकल आए।"

(३)

आदलोन-होटलमे एक फौजी अफसरसे भेटकर जब कप्तान फ्रिट्-जबाख घरकी ओर लौट रहे थे तो उन्हें काफी भूख लग आई थी। उन्होंने सोचा, घर जानेके बजाय रास्तेमे ही कही क्यों न कुछ खा लिया जाय। पर साधारण होटलोंमे खाने-पीनेकी चीजें मिलना काफी अनिश्चित था अतः वे केजरहाफ होटलकी ओर ही चल पडे।

भीतर पहुँचकर उन्होंने देखा होटलकी शान-शौकत काफी फीकी पड़ गई है। सारे हॉलमे मुश्किलसे १२-१५ आदमी बैठे थे जिनमें से अधिकाश गेस्टेपोके ही मालूम पडते थे। एक मेजके पास कुर्सी खींचकर वे भी जा बैठे। एक चेक बेहरेने आकर उनसे नात्सी सलाम किया और कुछ टूटी-फूटी जर्मनमे पूछा—"आप क्या खायेंगे ?"

कप्तानने सामने पड़े हुए मेन्यूको देखते हुए कहा—"हैम-सेण्ड-विचेज, सासेजेज, पोटेटो सैलैड, ब्रेड एण्ड बटर और कॉफी।"

"मुझे खेद है, साहब"—बेहरेने किंचित् सकोचके साथ विनम्र भावसे कहा—"ये चीजे अभी नही हैं। हाँ, ब्रेड जरूर मिलेगी, पर मक्खन, मास वगैरा नहीं।"

"और बीअर ?"

"हाँ, वह होगी ।"

"अच्छा, वही ले आओ ।"

बेहरा चला गया । कप्तानने मेन्यूको अपने सामनेसे सरका दिया और सोचने लगे कि यहाँ भी यह हाल है ? संगीतके अभावमें होटलका वातावरण और भी मनहूस-सा जान पड़ता था । कुछ क्षण बाद बेहरा बीअरसे भरा एक टम्बलर लाकर कप्तानके सामने रख गया ।

कप्तानने एक घूँट टम्बलरमें से ली और मुँह बिदकाकर बिना माल्टके उस रंगीन पानीकी ओर देखने लगे ! दूसरी घूँट लेनेका उन्हें साहस ही नहीं हुआ । टम्बलर अपने सामनेसे दूर खिसकाकर वे बेहरेके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे । ५ मिनट बीते, फिर १०, फिर १५, आखिर कप्तानका धैर्य जवाब देने लगा । उन्होंने बेहरेको पुकारा । बेहरा तेजीसे क़दम बढाता हुआ आया और गिड़गिडाकर बोला—"क्षमा कीजिएगा, मुझे जरा अधिक देर लग गई । मुझे खेद है, ब्रेड तो चुक गई ।"

"तो यह सूचना देने तुम अब १५ मिनट बाद आए हो ?"—कप्तानने साश्चर्य बेहरेकी ओर देखकर जरा उत्तेजित स्वरमें कहा—"आखिर तुम्हारा मतलब क्या है ?"

बेहरेने कोई उत्तर नहीं दिया और सशंक दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगा । कप्तानने किंचित् मुस्कराहटके साथ आश्वस्त स्वरमें कहा—"तुम मुझपर विश्वास कर सकते हो । मैं नात्सी नहीं हूँ । साफ कहो, दरअसल बात क्या है ?"

बेहरेने कप्तानकी ओर झुककर धीमी आवाजमें कहा—"इस धृष्टताके लिए आप मुझे क्षमा करें । सच बात तो यह है कि चेक बेहरोंके संघने निश्चय किया है कि हम इसी तरह ग्राहकोंको परेशान करें, ताकि वे होटलों

में आना छोड़ दे और सब जर्मन होटल बन्द हो जायँ।" यह कहकर वह फिर तनकर सीधा खड़ा हो गया और कप्तानके आगे बिल बढ़ा दिया। मुस्कराकर कप्तानने बिल देखा और १ मार्क २५ फ़ेनिंग जेबसे निकालकर उसपर रख दिए। चुपचाप उठकर वे बाहर चले आए।

पैदल, ट्राम और टैक्सीमें कप्तान फ़िट्जबाखने बर्लिनकी अनेक सड़कें और गली-कूचे छान डाले। जहाँ भी वे गए, अधभूखे लोगोंके मुर्झाए-से चेहरे, मैले और फटे कपडे एक गहरी निराशा और नीरसताका परिचय दे रहे थे। लोगोंमें जिस उत्तेजना और उत्साहको उन्होंने अपने जानेसे पूर्व देखा था, आज उसका नाम भी न था। इसी तरह घूमते-फिरते उन्होंने सारा दिन बिता दिया। शाम होते ही बर्लिनके ब्लैक-आउट ने वातावरणको और भी मनहूस बना दिया। अब उन्हे रास्ता खोजनेमें भी कठिनाई होने लगी।

कुफ्युर्स्टरडाममें काफे-वीनके सामने पहुँचकर वे सहसा रुक गए। भीतरसे कई लोगोके बोलनेकी आवाज आ रही थी। उन्होंने देखा कि काफे-वीनके आस-पासके काफे न मालूम कबके अपने साइन-बोर्डोंके साथ ही गायब हो चुके हैं। भीतर जाकर उन्होने देखा, कई बूढ़े-बूढ़ियाँ और बच्चे जहाँ-तहाँ बैठे कुछ खा-पी रहे हैं। सगीतका यहाँ भी अभाव है। कप्तान ने रेकर्डकी मशीनके पास पहुँचकर १५ फेनिंग उसमें डाले। दूसरे ही क्षण काफेकी उदासीको भग करता हुआ 'होर्स्ट वेजल' † गानका रेकर्ड बज

† नात्सियोंके इस 'अमर सगीतज्ञ' की कहानी भी बड़ी रोचक है। होर्स्ट वेजल एक बडा दुश्चरित्र और पतित नात्सी था। एक दिन एक वेश्या के यहाँ किसी दूसरे प्रतिद्वन्द्वीने उसका वध कर डाला। हिटलरने यह ड्योढी पीट दी कि कम्यूनिस्टोंने उसका खून कर डाला है और बडी शान से उसकी अर्थीका जुलूस निकाला। उसको और उसकी कलाको 'अमर' बनानेके खयालसे 'होर्स्ट वेजल' नाम देकर उसके एक गानको नात्सियों ने राष्ट्रीय गान बना दिया है।—ले०

उठा। पर कप्तानको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि कुछ पेशेवर लड़कियोंके अलावा इस गानपर कोई भी खड़ा नहीं हुआ।

एक बुढियाने उन लड़कियोंकी ओर व्यग्य-भरी मुस्कराहटके साथ इशाराकर अपने पास बैठे बूढ़ेसे कहा—"इन खड़ी होनेवाली सुन्दरियोंकी जरा शक्ल तो देखो।" बूढ़ेने शरारत-भरी दृष्टिसे उनकी ओर देखते तथा उन्हें सुनाते हुए कहा—"भला ये क्यों खडी नहीं होंगी, इन्हींके लिए तो बेचारे होर्स्ट वेजलने जान दी थी!" और दोनो कहकहा मारकर हँस पड़ते हैं। लड़कियाँ कुछ झेंप-सी जाती हैं। काफेमे एकत्रित कई व्यक्ति उनकी ओर घूरने लगते हैं, जिनकी दृष्टिसे घृणा और उपेक्षा स्पष्ट झलक रही है।

बाहर आकर कप्तान ज्यों ही बायीं ओर मुड़े, उन्होंने देखा कि कई स्त्री-पुरुष और बच्चे खडे हुए गलीके मोड़पर लगे सरकारी रेडियोसे खबरें सुन रहे हैं। अभी उन्होंने दो ही तीन कदम उठाए होंगे कि रेडियोपर डा० जोजेफ गेबल्सके विशेष भाषणकी घोषणा सुन पड़ी। वे रुक गए और कुछ ही क्षण बाद डा० गेबल्सकी सुपरिचित चीख-चिल्लाहट आरम्भ हुई। वे कह रहे थे—"महान् जर्मन राइखके सदस्यो, दुश्मनके झूठे प्रोपेगेण्डापर कभी कान मत दो। विश्वास कीजिए, हर मोर्चेपर हमारी सेनाएँ जीत रही हैं। सिर्फ पूर्वी-मोर्चेपर सर्दीकी वजहसे हम अपनी रक्षा-लाइन को जान-बूझकर कुछ छोटी कर रहे हैं। हमारी अन्तिम विजय सुनिश्चित है!"

इसी समय टूटी हुई-सी आवाजमे एक व्यक्ति चिल्लाता है—"जीग हाइल।" अर्थात् 'जय हो!' अन्य व्यक्ति कुतूहलसे उसकी ओर देखने लगते हैं। कोई कुछ नहीं कहता। वह व्यक्ति हतप्रभ हो झुँझला जाता है, पर इस ओर कोई भी ध्यान नहीं देता।

और ऊँची आवाजमे डा० गेबल्स गरजते हैं—"यह राष्ट्रकी रक्षा का युद्ध है। हमें दोनो हाथोंसे लड़ना होगा। अभी हमें और बड़ी-बडी कुरबानियाँ करनी होगी। यूरोपकी बॉल्शेविक खतरेसे रक्षा करनेका भार

जर्मन सशस्त्र सेनापर ही है।······अभी और मुसीबतों और खतरोंके लिए तैयार रहिए ····· ।"

भाषण समाप्त होते ही एक बुढ़िया जोरसे ठहाका मारकर पागलों की तरह हँसी और एक ओर चल पडी। पीछेसे तेजीसे कदम बढाते हुए दो वर्दीधारी नात्सी उसके पास पहुँचे और उनमें से एकने अर्द्ध-विद्धित स्वरमें कहा—"माँ, तुम्हे इस तरह नहीं हँसना चाहिए। इससे जनताके धीरज और साहसपर क्या असर पडेगा ?"

"ऐ वेवकूफ छोकरो, भागो यहाँसे,"—बुढ़ियाने गुर्राकर कहा—"तुम क्या जानो धीरज और साहस किस चिडियाका नाम है? जानते हो, मैं अपने पतिको पिछले युद्धमे और अपने पाँचों लडकोको इस युद्धमे खो चुकी हूँ। और यह देखो (जेबसे एक कागज निकालते हुए) उनकी मृत्यु का सवाद भी मुझे अब कई हफ्तों बाद मिला है, और वह भी इस चेतावनी के साथ कि मैं इसकी चर्चा न करूँ, शोक न मनाऊँ और काले कपड़े भी न पहनूँ! मेरी तरह न मालूम कितनी माताओंकी गोद आज सूनी हो गई है और तुम लोग अभी और कुरबानियाँ करने ····· ।" सहसा एक नात्सी युवकका हाथ बुढ़ियाके मुँहपर ताला बनकर चिपक गया और दोनो उसे घसीटते हुए एक ओर अँधेरेमे गायब हो गए।

[४]

फ्रीड्रिखहाफन पहुँचकर कप्तानकी जानमें जान आई। स्टेशनसे बाहर आकर जैसे वे निश्चित नही कर सके कि उन्हे किधर जाना है। उनके पाँव निरुद्देश्य उठ और गिर रहे थे। मस्तिष्कमे एक बवण्डर-सा आया हुआ था। कभी उन्हे अपनी माँका खयाल आता, कभी ईवा और आना का और कभी पूर्वी-मोर्चेका। नहीं, अब वे फिर वहाँ नही लौटेंगे, कदापि नहीं। उनकी माँ, ईवा, आना आदिका जो भी हाल हो, लोग भले ही

उन्हें कायर और ग़द्दार कहें। नात्सियोंकी दुराकांक्षाके लिए वे अपने प्राण नहीं गँवायेंगे।

हिमाच्छादित पर्वतमालाओंसे आवेष्टित कान्स्टेन्स-झीलका सुस्थिर-निर्मल जल रूपहले चौखटेमें जड़े एक बहुत बड़े दर्पणकी भाँति चमक रहा था। चन्द्रमा उसमें अपना मुँह देखकर जैसे मन-ही मन-हँस रहा था। झीलके किनारे खड़े होकर कप्तानने हसरत-भरी दृष्टिसे अमल-धवल हिम-मण्डित पहाड़ियोंको देखा, फिर झीलके सुनिर्मल जलको और फिर मृदु-मन्द समीरमें गहरी साँस खींचकर जैसे अपने फेफड़ोंमें शुद्ध वायु भरनेका अभ्यास करने लगे। अभी उनके हृदय और मस्तिष्कका संघर्ष रुका नहीं था, अपितु और बढ़ता ही जा रहा था।

इसी समय पीछेसे किसीके आनेकी आहट सी सुनाई दी। कुछ दूरीपर कोई आदमी उत्तर-पूर्वकी ओर जाता हुआ दिखाई पड़ा। कप्तान फिर झीलकी ओर देखने लगे। मन-ही-मन वे कहने लगे—"कायर शायद मैं नहीं हूँ। पर वीर और कायरकी पहचान तो समयपर ही होती है। आज जो अपनी जान जोखिममें डालने चला हूँ, वह क्या अपने लिए? ६-७ मील चौड़ी यह झील क्या आसानीसे पार होगी? जो भी कुछ हो, अब अधिक सोच-विचारका समय नहीं है। आजकी रातके साथ ही मेरी छुट्टी का आख़री दिन भी पूरा हो जायगा। कल या तो मेरी लाश इस झीलकी सतहपर तैरती होगी और माँ, ईवा, आना और शायद डा० कोनरेड हाइन भी गेस्टेपोकी हवालातमें होंगे, या......"

खाँसकर कप्तानने अपना गला साफ किया और इधर-उधर देखने लगे। एक बार उन्होंने पीछे देखा और सहसा झीलमें छलाँग लगा दी। इस समय उनके शरीर और मनकी क्या स्थिति थी, वह वर्णनातीत है। कप्तान अच्छे तैराक थे, अतः दृढ़ विश्वासके साथ आगे बढ़ने लगे। रात का सन्नाटा उनकी गतिसे होनेवाली हल्की-सी छप्-छप्से रह-रहकर भंग हो

रहा था, पर उस ओर ध्यान देनेवाला इस समय आस-पास कोई भी नहीं था।

× × ×

जब कप्तानकी आँख खुली, तो उन्होंने एक छोटे-से लकड़ीके घर मे अपने-आपको आगके समीप एक चारपाईपर लेटे पाया। पास ही एक बूढा स्विस बैठा पाइप पी रहा था। कप्तानको जगा देखकर उसने कहा—"क्यों दोस्त, अब कैसी तबीयत है? सर्दी तो नहीं मालूम होती?"

"नहीं"—कप्तानने सिर हिलाकर कृतज्ञतापूर्वक कहा—"पर भले वृद्ध, तुमने आखिर मुझे क्यों बचाया?"

"जर्मन-पुलिसके हवाले करनेके लिए।" बूढ़ेने शरारत-भरी आँखो से हँसते हुए कहा।

कप्तान ज़रा गम्भीर होगए। उन्हे चिन्तित देखकर बूढ़ेने सहज मुस्कराहटके साथ कहा—"किसी बातकी चिन्ता मत करो, दोस्त! मेरे घरमें अब तुम्हें किसी भी बात या व्यक्तिका डर न होगा।"

कप्तान एक क्षण चुप रहे। फिर बूढ़ेकी ओर देखकर बोले—"इसके लिए मैं आजीवन तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा। पर यह तो बताओ कि तुमने आखिर मुझे बचाया किस लिए?"

"तुम्हारे परिवार, प्रेमल पत्नी और निरवलम्ब जर्मनीके लिए! मैं चाहता हूँ कि इस विनाशकारी युद्धके बाद भी तुम-जैसे कुछ स्वस्थ-सबल युवक बच जायँ। नवीन जर्मनीकी आशा-आकाक्षा अब तुम्हीं-जैसे पुरुष हैं।"

कप्तानकी आँखें कृतज्ञतासे भर आईं।

वे दोनों

लंदनकी जनाकीर्ण कोलाहल-मयी सड़कोंपर अपनी साइकलकी घंटी टनटनाते हुए आरामसे धीरे-धीरे पैडल मारते और इधर-उधर उत्सुक दृष्टि डालते हुए जानेवाली एमीलियाकी आँखोंके आगे सदा अपने ब्राइटन के उस सुन्दर मकान और छोटे-से बगीचेका दृश्य भूला करता था, जहाँ कि उसने अपने जीवनके १६ वर्ष न मालूम किन-किन परिस्थितियोंमें बिता दिये थे। टेम्सका पुल पार करते समय अक्सर उसे अपने घरके पिछवाड़ेके उस तालाबका ध्यान आ जाता था, जहाँ उसने पहले-पहल तैरना सीखा था और जिसमें घंटों अपने करतब दिखाकर वह घर वालोंको परेशान कर दिया करती थी। उसके कानोंमें ग्रामीणोंके गीत और ब्राइटनके प्रोटेस्टेंट चर्चकी घंटीकी आवाज आज भी गूँज रही थी।

युवावस्थाके कुछ सुनहले स्वप्न और एक अज्ञात उत्सुकता उसे लंदन खींच लाई थी। यहाँ वह रीजेंट स्ट्रीटमें अपनी मौसीके साथ ठहरी थी। अपने किसी सम्बन्धीकी सिफारिशसे वह एडवर्ड-मेमोरियल अस्पतालमें नर्सका काम सीखने लगी थी। यहीं उसका अस्पतालके स्टोर-विभागके एक नौजवान क्लर्क हेनरीसे परिचय हो गया। इस परिचयकी घनिष्ठता और फिर प्रेममें परिणत होते देर न लगी और कुछ ही हफ्तोंमें एमीलिया और हेनरी का रोमांस समूचे अस्पतालमें एक रसीले तज्करेका आधार बन गया!

जुलाई मे हेनरीकी नौकरी छूट गई। पर बादमे मालूम हुआ कि यहाँसे नौकरी छूटनेसे पहले ही उसने एडिनबर्गमें अपने लिए एक अच्छी जगह खोजली है। यहाँ उसे केवल ३ पौंड साप्ताहिक मिलते थे, जबकि एडिनबरा में उसे ६ पौंड साप्ताहिकका नियुक्ति-पत्र मिल चुका था। हेनरी

और एमीलियाका प्रेम-सम्बन्ध अब उस स्टेजको पहुँच चुका था जबकि दोनोंका एक-दूसरेके बिना रहना कठिन ही नही असंभव-सा हो चला था। अतः हेनरीने एमीलियासे प्रस्ताव किया कि वह उससे विवाह करले, ताकि दोनो सुखपूर्वक एडिनबरामें जाकर रहें। ६ पौंड साप्ताहिक वेतन मे दो आदमियों का गुजर-बसर भलीभॉति हो सकता है।

पहले तो एमीलिया इस बातके लिये तैयार हो गई, पर जब उसने अपनी मौसीकी स्वीकृतिके लिए यह प्रस्ताव उसके आगे रक्खा, तो उसने समझाया कि अपनी ट्रेनिग समाप्त करने के बाद यदि वह विवाह करे तो ज्यादा अच्छा हो। केवल डेढ़ महीने ही मे तो वह क्वालीफाइड-नर्स हो जायगी। अभी हेनरीके साथ एडिनबरा चले जानेसे उसकी अब तक की मेहनत सारी बेकार जायगी और वह कभी स्वावलम्बी नहीं हो सकेगी। अभी प्रेमने उसे अधा बना रक्खा है, पर क्या हेनरीपर वह आजीवन निर्भर कर सकेगी?

एमीलियाके विवेकने उसके प्रेमके आवेगपर विजय पाई और यह तय हुआ कि अभी हेनरी अकेला एडिनबरा चला जावे। बडे दिनों की छुट्टियॉ वह लन्दनमें ही बिताये, क्योंकि तबतक एमीलिया की ट्रेनिंग भी खतम हो जायगी और विवाहके लिए वह समय भी अधिक उपयुक्त रहेगा। यह बात हेनरीको कुछ अटपटी तो जरूर लगी, पर एमीलिया और उसकी मौसीको एकमत और निश्चल देखकर उसे अपनी बातपर जोर देनेका साहस नहीं हुआ। अपना-सा मुँह लेकर वह चुपचाप एडिनबराके लिए चल पडा।

[२]

यूरोप के राजनीतिक क्षितिजपर उठी हुई अशान्तिकी बदलीने फैलकर शीघ्र ही समूचे यूरोपको अपनी छायासे ढक लिया। चारों ओर महा-युद्धकी तैयारियॉ नजर आने लगी। युद्धकी घोषणा तो कई दिनो बाद हुई,

पर उसका आतंक लन्दनमें बहुत पहले ही छा गया। ट्रामों और ट्रकोंकी आवाजसे ही लोग चौंककर इस तरह आकाशकी ओर देखने लगे जैसे कि लन्दनकी गगन-चुम्बी इमारतोंको धराशयी करनेके लिए शत्रुओंके बम-वर्षक आ पहुँचे हों। हर आदमी को गैस-मास्क दे दी गई और हवाई हमलों से बचनेके अभ्यास शुरू हो गये।

एमीलिया अभी अपना कर्तव्य निश्चित नहीं कर पाई थी। एक ओर हेनरीका प्रेम उसे खींच रहा था और दूसरी ओर मातृभूमि की ममता। हेनरीकी एडिनबराके लिए रवाना होते समयकी सजल आँखें आज भी जैसे उसे घूर रही हों! पर दूसरी ओर लंदनके नाशकी कल्पना उसे कँपा देती थी। उसकी आत्मा कह रही थी कि निरंकुश स्वेच्छाचारिता, अधिकार-मद और दुर्बलोंके खूनपर पनपी हुई नात्सीवादकी विभीषिकाके नाशके बिना एक लंदन ही नहीं, न मालूम कितने नगर मिट्टीमें मिल जायेंगे?— एक पोलेंड ही नहीं, न मालूम कितने छोटे-मोटे राष्ट्र सदाके लिए दुनियाँ के नक्शेसे मिट जायेंगे?

रात-भर एमीलियाको नींद नहीं आई। वह अपना कर्तव्य निश्चित करनेमें अपनी मानसिक कमजोरी और कायरताका शिकार हो रही थी। पर रात भरके विचार-विमर्षके बाद उसने तय किया कि हेनरी या उसके प्रेम से स्वदेशकी रक्षाका प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है। अपने मनोविकारोंके जालमें फँसकर वह देशके प्रति उदासीन और कृतघ्न नहीं हो सकती। अब उसके दिमागकी परेशानी और बोझ कुछ हलका हो गया था।

सुबह बिस्तरसे उठनेपर उसने अपने आपको अधिक शान्त और स्वस्थ अनुभव किया। जल्दीसे नित्य-कर्मोंसे निवृत्त होकर वह अपनी मौसीके पास गई। उससे उसने जल्दी-जल्दी दो चार बातें कीं और अस्पतालकी तरफ़ चलदी।

अस्पतालके अहातेमें अभी उसने पाँव रक्खा ही था कि सामने बरा-

मदेकी सीढ़ियोंपर उसने हेनरीको खड़े-खडे मुस्कराते देखा। आज हेनरीको देखकर वह हँसी नहीं। उसका चेहरा गम्भीर ही बना रहा। इस समय उसे हेनरीको यहाँ देखनेकी कोई आशा नहीं थी। पास पहुँचनेपर हेनरीने आगे बढकर कहा—"एमीलिया, तुम खुश तो हो? आज इतनी देर कहाँ लगाई"

"कहीं नहीं" एमीलियाने सधी हुई आवाजमें कहा—"पर तुम इस समय यहाँ कैसे?"

पहले तो हेनरी एमीलियाका यह रुख देखकर कुछ सहमा, फिर बनावटी मुस्कराहटसे बोला—"एमी, तुम्हें देखने चला आया। जानती हो, मुझे तो कानूनन लडाईमें जाना ही पडेगा। फिर विवाह कर ये कुछ दिन हम आनन्दपूर्वक क्यों न बितावें?"

"यह विवाह और आनन्दका समय है हेनरी?" एमीलियाने अपनी भौंहें चढाते हुए कहा—"तुम्हे क्या होगया है? यह कहते तुम्हे शर्म नहीं आती?"

"लेकिन एमी," हेनरीने साहस करके कहा—"इसमें सिर्फ मेरा ही स्वार्थ तो नहीं है। अगर मैं जीवित लौटा तब तो हमारा जीवन सुखपूर्वक बीतेगा ही, पर अगर कहीं मैं लड़ाई में काम आ गया, तो तुम्हें पेंशन मिलेगी। तुम्हारी मुसीबतें भी हल हो जायँगी।"

"इस कृपा और दूरदर्शिताके लिए धन्यवाद, हेनरी!" एमीलियाने ज़रा मुस्कराकर कहा—"पर मुझे क्षमा करना, तुमने मुझे समझनेमें गलती की है। एमी तुम्हारे नामकी पेंशन लेकर आराम और अकर्मण्यतासे जिन्दगी बिताने वाली नहीं है। तुमसे अधिक वह अपने देशसे प्रेम करती है। इस सकटके समय वह हाथपर हाथ रखकर चुप बैठने वाली नहीं।"

एमीलियाने अपनी कलाईपर बँधी घड़ीमें समय देखा और बोली—"मुझे काफी देर होगई है, हेनरी! अभी क्षमा करो, फिर किसी वक्त मिलूँगी।"

एमीलियाने अभी एक ही कदम आगे रक्खा था कि हेनरीने भरी हुई आवाज मे कहा—"लेकिन एमी; तुम वही एमी हो? तुम बदल तो नहीं गई हो? आज तुम कैसी बाते कर रही हो?"

"ओह!" एमीने फीकी मुस्कराहटके साथ कहा—"तुम्हारी सब बातोंका जवाब पीछे दूंगी। अभी मुझे जाने दो, देर हो रही है। क्षमा करना।" एमीलिया तीरकी तरह निकल गई। हेनरी आँखे फाड़कर देखता रह गया।

(३)

एमीलियाकी मौसी बैठी बैठी सब बाते बड़े ध्यानसे सुनती रही। एमीलिया उससे बाते भी करती जाती थी और एक सूट-केसमे अपने कपडे तथा छोटी-मोटी आवश्यक चीजे भी रखती जा रही थी। जब वह चुप हुई तो उसकी मौसीने बडे निराशापूर्ण स्वरमे कहा—"तू जाने तेरा काम जाने, एमी। जब तू किसीका कहना ही नहीं मानती और हमेशा अपनी जिदपर ही चलती है तो फिर क्या कहा जाय? पर कमसे कम अपने माँ-बापसे इस सम्बन्धमें सलाह ले लेनी थी।"

"लेकिन इसमे ऐसी बात क्या है, आँन्टी? मैं कोई बुरा काम तो कर नहीं रही।"

"न सही बुरा, पर अच्छे काम भी क्या सबके बसके होते हैं? मैं शर्त्त लगाकर कहती हूँ कि इस काममें तू सफल नहीं होगी और अपनी जान व्यर्थमे गँवायगी।"

"पर आँन्टी, काम करनेसे पहले सफलता-असफलताका अन्दाजा क्योंकर लगाया जा सकता है?"

"तू जर्मनोंको जानती नहीं। वे बड़े खूँखार लोग हैं। वहाँ खुफि-

यागीरी करना औरतोंके बसका काम नहीं। वहाँके गेस्टेपोका नाम तो तूने सुना होगा?"

"सब कुछ सुन रक्खा है ऑन्टी, पर क्या जर्मनीकी स्त्रियोंने हमारे यहाँ सफलतापूर्वक खुफियागीरी नहीं की है? जान ही तो जायगी। इससे ज्यादा और क्या होगा?"

"तो जान जाना तेरे खयालमें कुछ भी नहीं, क्यों? अभी तेरी आँखे पीछे हैं, पीछे। जब जानपर बन आयगी, तब देखना छठीका दूध याद आता है या नहीं।"

"लेकिन ऑन्टी, तुम मुझे यह सब कहकर डरा क्यों रही हो? तुम्हे तो आशीर्वाद देना चाहिए, कि मैंने जो जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है, उसे सफलतापूर्वक निभा सकूँ।"

इस बार उसकी मौसी कुछ नहीं बोली। दोनोंने जाकर खाना खाया और एमीलिया अपना सूट-केस उठाकर चलदी।

(४)

बासलके पास एमीलियाने राइन नदी पार की। न मालूम कितने दिनोंसे उसे अकेले ही सफर करना पड़ रहा है। फ्रॉस तक तो उसे किसी प्रकारकी कठिनाईका सामना नहीं करना पडा क्योंकि युद्ध छिडनेके बाद से स्विस-सरकारने अपने देशमें विदेशियोंका आना बिलकुल बन्द कर दिया है। एक नौजवान स्विस-संतरीको जिस ढंगसे उसने झाँसा दिया, वह बात यादकर अब भी उसे हँसी आ जाती है।

अभी राइनके तटपर पहुँचकर वह कपडे बदल ही रही थी कि सामनेकी सडकसे एक घोडागाडी आती हुई दिखाई दी। एमीलियाने जल्दी-जल्दी कपडे सूट-केसमे रक्खे और धीरे-धीरे नजदीक आने वाली

गाडीकी प्रतीक्षा करने लगी। जब गाडी उसके निकट आई तो उसने देखा कि उसमें बैठा हुआ वर्दीधारी जर्मन गाड़ीवान उसकी ओर घूर रहा है।

अपनी टूटी-फूटी जर्मनमें एमीलियाने कहा—"तुम किधर जा रहे हो? मेरी कुछ सहायता नहीं कर सकोगे?"

गाडीवानने गाड़ी रोकी और कूदकर नीचे आ गया। एमीलियाको दो-एक क्षण निर्निमेष दृष्टिसे देखकर उसने एक जोरका ठहाका मारा और बोला—"हलो एमी, तुम इस वक्त यहाँ—इस पोशाक में—कैसे?"

एमीलियाके पाँवों तलेसे जैसे जमीन ही खिसक गई हो! उसने घबराकर गाडीवानकी तरफ़ देखा। उसके मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकला। यह देखकर गाडीवान फिर हँसा और अपनी नकली मूँछे हटाता हुआ बोला—"तुमने हेनरीको पहचाना नहीं, एमी? तुम भी तो आसानीसे नहीं पहचानी जा सकतीं।"

एमीलिया जोरसे हँसी और हेनरीके ओठोंपर अँगुली रखते हुए बोली—

"चुप! तुमने सचमुच डरा दिया था। तुम किधर जारहे हो?"

"मैं जर्मनीकी ट्रासपोर्ट-सर्विसमें हूँ। यह घास जर्मनीके रिसालेके लिए जा रही है, जो कि यहाँसे कुछ मीलके फासलेपर स्टूटगार्टकी दिशामें डेरा डाले पड़ा है।"

"इसमें छिपाकर तुम मुझे वहाँ तक नहीं ले जा सकते?"

"क्यों नहीं, लेकिन कैम्प तक पहुँचनेसे पहिले संतरी, घासमें कोई छिपा है या नहीं, यह देखनेके लिए इसमें सगीन घोंपकर देखता है।"

"संगीन किधरसे घोंपता है—एक ही तरफ़से या चारों तरफसे?"

"नहीं, सिर्फ एक ही तरफसे—जिधर कि वह खड़ा रहता है। वह अक्सर बायीं ओर ही खड़ा रहता है।"

"अच्छी बात है, मैं कुछ दायी ओरको घासके बीचमे-लेट जाती हूँ। तुम मेरे चारों तरफ़ घासके पूले इस तरह रखदो कि किसी भी तरह दीख न सकूँ। सतरी को बहका सको, तो और भी अच्छा है।"

घासकी आठों गाड़ियाँ जब कैम्पके पास पहुँचीं तो एक सतरीने जोरसे चिल्लाकर पूछा—"किसीकी गाडीमे कोई आपत्तिजनक चीज तो नहीं है?"

सबने एक स्वर से कहा—"नही।"

संतरी बोला—"अच्छी बात है, निकल जाओ।"

अभी पहिली गाड़ी के घोड़ेने पॉव बढाये ही थे कि दूसरे सतरीने पहलेको डॉटते हुए कहा—"तुम हमेशा ऐसी ही सुस्ती करते हो। अरे इस वक्त थोडी-सी गफलतसे भी बहुत बड़ा बिगाड़ हो सकता है। क्यो नहीं सब गाड़ियोंमे सगीन घोंपकर देख लेते? कोई शका या सदेह तो फिर न रहेगा।"

"अच्छा दादा, जैसे तू कहे, वैसा ही सही"—यह कहकर सतरीने अपने कन्धेपर से बन्दूक उठाई और पहिली गाड़ीके पूलोंमे डालकर निकालते हुए कहा—"ले देख लिया न, क्या धरा है इनमे?"

दूसरा सतरी इसपर कुछ नही बोला।

पहले सतरीने आगे बढ़कर बारी-बारीसे दूसरी गाड़ियोंके घासमे भी सगीन घोंपी, पर कहीं कुछ न मिला। जब तक वह आठवीं गाडी तक पहुँचा, तो उसका हाथ काफी थक चुका था। इसमें उसने सगीन घोंपी और कोई आधा मिनट सुस्ताकर निकाल ली। इस बार उसे घासमे कुछ सख्ती-सी महसूस हुई। गाड़ीवानको सम्बोधित कर वह बोला—"क्यो भाई, कोई ऐसी-वैसी चीज तो नहीं है?"

"नही सार्जेण्ट, कुछ नही है। मेरे घासके पूले ही कुछ सख्त बँधे हैं। होनेको भला इनमे क्या हो सकता है?"

सतरीने लापरवाहीसे कहा—"अच्छा, चल आगे बढ़!"

× × ×

कुछ ही दिन बाद जर्मनीके उत्तर-पश्चिममें गोलाबारी शुरू होगई और दक्षिणमें जेप्लिन-वर्क्स तथा कई अन्य कारखानोंपर 'अज्ञात' देशके हवाई जहाजोंने बम बरसाये पर कितने आदमी एमीलिया और हेनरीको जानते हैं? शायद आज वे जीवित भी न हों!

पीकिंगका भिखारी

चीनकी युगातीत सभ्यता और संस्कृतिका वह केन्द्र, चीनके नव-जागरण और नव-शिक्षाका वह प्रतिष्ठान तथा मन्चू-नरेशोंके वैभव-विलास का वह प्रतीक आज पतझडकी वाटिकाके समान श्री-सौन्दर्य-विहीन हो सिसक रहा था।

आज पीकिंगके सुरम्य नगरका भग्नावशेष श्मशानसे भी अधिक सूना और भयावह प्रतीत हो रहा था। नगरके चौराहोंपर मलबोंके ढेर न मालूम कितने दिनोंसे सड और सुलग रहे थे? जिधर दृष्टि जाती थी बुरी-तरह क्षत-विक्षत खण्डहरोंकी डरावनी रूप-रेखा देखकर आहत हो लौट आती थी। शताब्दियोंका परिश्रम आज धूलमें मिल चुका था। न मालूम कितने कोट्याधीशोंका वैभव देखते ही देखते जल बुद्बुद्की तरह निःशेष हो चुका था।

किन्तु पीकिंग नगर मरा नहीं था। मृत-प्रायः सिसकियाँ लेते हुए उस नगरकी रक्त-विहीन नसों-सी सड़कोंपर रेंगने हुए कीड़ोंकी तरह कभी-कभी कोई चीनी—या कुछ चीनी युवक युवतियोंका दल—भयविह्वल हरिणी की भाँति कातर दृष्टिसे इधर-उधर देखता हुआ दबे पाँव दौड़ता निकल जाता था।

जब-तब जापानी सैनिकोंसे भरी मोटर-लारियों या सड़कपर खटा-खट शब्द करते हुए जापानी सैनिकोंके गुजरनेसे नगरके किसी भागकी शून्यता कुछ क्षणके लिए जरूर भग हो जाती थी, अन्यथा चारों ओर रात-दिन श्मशानकी-सी नीरवता छायी रहती थी।

जब कभी पास या दूर बन्दूक चलनेकी आवाज सुनायी देती, सुनने

वाले चीनी अपने किसी देशभक्त भाईका जापानी राक्षसों द्वारा वध किये जानेका अनुमान करते—एक क्षण वे साँस रोककर खूनका घूँट पीकर रह जाते और मन-ही-मन जापानियोंको कोसते हुए अपने कामोंमें लग जाते।

पर उन अभागोंके लिए काम भी क्या था ! जापानियोंकी गालियों, लात-घूसों और गोलियोंका निशाना बनना या भूखों मरकर अपने खाद्य और स्त्रियोंके मूल्यपर जापानियोंको रँग-रलियाँ करते देखना ! इस स्थिति ने न मालूम कितने चीनियोंको दर-दरका भिखारी बना दिया था ! जैसे उनका आत्माभिमान उनके पेटकी ज्वालाकी लपटोंमें धुआँ बनकर उड़ गया था।

× × ×

एक अर्द्ध विक्षिप्त-सा चीनी फटे-पुराने चिथड़ोंमें अपनी अस्थि-शेष देह छिपाये धीरे-धीरे मलबेके एक ढेरकी ओर बढ़ा जा रहा था। उस की चमकती हुई छोटी-छोटी आँखें चौकन्नी हो कभी आगे, कभी पीछे, कभी दायें, कभी बायें इस प्रकार देख लेती थीं कि कहींसे कोई उसे देख तो नहीं रहा है।

मलबेके पास पहुँचकर वह रुक गया और एक तीक्ष्ण दृष्टिसे फिर चारों ओर देखा। धीरेसे वह झुका, दाहिनी जेबसे एक पिस्तौल निकाला और उसे एक क्षण तक देखता रहा—मानो कह रहा हो कि बिना कारतूसों के तेरा होना न होना बराबर ही रहा। फिर उसे मलबेमें हाथ डालकर छिपा दिया।

दूसरे ही क्षण बाँयीं जेबसे उसने मिट्टीकी तम्बाकू-भरी एक चिलम निकाली, जिसके साथ जापानी माचिसकी एक पेटी भी निकल आयी। अभी उसने चिलम सुलगानेको दियासलाई जलायी ही थी कि फौजी बूटका एक जोरदार आघात उसके कूल्हेपर पड़ा, जिससे वह औंधे मुँह मलबेके ढलाव पर जा गिरा और चिलम तथा दियासलाई दोनों उसके हाथसे छूट गयीं।

इसी समय किसीने कड़ककर कहा—"बदमाश कहींका, छिपे-छिपे यहाँ चोरकी तरह क्या कर रहा था ?"

चीनीने अपने आपको सँभालते हुए पीछे मुड़कर देखा—एक जापानी सन्तरी हाथमे सगीनसे लैस बन्दूक लिए खूनी आँखोंसे उसकी ओर घूर रहा है।

उसने गिड़-गिड़ाकर कहा—"कुछ तो नही सरकार, हवामे चिलम सुलग नहीं रही थी, सो हवाका रुख बचा, झुककर, उसीको सुलगा रहा था।"

सन्तरीने इधर-उधर नजर दौड़ायी, तो वहाँ मिट्टीकी एक चिलम-जिसमेकी तम्बाकू चारो ओर बिखर गयी थी—और कुछ दियासलाइयो को इधर-उधर फैला पाया। और वहाँ उसे कुछ नहीं दीखा।

इसी समय मोटर-साइकिलपर जापानी गश्ती फौजी-पुलिसका एक सिपाही भी उधर आ निकला। चीनीने बड़े अदबसे उसे सलाम किया, जिसका कोई उत्तर न दे उसने सन्तरीको सम्बोधित करके कहा—"क्या बात है, शियोतो ?"

"कोई खास बात तो नही, यह चीनी यहाँ छिपे-छिपे न मालूम क्या कर रहा था, इसीकी खबर लेने इधर आ गया था।"

सिपाहीने एक क्षण उस अधेड़ और भिखारीका भेप धारण किये चीनीकी ओर देखा, फिर ठहाका मारकर हँसा और सन्तरीसे बोला—"शियोतो, मालूम होता है तुझे इन चीनियोंकी अभी तक पहचान ही नही हो पाई। अरे, यह तो पीकिंगका एक निरीह भिखारी है, जो दिन-भर सारे नगरकी खाक छानता फिरता है। मैं तो इसे दिनमे कई-कई बार देखता हूँ। चल छोड, जाने भी दे इसे। आज एक नई चीनी लड़की हाथ लगी है और पीने-पिलानेका बन्दोबस्त भी है। चलना हो तो आ मेरे साथ।"

"वाह मेरे दोस्त !" जापानी सन्तरीकी कठोर मुद्रा अनायास

सब देखा-सहा नहीं जाता । रोज-रोजका यह बलात्कार·· एक, दो, दस, पचास ·· :··राक्षस, और ·· · · ! माँ ·······नहीं, नहीं · ···"

"पर तू भूलती है, बेटी"–माँने अपनी उठती हुई चीखको दबानेका प्रयास करते हुए लड़खड़ाती जबानमे कहा—"वे दरवाजा तोड़कर क्या नहीं आ सकते ? याद नहीं, अभी परसों ही उन्होंने दरवाजा खोलनेमें जरा-सी देर होनेपर क्या सजा दी थी ?"

बरसती हुई आँखों और लडखडाते हुए पाँवोको धीरे-धीरे उठाते हुए लिन-सीकी माँ दरवाजेकी ओर बढी । उसकी सारी देह बेतकी तरह काँप रही थी । किवाड़ाके पास जाकर जैसे वह पत्थरकी जड़-मूर्त्ति बन गई और उसके हाथ ऊपर उठनेसे इन्कार-सा करने लगे । इसी समय उन्होंने बाहर किसीको बडे आवेशके साथ, किंतु दबी आवाजमे, कहते सुना–"श्रीमती सू चेह जल्दी कीजिए, जल्दी । देर होनेपर सारा काम खराब हो जायगा।"

पलक मारते ही जैसे लिन-सीकी माँके शरीरमे बिजली दौड गई और हाथाने यन्त्रवत् आगे बढकर दरवाजा खोल दिया । आँधीकी तरह आगन्तुक भीतर आया और मजबूतीसे किवाड़ बन्दकर हाँफते-हाँफते बोला—"श्रीमती सू-चेह, आप कभी-कभी बड़ी नादानी कर बैठती हैं । अभी जरा और देर होनेसे अगर मैं पकड़ लिया जाता, तो कैसा होता ? आपको कुछ तो सोचना चाहिए ।"

"मुझे क्षमा कीजिएगा डाक्टर युन-शान ! मैं कुछ और ही समझी थी । वाकई मुझसे बड़ी सगीन गलती होते-होते बची ।"

"इसमे क्या शक है ?"—आगन्तुकने मुस्कराकर कहा ।

"डाक्टर युन-शान !"—कहती हुई लिन-सी दौडकर उनसे आकर लिपट गई और बिसूरती हुई बोली—"मुझे इन राक्षसोंसे बचाइए । यह सब जोर-जुल्म मुझसे अब अधिक नही सहा जाता । अब हद हो चुकी डाक्टर—ईश्वरके लिए, मुझे बचाइए।"

"लिन-सी बेटी"--डाक्टर युन-शानने लिन सीकी पीठ थपथपाते हुए कहा—"धीरज धरो। मैं क्या कुछ समझता नहीं, तुम्हारी यह पीडा क्या मेरी यन्त्रणा नहीं ? पर बेटी, आज तुम्हारी ही तरह न मालूम कितनी चीनी माँ-बहनोंके सतीत्वकी रक्षा करना मेरे जीवनका मुख्य प्रश्न बन गया है। किन्तु किया क्या जाय, जबतक हमारे पास साधन नहीं, जी कड़ाकर यह सब सहना ही होगा।"

"यह सब सहनेसे तो मर जाना अच्छा है, डाक्टर !"

"लेकिन कितनोंके लिए, मेरी भोली बच्ची ? क्या महान् चीनकी थाती को पशु-बलकी वेदीपर होमकर हम-तुम अमर हो जायेंगे ? नहीं, यह गलत है। आओ, महान् चीन जीवित रहे, इसके लिए प्राणोत्सर्ग करना सीखें।"

"हमारा चीन फिर जगेगा, फिर जी उठेगा, बेटी"—श्रीमती सू चेहने अपने आँसू पोछते हुए उत्साह-पूर्वक कहा।

"इस विश्वासके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, श्रीमती सू चेह।" डाक्टर युन-शानने सस्मित गभीर मुद्रासे उनकी ओर देखते हुए कहा।

बातें करते-करते तीनों भीतरवाले कमरेके द्वारपर आ पहुँचे थे। डाक्टर युन-शानने पेटके पास बेल्टमें खोसी हुई एक पिस्तौल निकाली और कोटके भीतरकी जेबसे एक भरी हुई बोतल। दोनोंको श्रीमती सू-चेहको देते हुए उनके कानके पास मुँह लेजाकर फुस-फुसाते हुए कहा—"यह है पिस्तौल और यह शराबकी बोतल। आज जब वे आएँ तो आप दोनोंको पहले खूब शराब पिलाएँ और फिर इस पिस्तौलसे दोनोंका काम तमाम करदें। इसमें केवल दो ही कारतूस हैं। पर देखिए, दोनोंकी बन्दूकें पहले अपने क़ब्जेमें करले और उन्हे पिछवाडे फेक़ दें। मैं अँधेरेमें वहाँ छिपा रहूँगा।" फिर लिन-सीको सम्बोधित करते हुए वे बोले--"लिन-सी बेटी, महान् चीनकी खातिर तुम्हारी माँको और तुम्हे यह महँगी सेवा सौंप रहा हूँ। देखो, इसमें किसी तरहकी ढिलाई न हो। कठोर धैर्य और साहससे काम

लेना। पर उन्हे खूब शराब पिलानेसे पहले कहीं वार न कर बैठना, नही तो बना-बनाया सारा काम ही बिगड जायगा।"

"अब तो मेरे पिताकी जगह आप ही हैं, डाक्टर युन-शान। आपका आशीर्वाद पानेके बाद लिन-सीको किसका भय है? महान् चीनका नारीत्व अभी भी निर्जीव नहीं होगया है। मुझपर विश्वास कीजिए।"

"स्वतन्त्र चीन जिन्दाबाद!"

"महान् चीन जिन्दाबाद!"

उत्तेजित होकर डाक्टर युन-शान कह उठे। और लिन-सीके कन्धे पर हाथ रखकर बोले--"शाबाश बेटी, महान् चीनका नारीत्व तुझसे जीवित है। माता चाईका स्थान तुझ जैसी कोई वीरागना ही लेगी।"

फिर वे बोले—"अच्छा, तो अब चलता हूँ। उन लोगोंके आनेका समय भी निकट आरहा है।"

और बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये वे तेजीसे बाहर चले गये।

× × ×

पीकिंग नगरके लिए प्रत्येक प्रात:काल न केवल एक नयी उदासी, बल्कि अनाचार और अत्याचारोंका सन्देश लेकर आता था। इसीलिए शायद लोग सूर्योदय हो जानेपर भी शय्या त्यागनेमें जल्दी नहीं करते थे—जैसे उन्हे यह आशका होती थी कि उठनेके बाद तो उनकी लाशको शायद सडक या पानीका ही बिछौना मिलेगा।

उस दिन जापानी सैनिकोंने प्रत्येक घरमें जा-जाकर लोगोंको जगाया और उनके चेहरोंका मिलान अपनी जेबसे एक चित्र निकालकर उसकी रूप रेखासे किया। कुछ काम न बननेपर वे जो कुछ मिलता, उसे खा जाते; छीनकर ले जाते और जाते हुए घरके स्त्री पुरुषोंको लातों और घूँसोंका पुर-

स्कार दे जाते ! पर कई घण्टोंकी दौड़-धूपके बाद भी उन्हें अपने काममें सफलता नहीं मिली।

दोपहरको पीकिंगके फौजी-अध्यक्षकी आज्ञासे प्रमुख राज-मार्गोंपर मोटे मोटे अक्षरोंमें छपे पोस्टर लगाये गये, जिनमे लिखा था :—

देशद्रोहियों से सावधान !

जापानी सैनिकोंकी रहस्यपूर्ण हत्याएँ

अपराधीके पकड़ाये जानेपर बदला लिया जायगा

जापान सरकारको मालूम हुआ है कि रूसके कम्युनिस्टोंके एजेंट कुछ देश-द्रोही चीनियोंने उनकी जान-मालकी रक्षाके लिये तैनात जापानी सैनिकोंकी कायरतापूर्वक हत्या करनेके षड्यन्त्र रचे है। यदि अपराधियोंने कल दोपहरके दो बजे तक आत्मसमर्पण नहीं किया. या उनकी जानकारी रखनेवालोंने उन्हें गिरफ्तार नहीं करवाया, तो पीकिंगके प्रत्येक चीनीसे १० येन हर्जाना वसूल किया जावेगा और जितने जापानी सैनिक अबतक मारे गये हैं उनसे दस गुना चीनियोंका बध किया जायगा। जो व्यक्ति पीकिंग विश्वविद्यालयके भूतपूर्व प्रोफेसर डा० युन-शानको — जो कई दिनोंसे भिखारीके छद्म-वेशमें घूमते देखे गये हैं—जिन्दा या मृत-रूपमें गिरफ्तार करवायगा, उसे समुचित पुरस्कार दिया जायगा।

जिस समय पीकिंगमे उपर्युक्त पोस्टरकी चर्चा हो रही थी और देश-भक्त चीनी वास्तवमे डा० युन-शानके जीवनके सम्बन्धमें चिन्तित हो रहे थे, शान्तुंगकी मुख्य सड़कपर डा० युन-शानकी अध्यक्षतामे कोई अठारह-सौ गुरिल्ला सैनिकोंका दल जिनमे-से प्रत्येकके पास जापानी सैनिकोंसे छीनी हुई बन्दूकें और पिस्तौलें थी—राष्ट्रीयताके मदमे झूमता हुआ और आजादीका निम्न तराना छेड़ता हुआ चला जा रहा था :—

"महान् चीन — जिन्दाबाद !

स्वतन्त्र चीन — जिन्दाबाद !

चीनके लिए लडे

चीनके लिए मरे

महान चीन — हो आज़ाद !

स्वतंत्र चीन — जिन्दाबाद !"

कप्तानकी वसीयत

खानेके कमरेमें रखी लम्बी मेजपर आज नयी धुली हुई साफ चादर बिछायी गयी थी। उसके एक छोरपर एक बडी तश्तरीमे काफी बड़ी 'क्रिसमस-केक' रखी थी। केककी ऊपरी सतहपर बीसों छोटी-छोटी मोमबत्तियाँ जल रही थी। मेजके उस छोरके पास रखी हुई कुर्सी खाली पड़ी थी। बायीं ओरकी कुर्सीपर पीटर बैठा निर्निमेष दृष्टिसे मोमबत्तियोंको देख रहा था। दाहिनी ओरकी कुर्सीपर बैठी श्रीमती इवलिन एडम्स कभी केककी ओर देखती, कभी पीटरकी ओर, और फिर अपनी कलाईपर बँधी हाथ-घड़ीको देखकर आशा-भरी दृष्टिसे द्वारकी ओर देखने लगती थीं।

कभी-कभी पीटर उनकी नजर बचाकर धीरे-धीरे अपना हाथ केक के पास रखी सुन्दर चमकीली छुरीकी ओर बढ़ाता और वे एक झटकेके साथ अपनी गर्दन केककी ओर घुमाकर किंचित् क्रोधसे कहतीं—"पीटर नहीं मानेगा तू? मैं एकबार कह चुकी हूँ कि केक या छुरीको छूना अच्छा नही। फिर करने लगा न तू शरारत? अच्छा, आने दे देख तेरे पापा को!"

सकपकाकर पीटर अपना हाथ पीछे खींच लेता और बनावटी भोले-पनसे कहता—"लेकिन मैं छू कब रहा हूँ तुम्हारी केक या छुरीको ममी? मैं तो सिर्फ यह देख रहा था कि यह छुरी नई है, या जो हमारे यहाँ पहले से व्यवहारमे आ रही थी, वही। अगर मुझसे गलती हुई हो, तो कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। पापासे कुछ न कहिएगा।"

किंचित् मुस्कराकर श्रीमती इवलिनने कहा—"अच्छा" और फिर द्वारकी ओर देखने लगीं—मानो पीटरको ताड़ना या दण्ड देनेके लिए इस समय उनके पास वक्त नही था। कितने उत्साह और आशाके साथ आज उन्होंने

नई पोशाक पहनी थी। कप्तान ब्रूक्स एडम्स द्वारा बडे दिनोंके लिए विशेषरूपसे लाया हुआ इत्र आज पहली बार उन्होंने लगाया था। बडे दिनके अतिरिक्त आज उनके विवाहका दिन भी था, अतः उन्होंने खाने और शराबकी विशेष व्यवस्था की थी। इसी कारण आजकी शाम उन्होंने किसी परि-जन-पडोसीके यहाँ आने-जानेकी जहमतसे बचाकर सिर्फ अपने और ब्रूक्स के लिए ही सुरक्षित रखी थी। पर ब्रूक्सका कहीं पता भी न था—न वे स्वय आये, न कहींसे फोनपर ही कुछ कहा। वे इवलिनको कितना चाहते हैं, कितनी आन्तरिकतासे उनसे प्रेम करते हैं, इसकी कल्पना इवलिनके सिवा शायद ही कोई कर सके। आखिर आज ऐसा क्या काम आ पड़ा, जो त्योहारके दिन भी वे उन्हे भूल से गये? बडे दिनकी शाम क्या प्रतीक्षा मे बितानेकी होती है? आज उनके दाम्पत्य जीवनका एक नया वर्ष भी तो आरम्भ हो रहा था।

इस बार जब श्रीमती इवलिनने केककी ओर देखा, तो उसपर जलने वाली मोमबत्तियाँ आधीसे अधिक जल चुकी थीं और पीटर कुर्सीपर ही एक ओर सिर झुकाकर सो चुका था। उनकी निराश आँखे फिर द्वारकी ओर गयी, पर इस बार अधिक देर वहाँ टिक न सकी और शीघ्र ही वहाँ से हटकर फिर मेजपर आ लगीं। मेजपर दोना हाथोंके बीच सिर टिकाकर वे कुछ सोचने लगी। उनका दाम्पत्य मानो आज कसौटीपर कसा जा रहा था, जिसके लिये वे अपने-आपको तैयार नही पा रही थी। धीरे-धीरे उनकी आँखोंसे आँसू निकलकर साफ सफेद चादरपर दो गीले धब्बे बनाने लगे। ज्यो-ज्यों उनकी आँखोसे अधिक आँसू निकलते जाते थे, ये गीले धब्बे भी शनैः-शनैः बडे होते जाते थे।

कुछ देर बाद द्वार खुला और ब्रूक्सने उदास मुख-मुद्रा सहित कमरेमें प्रवेश किया। उनके हाथोमे कई बडे बड़े गत्तेके बक्स थे, जिन्हे दरवाज़ेके पास रखी एक छोटी मेजपर रखकर ब्रूक्स इवलिनकी ओर बढ़े।

कन्धा पकड़कर ब्रुक्सने उन्हे उठाया और अपनी भुजाओंमें भरकर कहा–"प्यारी ईव, आज मुझसे बड़ी भयकर गलती होगई। मैं इसके लिए बहुत शर्मिन्दा हूॅ। मुझे क्षमा करदो।"

इवलिनने कुछ नहीं कहा। ब्रूक्सके कन्धेपर सिर रखकर वे सिसकने लगीं। उन्हे ढाढ़स बॅधाते हुए ब्रूक्सने कहा—"विश्वास करो इसमें गलती मेरी नहीं है। एक बहुत जरूरी कामसे मुझे रुकना पडा। उस सम्बन्धमें तुमसे कई आवश्यक बाते करनी हैं। पर वे बादमे होंगी। पहले आओ कुछ खा-पी लें।"यह कहकर ब्रूक्सने इवलिनको कुर्सीपर बैठाया और पीटरकी ओर गये। पीटरको गोदमे उठाकर उन्होंने उसका ललाट चूमा और उसे जगाते हुए बोले–"प्यारे पीटर, तुम इतनी जल्दी ही सोगये आज? अरे वाह, मैं तो तुम्हारे लिए कई उपहार लेकर आ रहा हूॅ और तुम सो भी गए?"

पीटरने जगकर कहा—"पापा, तो बताओ क्या-क्या उपहार लाये हो मेरे लिए? फादर क्रिसमस लाये? क्रिसमसका पेड़? और मेरा वह मैकेनो?"

"हॉ, हॉ, सब कुछ लाया हूॅ; पर पहले आओ कुछ खा लें, तब देखेंगे वे उपहार। बडेज़ोर की भूख लग रही है।"

और तीनों बैठकर क्रिसमसकी दावत उड़ाने लगे।

(२)

सारे खिलौने सिरहानेकी मेजपर सजाकर पीटर सो चुका था। कप्तान एडम्स अपने कमरेमें चहल-कदमी कर रहे थे और पास ही की कुर्सी पर इवलिन स्थिर बैठी जड़-भावसे फर्शकी ओर देख रही थीं–मानो सिर झुकाए कोई मूर्त्ति हो। टहलते-टहलते रुककर कप्ताननें कहा–"ईव, तुम्हे अपना दिल मजबूत बनाना चाहिए। यह दुनिया कायरोंके लिए

नहीं है। तुम स्वय भी इस युद्धके महत्वको भली-भाँति समझ सकती हो।"

गर्दन उठाकर इवलिनने कप्तानकी ओर देखा और फिर सधी हुई आवाजमें कहा—"वह मैं समझती हूँ। पर जब स्वेच्छा सेवाकी बात थी, तो अभी कुछ दिन और तुम नही जाते, तो क्या हो जाता? आखिर और अफसर भी तो हैं।"

"यह ठीक है, पर कर्त्तव्य-पालनमें सबसे पहले आगे आना ही मेरी रायमें श्रेयस्कर है। आज दुनियामे आग लग रही है, और तुम कहती हो कि मैं उसे बुझानेका काम कल पर छोड दूँ।"

"यह मैं कब कहती हूँ, मगर..."

"अगर-मगर इसमे कुछ नहीं। तुम्हे मुझे खुशीसे हँसते हुए बिदा देनी चाहिए। तुम्हारी खुशी ही मेरा सबसे बडा बल है। यह तुम्हारी मिथ्या धारणा है कि हमें लडाई-झगडोंसे दूर ही रहना चाहिये। दर असल हमारी यही अदूरदर्शिता आजके भीषण रक्तपातका कारण है। दुनियाके सब लोग आज एक हैं। कहीं भी यदि उनके सुख-शान्तिके लिए खतरा पैदा होता है, तो वह समूचे ससारका खतरा है। अगर इससे दुनियाको बचानेमें मैं काम आ सकूँ, तो तुम्हे गर्व ही होना चाहिये—शोक नहीं।"

इवलिनकी आँखें भर आयीं। गम्भीर मुख-मुद्रासे वे बोलीं—"युद्धकी आगमें भोले-भाले लोगोंको झोकनेके लिए सदा ही ऐसे आदर्शोंकी दुहाई दी जाती रही है; पर क्या वास्तवमें शान्ति और सुख सुलभ हुए?"

"परन्तु इसका मतलब यह भी तो नहीं कि यदि अब तक हम एक काममें सफल नहीं हुए, तो आगे भी उसके लिए प्रयत्न न करें।"

"करो, खूब करो, मैं कब रोकती हूँ? लेकिन · "

उत्तेजनाके बीच इवलिनको सहसा शान्त होते देखकर कप्तान उनके निकट आये और किंचित् मुस्कराहटके साथ बोले·—"हाँ कहो, आगे कहो न, क्या कहना चाहती हो? मैं भी तो सुनूँ।"

इवलिनने अपनी सजल आँख कप्तानकी ओर उठाते हुए कहा-"लेकिन प्रयत्न सचाई और ईमानदारीके साथ होना चाहिये। दुनियाके बहुत बडे भू भागके लाखों आदमियोको गुलाम बनाये रखकर क्या फासिज्मका यथार्थ अन्त किया जा सकेगा? फासिस्त प्रतिद्वन्दी भले ही मर जॉय, किन्तु इससे फासिज्मका मूलोच्छेद तो नही होगा।"

कप्तान इवलिनके बायेवाली कुर्सीपर बैठ गये और उनके कन्धेपर हाथ रखकर बोले—"हॉ, यह बिल्कुल ठीक कहरही हो, ईव। पर जरा यह भी सोचो कि हम सारी दुनियाके मालिक तो हैं नहीं। सच पूछो तो हम अपने देशके भी असली और पूरे मालिक नहीं हैं। अधिकाश देशो मे आज सम्पन्न निहित हितोंवाले लोगोंका ही बोलबाला है। सहसा उन्हे हटाना सम्भव नहीं। यदि हम उन्हे हटानेकी चेष्टा करते हैं तो हर देशमें गृह-युद्ध होनेकी सम्भावनाके सिवा अभी शायद कोई खास लाभ न हो, और ऐसा करनेसे हमारे शत्रुओंको ही लाभ पहुँचेगा। उनसे फासिज्म के मूलोच्छेदकी आशा करना भी भ्रान्ति ही है। पर इस बातसे कोई इन्कार नहीं करेगा कि जर्मनी, इटली और जापानकी फासिस्त शक्तियोंके नाश से सर्वत्र पूँजीवादी शासन दुर्बल होगा और जन-शक्ति दृढ होगी। इसका प्रभाव जाहिरा तौरपर भले ही गहरा और व्यापक न हो, पर यह जनताकी विजय-यात्राका नया कदम होगा।"

"यह तो ठीक है, पर "

"फिर परका क्या मतलब? अगर तुम इसे ठीक समझती हो, तो तुम्हे मुझे मुस्कराकर विदा देनी चाहिए। तुम्हारी आँखोंमे आँसू देखकर मैं भारी मन लेकर ही यहाँसे जाऊँगा और वह चीज मुझे कर्त्तव्य-पालन में दुर्बल बनायेगी। बड़ीसे बड़ी विजय और सफलतामे भी मेरे मनः चक्षुओं के आगे तुम्हारी सजल आँखे ही घूमेगी—जो मुझे गोली और बमसे भी अधिक बेकार कर सकेगी, मैं तुम्हारी हँसती हुई प्रतिमाको मनमे बैठाकर

जाना चाहता हूँ। बोलो, क्या मुझे यह सुयोग भी न दोगी ?

इवलिनने अपने आँसू पोंछे और हँसकर दोनों हाथ कप्तानके गले में डाल दिये। कप्तानका चेहरा आनन्दसे खिल उठा और उन्होंने इवलिन को अपने गाढ आलिंगनमें बाँध लिया। सधी हुई आवाजमें कप्तानने कहा—"मैं तुम्हे बराबर पत्र लिखता रहूँगा। एक क्षण भी तुम और पीटर मेरी आँखोंसे दूर नही हो सकोगे। पर एक वायदा तुम्हे मुझसे करना होगा।"

"वह क्या ?"

"पीटरके सामने कभी दुःख या निराशाकी बाते न करना, कभी आँसू न बहाना। वह नई दुनियाका नागरिक है, उसे निराशा और निरुत्साहसे कायर न बनाना।"

एक क्षण रुककर कप्तानने अपनी जेबसे चपड़ीकी मुहर लगा एक लिफाफा निकाला और इवलिनके हाथ मे देते हुए कहा—"अगर मैं लडाई में काम आ जाऊँ, तब इसे खोलकर पढना; अन्यथा लौटनेपर मुझे बिना खोले ही वापस कर देना। पर प्रण करो कि कभी उत्सुकता, निराशा या मानसिक दुर्बलताके कारण पहले इसे नही खोलोगी।"

सहसा इवलिनका चेहरा फीका पड़ गया। उनके कानोंमे सनसनाहट रेंग गयी और जैसे तत्काल उसे खोलकर पढ़नेको वे अधीर हो उठीं। फिर दूसरे ही क्षण अपने-आपको सम्भालकर उन्होंने कहा—"अच्छा वायदा करती हूँ, इसे पहले कभी न खोलूँगी।"

कप्तानका चेहरा एक बार फिर खिल उठा। इवलिनकी आँखे मानों सजल होते-होते रुक गई।

(३)

फर्श साफ कर चुकनेके बाद श्रीमती इवलिनने खिड़कियोंके शीशे

साफ करने शुरू किये, छुट्टीके दिन सारे घरकी सफ़ाई करनेमे आरामके बजाय उन्हे थकान ही अधिक होती थी, पर वे इसे आनन्द ही मानती थीं। इस तरह एक तो छुट्टीके दिन काममे व्यस्त रहनेसे समय आसानीसे कट जाता था और दूसरे ब्रूक्सकी यादको भुलावा देनेमे भी सहायता मिलती थी। अक्सर नटखट पीटर आकर थोडे ही देरमे उनके किये-करायेको बराबर कर देता था, पर उन्हें यह तो सन्तोष था कि अगर अचानक किसी समय ब्रूक्स आ जाय, तो वे यह कह सकेगी कि मैंने तो अभी अभी सफाई की थी, पर इस शरारती पीटरने फिर गन्दगी करदी। और ब्रूक्स के लौटने की सम्भावना जैसे उन्हे प्रतिदिन ही दिखाई देती थी। रोज सुबह उठकर वे इस तरह सफाई-धुलाई करती मानो उस दिन ब्रूक्स अवश्य लौटेंगे। वह दिन गुजर जाता, फिर दूसरा दिन आता और वह भी उसी तरह गुज़र जाता। पर इवलिनकी आशा कभी धुँधली या बासी नहीं पड़ती। यह आशा ही उन्हे ब्रूक्स की अनुपस्थितिका सहनेका साहस और सम्बल प्रदान किये थी। खाते, पीते, सोते, जागते, दफ़्तर जाते और लौटते समय सदा उन्हे यही खयाल बना रहता कि पता नहीं कब ब्रूक्स आकर दरवाज़ेपर दस्तक दे! उनके कान मानो हर क्षण इसी दस्तककी आहट पानेको चौकन्ने रहते थे। पर उनकी प्रतीक्षा और आशाके ये क्षण मानो दिनो दिन लम्बे ही होते जा रहे थे।

एक दिन श्रीमती इवलिन दफ़्तरसे लौटी ही थी कि किसीने द्वार पर की घण्टी बजाई। दौड़कर उन्होंने द्वार खोला, तो देखा, सामने नौ सेना विभागका चपरासी हाथमे एक लम्बा-सा लिफाफा लिए खड़ा है। साथकी चिटपर हस्ताक्षर करके उन्होंने लिफाफा ले लिया और भीतर चली आई। एक क्षण उन्होंने लिफाफेको ध्यानसे देखा और फिर काँपते हुए हाथोंसे उसे खोला। किसी अज्ञात आशकासे उनके हृदयकी धडकन बढ गई थी और गला सूख-सा गया था। फिर सहसा उन्होंने जैसे सारा

साहस बटोरा और दिलपर पत्थर रखकर पत्रको पढना आरम्भ किया। टाइप किये हुए उस पत्रकी पहली पक्ति थी—'नौसेना-विभाग सखेद सूचित करता है कि आपके सुयोग्य पति कप्तान ब्रूक्स एडम्स लूलोज द्वीपपर हुए धावेमे वीरता पूर्वक लड़ते हुए काम आए। उनकी · ' आगे वे नहीं पढ़ सकी और अचेत होकर टूटे हुए पेडकी तरह सोफेपर गिर पड़ी।

जब श्रीमती इवलिनको होश आया, तो उन्होने देखा, पीटर सामने की कुर्सीपर बैठा हुआ रो रहा है। उछलकर उन्होंने उसे अपने अकमे भर लिया और उसके आँसू पोछकर बडे प्यारसे पूछा—"मेरे प्यारे बच्चे, तुम इतनी देर तक कुछ बोले क्यों नही? मुझे पुकारा क्यो नहीं?"

"देखो, झूठ मत बोलो ममी! मैंने तुम्हे कितनी बार पुकारा, पर तुमने सुना ही नही। मुझे बड़ी भूख लगी है।"

श्रीमती इवलिनका कलेजा बैठने-सा लगा। जैसे-तैसे अपने-आपको सँभालते हुए उन्होने कहा—"अच्छा चलो, पहले खाना खाले।"

दोनों खानेके कमरेमे पहुँचे। श्रीमती इवलिनने नौसेना-विभागके पत्रकी चर्चा पीटरसे करना उचित नहीं समझा। पर खाना शुरू करते ही पीटर पूछ बैठा—"ममी, पापा कब आयेगे? कई दिनोसे उनकी कोई चिट्ठी भी नहीं आई।"

पीटरकी आँखोंके आगे अपनी आँखोंमे उमडने वाले आँसुओ को रोकना श्रीमती इवलिनके लिए असम्भव-सा काम था। बड़ी कठिनाई से उन्होंने सफलतापूर्वक ऐसा किया और बोलीं—"वे शीघ्र ही लौटेगे, पीटर! अब लडाई जल्द ही खत्म होनेवाली है।"

पीटरने और कुछ नहीं पूछा। खाना खत्मकर वह अपने कमरेमे चला गया। श्रीमती इवलिनके लिए तो खाना खाना दूभर हो रहा था। सिर्फ पीटरका साथ देनेके लिए उन्हे खानेका ढोग-सा करना पड़ा था, अन्यथा उन्हे भूख बिलकुल नही थी। मुँह पोंछकर वे अपने कमरेमे आ गयी और

मेजकी दराजसे ब्रूक्सका दिया हुआ सीलबन्द लिफाफा निकालकर उसमे का पत्र पढना शुरू किया। पत्र इस प्रकार था—

"प्राणेश्वरी ईव, अशेष प्यार!

"यह पत्र तुमसे अधिक मैं पीटरके लिए लिख रहा हूँ। पर इसका यह मतलब नही कि तुम्हे मैं कुछ भी नहीं लिखना चाहता। सच तो यह है कि तुम वय-प्राप्त हो, बुद्धिमान हो, युवा और सुन्दर हो। अपना भला-बुरा मुझसे अधिक तुम स्वय सोच सकती हो, तय कर सकती हो। हम लोग दो प्रेमियो या साथियोंकी तरह रहे हैं, पर जब मैं इस संसारसे कूच कर चुका, तो तुम्हे अपने भविष्य-निर्माणकी पूर्ण स्वतन्त्रता और अधिकार है। जीवन को आहों और आँसुओंके पागलपनमे व्यर्थ न गँवाकर जीनेके अधिकार का सदुपयोग करना, यही मेरा तुमसे अनुरोध है। तुम एक वीर और साहसी सन्नारी हो। तुम्हारे बुद्धि-विवेकपर मुझे पूरा भरोसा है।

"पर पीटर अभी बच्चा है। वह उस अस्फुट कलीकी तरह है, जिसे अपने भविष्यका स्वप्नमे भी गुमान नही। उसके भविष्य-निर्माणकी जिम्मेदारी हम दोनोंपर है। काश, हम तुम दानो मिलकर उसके सुन्दर भविष्य का निर्माण करते! पर अब तो वह प्रश्न ही नहीं उठता। उसकी माँकी हैसियतसे तुम उसके प्रति अपने कर्तव्यका पालन किस तरह करोगी, यह तुम जानो, पर पिताकी हैसियतसे उसके प्रति मेरा जो कर्तव्य था—उसकी आशिक जिम्मेदारी भी अब तुमपर ही है। उसे भावी जगका विचार एव विवेकशील जिम्मेदार नागरिक बनाना तुम्हारे हाथोमे है। पीटरके प्रति अपने कर्तव्यके साथ ही तुम उसके प्रनि मेरे कर्तव्यका भी पालन किस प्रकार करो, इसीलिए ये पक्तियाँ लिख रहा हूँ।

"एक बार पीटरने मुझसे पूछा था कि जीना अच्छा या मरना, तो मैंनें कहा था—जीना। एक दूसरी बार उसने पूछा था— लडना अच्छा या प्रेम

और शान्तिसे रहना, तो मैंने कहा था—शान्ति और प्रेमसे रहना। तब फिर मैं मरने और लडनेकेलिए क्यो चल पडा, यह प्रश्न उसको अवश्य असमजसमे डालेगा। अत' उसे यह समझाना तुम्हारा काम होगा कि जीनेके दो ढग हैं—एक सुख, समृद्धि, समानता एव स्वतन्त्रताका, जिसे 'जनतन्त्र' कहा जाता है, और दूसरा दु'ख, कङ्गाली, श्रेष्ठता एव उच्चताकी मिथ्या भावना और पराधीनताका, जिसे 'फासिज्म' कहा जाता है। मैंने बेहतर जीवनके पहले ढगको दूसरेके खतरेसे बचानेकेलिए अपने प्राण खोये हैं—केवल लडने, रक्तपात और हत्या या विजयकेलिए नहीं। मेरा विश्वास था कि समान रूपसे सभी देशों, जातियों, वर्णोंके लोग सुखी, समृद्ध एव स्वतन्त्र हो। फासिज्मको मैंने इसका विरोधी एव खतरा समझा। यह भावना कि हम दूसरोंसे सबल, श्रेष्ठ, अधिक अधिकार एव सुविधावाले और दूसरोंके पीडन-शोषणपर अपनी सुखसमृद्धिके महल खडे करनेके अधिकारी हैं, सबसे अधिक दोषपूर्ण, खतरनाक और सारे झगडो एव अशान्तिका मूल है। अतएव इससे पीटरको सदा बचाना और उसे ऐसे समाज-निर्माणकेलिए तैयार करना, जिसमें सबको काम करने और पेट भरनेका समान अधिकार हो, सबको समान सुविधाएँ हों, सबके समान कर्त्तव्य हों। आदमी आदमीका शासक, शोषक, शत्रु और सहारक न बनकर साथी और सहयोगी बने, यही भावी मानव समाजका चरम उद्देश्य हो। इसीके प्रयत्नमे मैंने अपना जीवन उत्सर्ग किया है।

"पर साथ ही वीर-पूजाका भूत भी पीटरके सिरमे न घुसने देना। निर्बलको सता या हराकर 'बडा' या 'ऊँचा' बननेवाला 'वीर' और 'महान्' होता है, यह भ्रम सदाकेलिए उससे दूर रहे, ऐसी चेष्टा करना। किसीको सता, दबा या हराकर सफल होनेवाला 'वीर' या 'महान्' नही होता। जर्मनी और जापानके बच्चोंका मस्तिष्क इसी वीर पूजाकी भावनासे विकृत किया गया है। आज रक्तपात और विजय उसकेलिए गर्व एव उल्लासकी चीजें हैं। इस खतरेसे पीटरको बचाना। सब मनुष्य भाई-भाई हैं, और उन्हे आपसमे हिल-

मिलकर सहयोग-स्नेहसे रहना चाहिए, यही उसके विचारोंका आधार हो, ऐसी चेष्टा करना।

"अधिक क्या लिखूं? पीटर हम दोनोंके प्रेमका मूर्त प्रतीक है। उसे उसीके अनुरूप बनानेकी चेष्टा करना। पीटर और तुम्हारेलिए मेरी यही वसीयत है।

—तुम्हारा ही,

एडम्स।'

समाप्त होते-होते पत्र श्रीमती ईवलिनके आँसुओंसे तर हो चुका था। उसे मेजपर रख श्रीमती ईवलिन आँसू पोंछकर निर्निमेष दृष्टिसे सामने रखे हुए कप्तान एडम्सके चित्रको देखने लगी।